



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

चेतना

36वाँ अंक

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना-800 001



हिंदी पत्रिका 'चेतना' के 35वें अंक का विमोचन





SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

अर्द्धवार्षिक हिंदी पत्रिका

चेतना

अप्रैल, 2025 से सितंबर, 2025

36वां अंक

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना
महालेखाकार भवन
वीरचंद पटेल मार्ग, पटना - 800 001

चेतना के इस अंक में प्रकाशित सभी रचनाएँ लेखकों/रचनाकारों के अनुसार उनकी मौलिक एवं अप्रकाशित हैं तथा इसमें दिए गए विचार/मन्तव्य उनके अपने हैं। इससे किसी प्रकार की सहमति/असहमति संपादक मण्डल की नहीं है।

स्वत्वाधिकार : प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना

प्रकाशन : चेतना

प्रकाशक : कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना,
महालेखाकार भवन, वीरचंद पटेल मार्ग, पटना-800 001

36वां अंक : अप्रैल, 2025 से सितंबर, 2025

मुद्रक : पटनेश्वरी प्रिन्टर

चेतना परिवार

मुख्य संरक्षक

श्री संतोष कुमार

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) बिहार, पटना

संरक्षक

श्री ओंकार

वरिष्ठ उपमहालेखाकार

श्री देवेन्द्र प्रताप श्रीवास्तव

उपमहालेखाकार

परामर्शदातृ समिति

श्री अरविंद प्रसाद सिंह

वरिष्ठ लेखा अधिकारी

श्री श्रीराम पाण्डेय

वरिष्ठ लेखा अधिकारी

संपादक

श्री सुनील कुमार

सहायक निदेशक (राजभाषा)

उप संपादक

श्री सन्नी कुमार

कनिष्ठ अनुवादक

संपादन सहयोग

श्री उदय भान विश्वकर्मा

कनिष्ठ अनुवादक

श्री धीरज कुमार

वरिष्ठ लेखाकार

मुद्रण कार्य

पटनेश्वरी प्रिन्टर

चेतना परिवार



- बाएँ से दाएँ (बैठे हुए) : श्री ओंकार (वरिष्ठ उपमहालेखाकार), श्री संतोष कुमार (प्रधान महालेखाकार), श्री देवेन्द्र प्रताप श्रीवास्तव (उपमहालेखाकार)
- बाएँ से दाएँ (खड़े) : श्री उदय भान विश्वकर्मा (कनिष्ठ अनुवादक), श्री सन्नी कुमार (कनिष्ठ अनुवादक), मो. नैयर आलम (वरिष्ठ लेखा अधिकारी), श्री श्रीराम पाण्डेय (वरिष्ठ लेखा अधिकारी), श्री सुनील कुमार (सहायक निदेशक, राजभाषा), श्री धीरज कुमार (वरिष्ठ लेखाकार)

महालेखाकार भवन

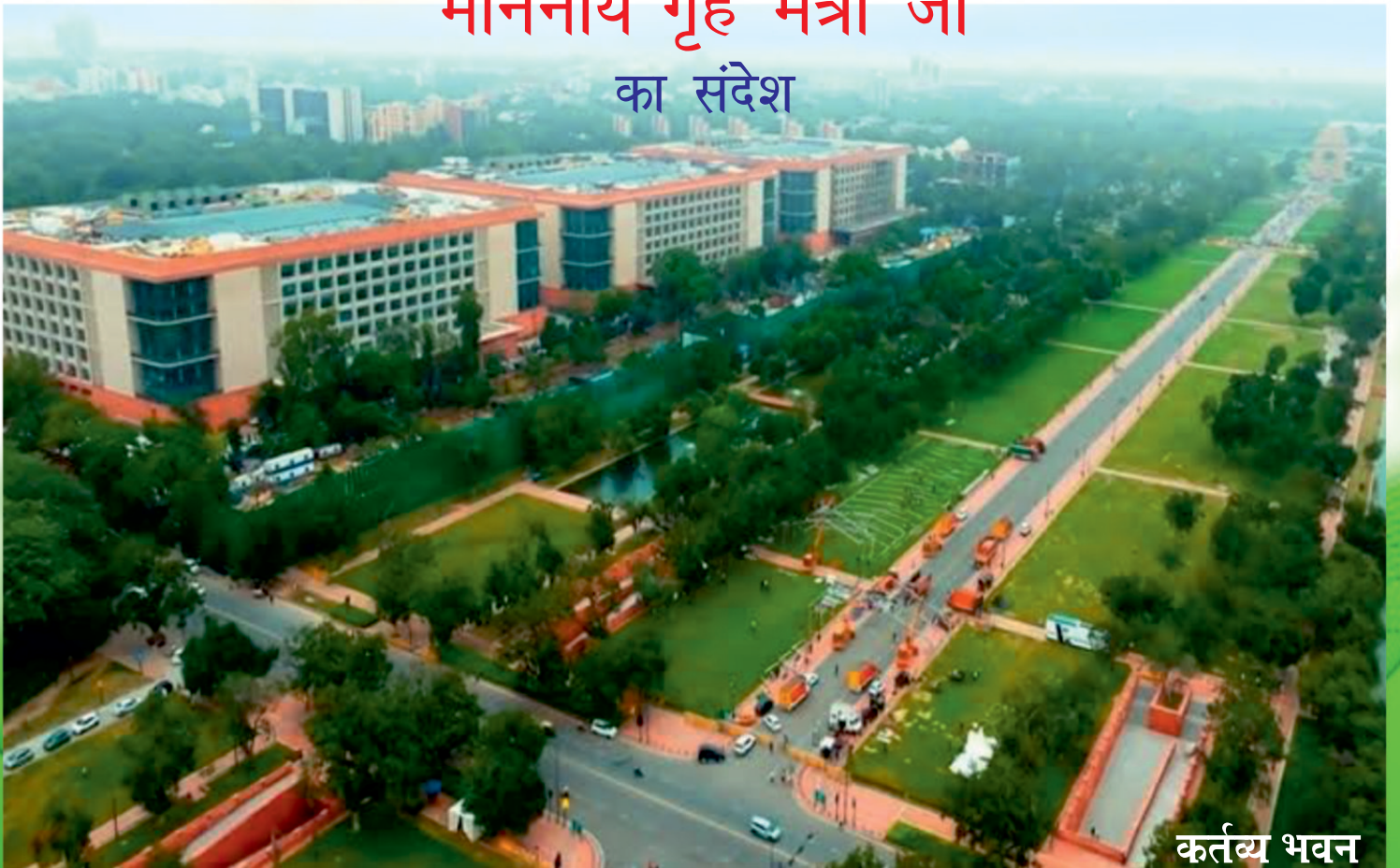
बिहार, पटना





हिंदी दिवस 2025

के अवसर पर
माननीय गृह मंत्री जी
का संदेश



कर्तव्य भवन

राजभाषा विभाग

गृह मंत्रालय, भारत सरकार

**अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार**



प्रिय देशवासियो !

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत मूलतः भाषा—प्रधान देश है। हमारी भाषाएँ सदियों से संस्कृति, इतिहास, परंपराओं, ज्ञान—विज्ञान, दर्शन और अध्यात्म को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाने का सशक्त माध्यम रही हैं। हिमालय की ऊँचाइयों से लेकर दक्षिण के विशाल समुद्र तटों तक, मरुभूमि से लेकर बीहड़ जंगलों और गाँव की चौपालों तक, भाषाओं ने हर परिस्थिति में मनुष्य को संवाद और अभिव्यक्ति के माध्यम से संगठित रहने और एकजुट होकर आगे बढ़ने का मार्ग दिखाया है।

मिलकर चलो, मिलकर सोचो और मिलकर बोलो, यही हमारी भाषाई और सांस्कृतिक चेतना का मूल मंत्र रहा है।

भारत की भाषाओं की सबसे बड़ी विशेषता यही रही है कि उन्होंने हर वर्ग और समुदाय को अभिव्यक्ति का अवसर दिया। पूर्वोत्तर में बीहू का गान, तमिलनाडु में ओवियालू की आवाज, पंजाब में लोहड़ी के गीत, बिहार में विद्यापति की पदावली, बंगाल में बाउल संत के भजन, आदिम समाज में ढोल—मांदर की थाप पर करमा की गूँज, माताओं की लोरियाँ, किसानों का बारहमासा, कजरी गीत, भिखारी ठाकुर की 'बिदेशिया', इन सबने हमारी संस्कृति को जीवन्त और लोककल्याणकारी बनाया है।

मेरा स्पष्ट मानना है कि भारतीय भाषाएँ एक दूसरे की सहचर बनकर, एकता के सूत्र में बंधकर आगे बढ़ रही हैं। संत तिरुवल्लुवर को जितनी भावुकता से दक्षिण में गाया जाता है, उतनी ही रुचि से उत्तर में भी पढ़ा जाता है। कृष्णदेवराय जितने लोकप्रिय दक्षिण में हुए, उतने ही उत्तर में भी। सुब्रमण्यम भारती की राष्ट्रप्रेम से ओत—प्रोत रचनाएँ हर क्षेत्र के युवाओं में राष्ट्रप्रेम को प्रबल बनाती हैं। गोस्वामी तुलसीदास को हर एक देशवासी पूजता है, संत कबीर के दोहे तमिल, कन्नड़ और मलयालम अनुवादों में पाए जाते रहे हैं। सूरदास की पदावली दक्षिण भारत के मंदिरों और संगीत परंपरा में आज भी प्रचलित है। श्रीमंत शंकरदेव, महापुरुष माधवदेव को हर एक वैष्णव जानता है। और, भूपेन हजारिका को हरियाणा का युवा भी गुनगुनाता है।

गुलामी के कठिन दौर में भी भारतीय भाषाएँ प्रतिरोध की आवाज बनीं और आज़ादी के आंदोलन को राष्ट्रव्यापी बनाने में भूमिका निभाई। हमारे स्वाधीनता सेनानियों ने जनपदों की भाषाओं में, गाँव—देहात की भाषा में लोगों को आज़ादी के आंदोलन से जोड़ा। हिंदी के साथ ही सभी भारतीय भाषाओं के कवियों, साहित्यकारों और नाटककारों ने लोकभाषाओं, लोककथाओं, लोकगीतों और लोकनाटकों के माध्यम से हर आयु, वर्ग और समाज के भीतर स्वाधीनता के संकल्प को प्रबल बनाया। वन्दे मातरम् और जय हिंद जैसे नारे हमारी भाषाई चेतना से ही उपजे और स्वतंत्र भारत के स्वाभिमान के प्रतीक बने।

जब देश आजाद हुआ, तब हमारे संविधान निर्माताओं ने भाषाओं की क्षमता और महत्ता को देखते हुए

इस पर विस्तार से विचार—विमर्श किया और 14 सितम्बर 1949 को देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकृत किया। संविधान के अनुच्छेद 351 में यह दायित्व सौंपा गया कि हिंदी का प्रचार—प्रसार हो और वह भारत की सामासिक संस्कृति का प्रभावी माध्यम बने।

पिछले एक दशक में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं और संस्कृति के पुनर्जागरण का एक स्वर्णिम कालखंड आया है। चाहे संयुक्त राष्ट्रसंघ का मंच हो, जी-20 का सम्मेलन या SCO में संबोधन, मोदी जी ने हिंदी और भारतीय भाषाओं में संवाद कर भारतीय भाषाओं का स्वाभिमान बढ़ाया है।

मोदी जी ने आजादी के अमृत काल में गुलामी के प्रतीकों से देश को मुक्त करने के जो पंच प्रण लिए थे, उसमें भाषाओं की बड़ी भूमिका है। हमें अपनी संवाद और आपसी संपर्क भाषा के रूप में भारतीय भाषा को अपनाना चाहिए, न कि किसी विदेशी भाषा को। तभी हम गुलामी की मानसिकता से पूरी तरह मुक्त हो पाएँगे।

राजभाषा हिंदी ने 76 गौरवशाली वर्ष पूरे किए हैं। राजभाषा विभाग ने अपनी स्थापना के स्वर्णिम 50 वर्ष पूर्ण कर हिंदी को जनभाषा और जनचेतना की भाषा बनाने का अद्भुत कार्य किया है। 2014 के बाद से सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को निरंतर बढ़ावा दिया गया है। संसदीय राजभाषा समिति ने वर्ष 1976 में अपनी स्थापना से लेकर 2014 तक माननीय राष्ट्रपति महोदया को प्रतिवेदन के 9 खंड प्रस्तुत किए थे, वहीं 2019 से अब तक 3 खंड प्रस्तुत किए जा चुके हैं। 13-14 नवम्बर 2021 को वाराणसी से प्रारंभ हुए अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलनों की परम्परा भी लगातार आगे बढ़ रही है।

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी राजभाषा विभाग ने उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं। न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन पर आधारित 'कंठस्थ 2.0' में आज 5 करोड़ से अधिक वाक्यों का ग्लोबल डाटाबेस उपलब्ध है। 'लीला राजभाषा' और 'लीला प्रवाह' जैसे शिक्षण पैकेजों के माध्यम से 14 भारतीय भाषाओं में हिंदी सीखने की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। वर्ष 2022 में शुरू हुआ 'हिंदी शब्द सिंधु' अब तक लगभग 7 लाख शब्दों से समृद्ध हो चुका है।

2024 में हिंदी दिवस पर 'भारतीय भाषा अनुभाग' की स्थापना की गई, जिसका उद्देश्य सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं के बीच सहज अनुवाद सुनिश्चित करना है। हमारा लक्ष्य यह है कि हिंदी और अन्य भारतीय भाषाएँ केवल संवाद का माध्यम न रहकर तकनीक, विज्ञान, न्याय, शिक्षा और प्रशासन की धुरी बनें। डिजिटल इंडिया, ई-गवर्नेंस, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग के इस युग में हम भारतीय भाषाओं को भविष्य के लिए सक्षम, प्रासंगिक और वैश्विक तकनीकी प्रतिस्पर्धा में भारत को अग्रणी बनाने वाली शक्ति के रूप में विकसित कर रहे हैं।

मित्रों, भाषा सावन की उस बूँद की तरह है, जो मन के दुःख और अवसाद को धोकर नई ऊर्जा और जीवन शक्ति देती है। बच्चों की कल्पना से गढ़ी गई अनोखी कहानियों से लेकर दादी-नानी की लोरियों और किस्सों तक, भारतीय भाषाओं ने हमेशा समाज को जिजीविषा और आत्मबल का मंत्र दिया है।

मिथिला के कवि विद्यापति जी ने ठीक ही कहा है:

"देसिल बयना सब जन मिट्ठा।"

अर्थात् अपनी भाषा सबसे मधुर होती है।

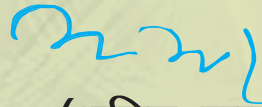
आइए, इस हिंदी दिवस पर हम हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं का सम्मान करने और उन्हें साथ लेकर आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी तथा विकसित भारत की दिशा में आगे बढ़ने का संकल्प लें।

आप सभी को एक बार फिर से हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

वंदे मातरम्।

नई दिल्ली

14 सितंबर, 2025


(अमित शाह)



साबरमती आश्रम

प्रधान महालेखाकार का संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि कार्यालय की हिंदी पत्रिका "चेतना" के 36वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। कार्यालय में राजभाषा पत्रिका का प्रकाशन राजभाषा हिंदी के प्रोत्साहन का एक महत्वपूर्ण पहलू है। जिस प्रकार भारतीय संस्कृति अनेकता में एकता का निरूपण करती है, ठीक उसी प्रकार भाषा भी देश को एकरूपता के धागे में पिरोने का कार्य करती है। पत्रिका "चेतना" कार्यालय के कार्मिकों के राजभाषा हिंदी के प्रति विशेष समर्पण एवं सम्मान को दर्शाती है। कार्यालयीन हिंदी पत्रिकाएँ कार्मिकों को अपने विचार अभिव्यक्त करने के लिए एक सशक्त मंच प्रदान करती हैं। इस अंक में शामिल रचनाओं के अनुशीलन से ऐसा प्रतीत होता है कि परस्पर सहयोग के माध्यम से कार्यालय में राजभाषा हिंदी में कामकाज को गतिशीलता प्रदान किया जा सकता है।



मुझे आशा है कि कार्यालयीन पत्रिका "चेतना" राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में सहायक सिद्ध होगी एवं कार्यालय में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा मिलेगा। पत्रिका के इस अंक के प्रकाशन पर सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को बधाई।

पत्रिका "चेतना" के उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएँ।


(संतोष कुमार)

वरिष्ठ उपमहालेखाकार का संदेश

हिंदी पत्रिका "चेतना" के 36वें अंक का ई-संस्करण आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है। कार्यालय के कार्मिकों को राजभाषा हिंदी के प्रति जागरूक बनाए रखने में पत्रिकाएँ महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। सभी रचनाकारों ने कविता एवं लेख के रूप में स्वरचित रचनाओं के माध्यम से अपनी सृजनशीलता को पत्रिका में समाहित किया है। यह पत्रिका कार्यालयीन कार्यों को राजभाषा हिंदी में करने के लिए कार्मिकों में दृढ़ निश्चय एवं रुचि को दर्शाती है।



इस अवसर पर मैं सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल का हृदय से अभिनंदन करता हूँ, जिन्होंने इस पत्रिका के प्रकाशन में विशेष योगदान दिया है। आशा है कि इसी प्रकार कार्यालय के कार्मिक भविष्य में भी अधिकाधिक संख्या में उत्कृष्ट रचनाओं से पत्रिका को समृद्ध बनाते रहेंगे एवं राजभाषा हिंदी के विकास में निरंतर सहयोग करते रहेंगे।

पत्रिका "चेतना" के उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ!

ओंकार
(ओंकार)

उपमहालेखाकार का संदेश

यह गर्व का विषय है कि विगत वर्ष की भांति इस वर्ष भी हमारे कार्यालय की गृह पत्रिका "चेतना" के 36वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। राजभाषा हिंदी के उत्थान एवं कार्यालय की रचनात्मक प्रतिभाओं को सार्थक मंच उपलब्ध कराने में कार्यालयीन पत्रिका की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। पत्रिका में अपनी रचनाओं के माध्यम से रचनाकार न केवल अपने मन के भावों को प्रकट करता है, बल्कि सुधी पाठक वर्ग को भी पत्रिका हेतु कुछ लिखने को प्रेरित करता है।



मुझे पूर्ण विश्वास है कि समस्त रचनाकार एवं पाठकगण अपनी सहभागिता नियमित रूप से बनाये रखेंगे तथा राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने में अपना महत्वपूर्ण योगदान देते रहेंगे।

शुभकामनाओं सहित।


(देवेन्द्र प्रताप श्रीवास्तव)



टिप्पणियां हिंदी में लिखिए।
प्रारूप हिंदी में तैयार कीजिए।
शब्दों के लिए अटकिए नहीं।
अशुद्धियों से घबराइए नहीं।
अभ्यास अविलंब आरंभ कीजिए।

संपादकीय

कार्यालयीन हिंदी पत्रिका की अविरल धारा को प्रवाहमय रखते हुए “चेतना” के 36वें अंक का लोकार्पण राजभाषा हिंदी की उन्नति पटल पर अहम भूमिका रेखांकित करती है। यह अंक विविध विषयों पर आधारित मौलिक रचनाओं के योग से संकलित होकर आपके समक्ष अवतरित हुई है। कार्यालयीन हिंदी पत्रिकाओं का प्रकाशन रचनाकारों के हिंदी के प्रति रुचि को प्रत्यक्षतः दर्शाता है।



‘राजभाषा हिंदी’ कर्तव्य की भाषा है तथा कार्यालयीन हिंदी पत्रिकाओं का प्रकाशन इस कर्तव्य को पूर्ण रूप से निरूपित करती हैं। पत्रिका मनोभाव का संचार, ज्ञान, मनोरंजन, भाषा-विस्तार इत्यादि की संवाहिका होती है। रचनाकार अपने अनुभव, भावना, कल्पना आदि को शब्दों के रंगों में पिरोकर व्यक्त करता है। एक सफल पत्रिका की नींव उसकी रचनाएँ ही होती हैं।

‘चेतना’ के 36वें अंक के प्रकाशन से जुड़े सभी रचनाकार तथा संपादक मण्डल के प्रयास सराहनीय हैं। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य एवं उत्तरोत्तर सुधार हेतु पाठकों के सुझाव एवं अभिमत आमंत्रित हैं।

शुभकामनाओं के साथ!

सुनील कुमार
संपादक



“हिंदी उन सभी गुणों से अलंकृत है, जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषा की अगली श्रेणी में सम्मानित हो सकती है।”

- मैथिलीशरण गुप्त



“हिंदी
विश्व की महान भाषा है।”

- राहुल सांकृत्यायन



“मैं दुनिया की सभी भाषाओं की इज्जत करता हूँ,
पर मेरे देश में हिंदी की इज्जत न हो,
ये मैं सह नहीं सकता।”

- आचार्य विनोबा भावे

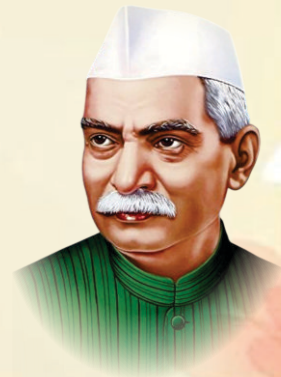


“जब तक भारत देश का राजकाज
अपनी ही भाषा में नहीं चलेगा,
तब तक हम सभी यह नहीं
कह सकते कि भारत देश में स्वराज है।”
- मोरारजी देसाई



“हिंदी चिरकाल से ऐसी भाषा रही है
जिसने विदेशी मानकर किसी शब्द का
बहिष्कार नहीं किया।”

- डॉ. राजेन्द्र प्रसाद



“हिंदी हमारे देश और भाषा
की प्रभावशाली विरासत है।”

- माखनलाल चतुर्वेदी

आपके पत्र

I:/R0905/P04

कार्यालय महत्त्वकावरी (लेखापरीक्षा-II) राजस्थान, जयपुर

क्रमांक: रा.म.अ./फाइल सं.-एच-11005-02/2024-25/

दिनांक: 27-11-2024

सेवा में,

वरिष्ठ लेख अधिकारी (राजस्व),
सर्वजन्य महत्त्वकावरी (लेख एवं हस्तक्षेप) विभाग,
पटार.

विषय: हिंदी मूह पत्रिका "चेतन" के 35वीं अंक पर अभिलेख - संश्लेषित।
महोदय,

आपके सर्वजन्य द्वारा प्रसारित हिंदी मूह पत्रिका "चेतन" के 35वीं अंक की प्रति की प्रति हुई है।
आपकी पत्रिका के आन्तरिक आवरण पृष्ठ के साथ-साथ इसकी सज-सज्जा सुंदर है और रचनाओं की विषयवस्तु
भी प्रसंगिक है।

"चेतन" के सम्पादन मंडल एवं सभी रचनाकारों को पत्रिका के समग्र प्रकाशन के लिए बधाई तथा
पत्रिका की प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

WAZIR SINGH

हिंदी अधिकारी
(E-mail: rajphasha.ra2.au@cag.gov.in)

Digitally signed by
Wazir Singh
Date: 27-11-2024 19:43:51

पञ्जीकरणक्रमांक: 2020-21-वि.सं.सू. 23/14.08.2021

1/05/18/2024

दि. 28. / सा.मा.सू. शा.सं. 196 / 00 दि. 15 - 09/12/24



महानिष्ठाकार (नैषा एवं हुकमारी) का कार्यालय, ओडिशा, पुरी शाखा, पुरी-752003
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E), ODISHA, PURI BRANCH, PURI

सं.-प्रस्ता पत्र/09/2024-25/22

दिनांक:- 05.12.2024

सेवा में,
महानिष्ठाकार (नै. एवं हुक.) का कार्यालय,
निराचन पत्र पत्र,
पटना, विहा-800001

विषय : वार्षिक हिन्दी पत्रिका "नेतान" के 35वें अंक की प्राप्ति।

महोदय,

आपकी वार्षिक हिन्दी पत्रिका "नेतान" के 35वें अंक की प्राप्ति हुई। धन्यवाद।

"नेतान" उत्कृष्ट पत्रिकाओं का सुन्दर संग्रह है। पत्रिका में सुष्ठु पत्र लिखित आर्थिक कार्यवाही के विषय
अत्यंत सुन्दर व अनुभूतिपूर्ण होते हैं। आप-आप पत्रिका को और अधिक सुन्दरा प्रदान कर रहे हैं। पत्रिका में
निहित अमूल्य एवं सटीक, रोचक, जानकारी एवं महत्वपूर्ण संदेशों में परिपूर्ण है। इसमें है "आरम्भिक",
"परीक्षा का आरम्भिक", "सौ" और "नेतानिक", विशेष अंक है। असा है कि यह पत्रिका अपने ही अपने रोचक
विषयों में पाठकों का आनन्दपूर्ण एवं राजनीति के प्रचार-प्रसार में सार्विक वष उपस्थित करती होती।

पत्रिका के संपादक मण्डल के सभी सदस्यों एवं पत्रिका के उच्चतर अधिकारी की हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय

28/12/24
निराचन पत्रिका कार्यालय, हिन्दी बख

आपके पत्र

सं. 31/सा. 34/195 दिनांक 09/12/24

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
पंजाब एवं च.टी. सेक्टर 17 ई. चंडीगढ़ - 160017.
Office of The Accountant General (A&E),
Punjab & U.T. Sector-17 E,
Chandigarh - 160017.
Phone: 0172-2702906, 2703117,
2709376 Fax : 0172-2702286
Mail: agapcpunjab@cag.gov.in

क्रमांक हिंदी कक्षा/पंजीक्षा/10/2024-25/475 दिनांक 19/11/2024

सेवा में,
वरिष्ठ लेखा अधिकारी (हिंदी अनुभाग),
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),
बीरचंद पटेल पथ, बिहार, पटना-800001

विषय विभागीय हिंदी पत्रिका "चेतना" के 35वें अंक की पावती के संबंध में।
महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका "चेतना" के 35वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी वित्तीय सूचकांक, आंकड़े एवं जानकारी हैं। पत्रिका का आगम्य पृष्ठ अनिवार्य रूप से आकर्षक है। कार्यालय में (निर्देशिका) के कार्यालय में प्रकाशित है।

पत्रिका का सम्पूर्ण पत्र एवं उपरोक्त वित्तीय सूचकांक वित्तीय वर्ष के पूर्व प्रकाशित है। पत्रिका के सभी वित्तीय सूचकांक एवं वित्तीय सूचकांक के समस्त प्रकाशन के लिए आपकी पत्रिका की उपयोगिता के लिए धन्यवाद।

भवदीय
वरिष्ठ लेखा अधिकारी (हिंदी)

Handwritten: 24/33/24, 09/12/24

Stamp: A.G.B. 03 DEC 2024 PATNA

सं. 31/सा. 34/195 दिनांक 09/12/24

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
पंजाब एवं च.टी. सेक्टर 17 ई. चंडीगढ़ - 160017.
Office of The Director General of
Audit Industry and Corporate
Affairs Audit Bhawan, I.P. Estate
NEW DELHI-110002

क्रमांक हिंदी कक्षा/पंजीक्षा/10/2024-25/475 दिनांक 19/11/2024

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी कक्षा
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय
बीरचंद पटेल पथ,
पटना, बिहार - 800001

दिनांक / DATE 29.11.2024

विषय: कार्यालय की हिंदी पत्रिका "चेतना" के 35वें अंक का प्रेषण।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी ई-पत्रिका "चेतना" के 35वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सर्वे धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कवितारं पंजीय एवं जानकारी हैं। पत्रिका की डिजाइनिंग एवं चित्रों का समावेशन पत्रिका को सुसज्जित बनाता है। सभी आभा, अतिथि कवियों की "अपनी हिंदी", श्री मनमोहन कुमार, वरिष्ठ उप महालेखाकार की "मेरा गाँव", एवं उदय भानु विश्वकर्मा, कनिष्ठ अनुवादक की "दादा-पोता का पैन" रचनाएं विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय
संपादक एवं हिंदी अधिकारी

Ph: +91-11-23702357 Fax: +91-11-23702359 E-mail: pdac@cag.gov.in

सं. 31/सा. 34/195 दिनांक 09/12/24

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
पंजाब एवं च.टी. सेक्टर 17 ई. चंडीगढ़ - 160017.
Office of The Accountant General (A&E),
Punjab & U.T. Sector-17 E,
Chandigarh - 160017.
Phone: 0172-2702906, 2703117,
2709376 Fax : 0172-2702286
Mail: agapcpunjab@cag.gov.in

क्रमांक हिंदी कक्षा/पंजीक्षा/10/2024-25/475 दिनांक 19/11/2024

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (पंजाब)
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),
बीरचंद पटेल पथ,
पटना, बिहार- 800 001

विषय: हिंदी के वार्षिक ई-पत्रिका "चेतना" के 35वें अंक की अनिवार्यता एवं प्रतिक्रिया

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित वार्षिक ई-पत्रिका "चेतना" के 35वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई।

सर्वप्रथम इसके लिए सर्वे धन्यवाद। पत्रिका का आगम्य पृष्ठ आकर्षक है तथा सूचना एवं जानकारी उपलब्ध है।

समावेशन में लेख एवं चित्रों का समावेशन है। पत्रिका में समावेशन पत्रिका को सुसज्जित बनाता है।

सभी आभा, अतिथि कवियों की "अपनी हिंदी", श्री मनमोहन कुमार, वरिष्ठ उप महालेखाकार की "मेरा गाँव", एवं उदय भानु विश्वकर्मा, कनिष्ठ अनुवादक की "दादा-पोता का पैन" रचनाएं विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (पंजाब)

Handwritten: 24/33/24, 09/12/24

Stamp: A.G.B. 17 DEC 2024 PATNA

सं. 31/सा. 34/195 दिनांक 09/12/24

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) म.प्र.
53, अरेरा हिस्सा, होशंगाबाद रोड, भोपाल- 462011
क्र.हि.क./सा-7/आवक-79 दिनांक 12.12.2024

प्रति,
वरिष्ठ लेखा अधिकारी (हिंदी अनुभाग)
महालेखाकार (ले. एवं ह.) का कार्यालय
बीरचंद पटेल पथ,
पटना, बिहार-800001

विषय: हिंदी पत्रिका "चेतना" के 35वें अंक की पावती का वार।
संदर्भ: आपके पत्र दि. 12/12/24 दि. 29/11/24 दिनांक 01.11.2024।

महोदय/महोदया,

उपरोक्त संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय द्वारा "चेतना" के 35वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सर्वे धन्यवाद। पत्रिका में सभी रचनाएं प्रशंसनीय हैं विशेष तौर पर सभा सुभा, कविताएं, अधिकांश और कवियों-बोध, धरती की गोद, खेल और स्वास्थ्य, ये दुनिया मोह-माया का बंधन है, आदि रचनाएं सारगर्भित एवं सराहनीय हैं।

पत्रिका की साज-सजा उत्तम है। कार्यालयीन विचारों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है। पत्रिका के सुजल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएँ।

भवदीय
हिंदी अधिकारी/हिंदी कक्षा

आपके पत्र

कार्यालय महालेखाकार (लेखाधीन भाग)
(ऑडिट पत्र, इन्फ्रास्ट्रक्चर एस्टेट,
नई दिल्ली-110002)

OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL
OF AUDIT (CENTRAL EXPENDITURE),
AUDIT BHAWAN, INFRASTRUCTURE ESTATE,
NEW DELHI-110002

सं.रा.भा.अ/2-9/प्रशास पत्र/2024-25/१20 दिनांक: 23.12.2024

सेवा में
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी अनुभाग)
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),
बीरचंद पटेल पथ, पटना,
बिहार - 800 001.

विषय- हिन्दी गृह पत्रिका "चेतना" के 35वें अंक के संबंध में।

महोदय,
आपके कार्यालय के पत्र सं. हि.अ./ले. व 8/22/प.प्र/2024-25/76 दिनांक 01.11.2024 के द्वारा आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित राजभाषा हिंदी पत्रिका "चेतना" के 35वें अंक की प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, जानकारीपूर्ण, रोचक एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका में समाविष्ट श्री सुनील कुमार का "अधिकार और कर्तव्य बोध", श्री सोहन कुमार सिंह का "लोकतंत्र: आम - जनता की शक्ति का महत्वपूर्ण स्तंभ" एवं श्री देवेन्द्र प्रसाद का "क्याशिली, देशभक्त एवं सक्रिय नागरिक के रूप में अद्वितीय गुण" बहुत ही जानकारीपूर्ण हैं। इसके अतिरिक्त श्री पुनीत सिंह की "धरती की गोद", श्री अमिताभ सिंह की "पेर लीक" एवं सुशी प्रतिभा कुमारी की "निराशा और मृत्यु" कविता पठनीय हैं। पत्रिका के लेख संकलन हेतु संगठन-मंडल बर्दाई के पात्र हैं। पत्रिका के उच्चवर्तन भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

धन्यवाद
पुनः
हिंदी अधिकारी

A.G.B.
30 DEC 2024
PATNA

धन्यवाद
पुनः
हिंदी अधिकारी

संपर्क / Telephone 91-11-23702422, ईमेल / E-mail: dgac@gag.gov.in

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
प्रधान लेखाकार (लेखाधीन भाग) का कार्यालय, मुंबई
Office of the Principal Director of Audit
(CENTRAL) MUMBAI
C-25, Audit Bhawan, Bandra Kurla Complex,
Mumbai- 400 051
e-mail - pdc@mcauditsystem.gov.in

सं. प.नि.ले.प. (सी.ए.आर.आ.अ.पत्रिका समीक्षा/८१/४५) दिनांक ११/१२/२०२५

सेवा में,
व.से.अ./प्रशासन
कार्यालय प्रधान महालेखाकार, बीरचंद पटेल
पथ-८००००१
विषय- कार्यालयीन पत्रिका "चेतना" के 35वें अंक की समीक्षा संबंधी।

महोदय,
आपके कार्यालय द्वारा हिंदी पत्रिका "चेतना" के 35वें अंक प्राप्त हुआ। सख्त धन्यवाद। इस अंक के आंतरिक पृष्ठ, साज-सज्जा एवं अन्य कार्यालयीन गतिविधियों से संबंधित छवियाँ मनोरंजन एवं आकर्षक हैं। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, जानकारीपूर्ण एवं रोचक हैं। सभी राजभाषाई एवं संयुक्त मंडल को पत्रिका के सरल प्रकाशन हेतु बर्दाई एवं पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

धन्यवाद
पुनः
हिंदी अधिकारी

कार्यालय
प्रधान महालेखाकार (ले. व. ह.)
हिमाचल प्रदेश, शिमला-171 003
OFFICE OF THE
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E)
HIMACHAL PRADESH, SHIMLA-171 003

सं. हि.क.ले.व.ह.पत्रिका समीक्षा/2024-25/217 दिनांक- 06/01/2025

सेवा में,
वरिष्ठ लेखा अधिकारी (हिंदी)
कार्यालय महालेखाकार (ले. व. ह.)
बीरचंद पटेल पथ, पटना, बिहार- 800001

विषय : आपके द्वारा भेजित हिंदी पत्रिका "चेतना" के 35वें अंक की ई-प्रति की पावती।

महोदय,
उपरोक्त विषय पर आपके द्वारा भेजित हिंदी पत्रिका "चेतना" के 35वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई है जिसमें प्रकाशित सभी रचनाएँ उत्कृष्ट एवं जानकारीपूर्ण हैं। हिंदी भाषा की सुरक्षा के अलावा आपका प्रकाशित साहित्य है जिसके लिए आपका राजभाषा परिवार बर्दाई का पात्र है।
आपका हिंदी पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के मौखिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी। पत्रिका के उत्तरोत्तर अभिव्यक्ति शुभकामनाएँ।

धन्यवाद
पुनः
हिंदी अधिकारी

A.G.B.
21 JAN 2025
PATNA

धन्यवाद
पुनः
हिंदी अधिकारी

संपर्क / Telephone 91-083 265743, ईमेल / E-mail: dgag@himachalpradeshgag.gov.in

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), गुजरात, राजकोट-380001
Office of the Principal Accountant General (A&E), Gujarat, Rajkot-380001
फोन नं./Phone No: 0281-2441600-06, फैक्स नं./Fax No: 0281-245623

सं. हिंदी अनुभाग/पत्रिका समीक्षा/19/2024-25/अ.क. 154 दिनांक: १५-०२-२०२५

सेवा में,
वरिष्ठ अधिकारी/हिंदी,
कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी),
बीरचंद पटेल पथ, पटना, बिहार-800001

विषय- कार्यालयीन पत्रिका "चेतना" के 35 वें अंक की समीक्षा के संबंध में।

महोदय,
आपके कार्यालय की पत्रिका "चेतना" के 35वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सख्त धन्यवाद। पत्रिका में सभी रचनाएँ पठनीय, रोचक एवं जानकारीपूर्ण हैं। पत्रिका में सभी राजभाषाई से संबंधित छवियाँ मनोरंजन एवं आकर्षक हैं। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, जानकारीपूर्ण एवं रोचक हैं। सभी राजभाषाई एवं संयुक्त मंडल को पत्रिका के सरल प्रकाशन हेतु बर्दाई एवं पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

धन्यवाद
पुनः
हिंदी अधिकारी

A.G.B.
04 MAR 2025
PATNA

धन्यवाद
पुनः
हिंदी अधिकारी

अनुक्रमणिका

क्र० सं०	शीर्षक	रचनाकार (सर्व श्री/सुश्री/श्रीमती)	पृष्ठ संख्या
1	शोध पत्र-उपन्यास सम्राट प्रेमचंद की ब्रिटिश शासन में प्रतिबंधित कहानियाँ एवं उनका विवेचन	धीरज कुमार	1-2
2	बोधगया पर्यटन एवं यात्रा वृत्तांत	नीतीश कुमार	4-6
3	गुरु महिमा	संजय कुमार ओझा	7
4	राज हठ	श्रीराम पाण्डेय	8
5	जीवन में तनाव तथा उसका संपूर्णतावादी प्रबंधन	प्रियंका कुमारी	9-10
6	नदी की उन्मुक्तता	सुनीता कुमारी	11
7	सादगी	सोनी कुमारी	12-14
8	सेवानिवृत्ति के बाद: जीवन की नई शुरुआत का नया अध्याय	प्रतिमा कुमारी	15-16
9	कर्मफल	चन्द्र किशोर तिवारी	17
10	वो पल...	सन्नी कुमार	18
11	भोजन प्रेमी मित्र मेरा	प्रशांत प्रखर	19-20
12	मेरी कलम	सुनीता कुमारी	21
13	मौत!	उदयभान विश्वकर्मा	22
14	सेशेल्स की समुद्री-यात्रा	अवध बिहारी सिंह	24-26
15	सावन आने दो	अमिताभ सिंह	27

अनुक्रमणिका

क्र० सं०	शीर्षक	रचनाकार (सर्व सुश्री/श्रीमती/श्री)	पृष्ठ संख्या
16	सुंदरता सौंदर्य का	मेघा किरण	29
17	यात्रा	रुद्र प्रताप सिंह	30-31
18	डिजिटल इंडिया	अदिति	33-34
19	हिंदी	स्वाति कुमारी	35
20	चम्पक और पाँच-हज़ार की शर्ट	नूर अली	36
21	बुद्ध परिचय	संजय कुमार ओझा	38-40
22	मायाजाल	सोनू कुमार	41-42
23	यात्रा वृत्तांत	रमेश कुमार रजक	43-46
24	पर्यावरण एवं मानव	निसीथ कुमार	48
25	प्रकृति	रिशु सिन्हा	49

शोध पत्र- उपन्यास सम्राट प्रेमचंद की ब्रिटिश शासन में प्रतिबंधित कहानियाँ एवं उनका विवेचन :-

हिंदी साहित्य जगत में मुंशी प्रेमचंद को हिंदी कहानी के पितामह और उपन्यास सम्राट के रूप में जाना जाता है। वे हिंदी साहित्य में आदर्शोन्मुख -यथार्थवाद के प्रणेता हैं। उनका मूल नाम - धनपत राय श्रीवास्तव था। उनका जन्म 31 जुलाई 1880 को बनारस के पास लमही नामक ग्राम में एक किसान परिवार में हुआ था। उनका निधन 8 अक्टूबर 1936 में बनारस में हुआ।

हिंदी साहित्य संसार में उनकी उपस्थिति युगप्रवर्तक लेखक की रही है। एक ऐसे रचनाकार जिन्होंने अपनी कहानियों और उपन्यासों से बीसवीं शताब्दी के आरंभिक तीन दशकों में हिंदी-उर्दू में नवाचार की ढेरों मिसालें कायम की। यह वह दौर था, जब राजनीति भी समाज-सुधार के आन्दोलनों में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेते हुए मनुष्य को वैचारिक रूप से देश-प्रेम के प्रति उन्मुख करने और उसे कर्मशील बनाकर स्वाधीनता आन्दोलनों के प्रति

जागरूक करने की थी। ऐसे समय में प्रेमचंद अपनी लेखनी की मशाल थामे रूढ़िवादी परम्पराओं को त्यागकर वैज्ञानिक चेतना से आदर्शवादी लेखन की ओर बढ़े, जिसके एक शताब्दी बीत जाने के बाद भी आज तक हमलोग महसूस करते हैं।

प्रेमचंद का विपुल लेखन शुरुआती दौर में उन उर्दू पत्रिकाओं का भी मुख्याक्षेपी है।

“सोजे वतन” ब्रिटिश सरकार द्वारा जब्त कर ली गयी थी। हिंदी में प्रकाशित संकलन “सोजे वतन” तथा अन्य जब्तशुदा कहानियाँ दरअसल उर्दू में प्रकाशित उनके पहले कहानी संग्रह “सोजे वतन” की कहानियों के हिंदी रूपान्तरण के साथ 1932 में प्रतिबंधित हिंदी कहानियों के संचयन “समर यात्रा” व 11 अन्य राजनीतिक कहानियों का एक ही जिल्द में सम्मिलित संकलन है। इन रचनाओं का ऐतिहासिक महत्व है। ब्रिटिश हुकूमत द्वारा लंबे अरसे तक इन महत्वपूर्ण अफसानों को जमींदोज कर दिया गया था। क्योंकि ये स्वतंत्रता प्राप्ति की आकांक्षा को मानवीय ढंग से समझाते हैं। “सोजे वतन” का पहला प्रकाशन 1908 में हुआ था और इसे मुंशी दयानारायण निगम ने “नया जमाना” कार्यालय कानपुर से प्रकाशित किया था। यह माना जाता है कि इनकी पहली कहानी “दुनिया का सबसे अनमोल रतन” संभवतः 1907 में लिखी गई, मगर इसका प्रकाशन 1908 में ही मिलता है। यह कहानी देशप्रेम की भावना से भरी और इंसानी जज्बे को मार्मिकता से बखान करने वाली है। कहानी में उर्दू और हिंदी का बेहतरीन इस्तेमाल कई तरह के





अनमोल हीरों को ढूँढने की समझ और अंत में प्रेरणा से खत्म होनेवाली "खून का वह आखिरी कतरा जो वतन की हिफाजत में गिरे दुनिया की सबसे अनमोल चीज है।" यह कहानी हमें आज भी लुभाती है। इसके सरोकार उस दौर को रेशा-रेशा उधार कर रख देते हैं। जब भारत में स्वराज पाने का सपना समाज में फैलना शुरू हुआ था। एक अन्य कहानी "सांसारिक प्रेम और देशप्रेम" में मैजिनी और मैग्डालिन की प्रेम कहानी के बहाने देशप्रेम की भावना बेहद खूबसूरती से चित्रित किया गया है। "यही मेरा वतन" और "शोक का पुरस्कार" भी ऐसी कहानियाँ हैं, जिन्हें पढ़कर यह समझा जा सकता है कि ब्रिटिश सरकार को इन्हें जब्त करने की जरूरत क्यों आन पड़ी?

"माधुरी" पत्रिका की मई 1930 अंक में प्रकाशित "समर यात्रा" का फलक बहुत बड़ा है। नोहरी कोदई चौधरी नायक जैसे चरित्र वाली यह कहानी स्वराज्य पाने के लिए गाँव-गाँव हर एक के व्यवस्था विरोध की सत्याग्रहियों के दल बनाने की मार्मिक कथा है। इसे पढ़कर हम भारत के उस

चरित्र को समझ सकते हैं। किस तरह घर-घर सत्याग्रह के लिए लोगों में भावनाएं जागृत हुई थी। नोहरी जैसी वृद्ध महिला का चरित्र हिंदी कथा संसार में दुर्लभ है जिसके संवाद आज भी आँखों में आँसू ला देते हैं। "आहुती", "जेल", "लांछन", "ठाकुर का कुंआ", "जुलूस", "अनुभव" और "होली का उपहार" न जाने कितनी ऐसी कहानियाँ हैं, जो पराधीनता में तड़पते हुए भारत का अंतर्मन को व्यक्त करती है। इन कहानियों की स्त्रियाँ, बच्चे, दलित और वंचितों की मनोदशा के साथ एक तरफ गांधीजी, क्रांतिकारी, नेतागण और आदर्शवादी समाज है, तो दूसरी तरफ दरोगा और सिपाही भी उस कालखंड का इतिहास बयां कर रहे हैं। लगता ही नहीं कि हम किसी कथाकार की कहानियाँ पढ़ रहे हैं, बल्कि हम उस कहानी में इस तरह खो जाते हैं मानो वह यथार्थ घटित हो रहा हो।



धीरज कुमार,
वरिष्ठ लेखाकार

कार्यालय में आयोजित स्वतंत्रता दिवस समारोह
की कुछ झलकियाँ



बोधगया पर्यटन एवं यात्रा वृत्तांत

बोधगया

भारत के बिहार राज्य की राजधानी पटना से 100 किमी दक्षिण पूर्व में गया जिले में स्थित भारत के सांस्कृतिक और धार्मिक अतीत से जुड़े कुछ सबसे उल्लेखनीय स्थलों में से एक ऐतिहासिक स्थान है। बोधगया देश के सबसे पुराने शहरों में से एक शहर "गया जी" के समीप एवं पूजनीय फल्गु नदी के पश्चिमी तट पर स्थित है।

इतिहास

बोधगया का उल्लेख इतिहास में 18वीं शताब्दी से मिलने लगता है। बोधगया को पहले उरुवेला के नाम से जाना जाता था। 563 ई० पूर्व के बीच शाक्य गणराज्य के तत्कालीन राजधानी कपिलवस्तु के निकट लुंबनी (नेपाल) नामक स्थान पर सिद्धार्थ नामक बच्चे का जन्म हुआ। सिद्धार्थ के गृहत्याग के बाद 35 वर्ष की आयु में वैशाख पुर्णिमा के दिन गया के निकट निरंजना या फल्गु नदी के तट पर कठोर तपस्या के उपरांत सिद्धार्थ की साधना सफल हुई। उन्हें सच्चा बोध प्राप्त हुआ। तत्पश्चात, सिद्धार्थ "बुद्ध" कहलाए। चूंकि भगवान बुद्ध को वैशाख महीने में पुर्णिमा के दिन ज्ञान की प्राप्ति हुई थी, इसलिए यह दिन बुद्ध पुर्णिमा के नाम से जाना गया। जिस पीपल वृक्ष के नीचे सिद्धार्थ को बोध की प्राप्ति हुई, वह बोधिवृक्ष कहलाया। बुद्ध के अनुयायी उस स्थान पर धीरे-धीरे जुटने लगे और गया जी का समीपवर्ती होने के कारण यह जगह बोधगया कहलाने लगा।

पर्यटन

पर्यटकों हेतु बोधगया में कई दर्शनीय स्थल हैं। पर्यटन के दृष्टिकोण से यहाँ वर्ष में नवंबर से फरवरी माह तक का समय सबसे बेहतरीन होता है। बोधगया में घूमने के लिए कई पर्यटन स्थल हैं और इनमें से कुछ का विवरण नीचे दिया गया है। बोधगया भ्रमण हेतु पर्यटकों के लिए एक-दो दिन का समय पर्याप्त है।

यहाँ स्थित प्रमुख पर्यटन स्थल:

1. महाबोधि मंदिर



ज्ञान प्राप्त हुआ था। यह मूर्ति पद्मासन की मुद्रा में है। बुद्ध के ज्ञान प्राप्ति के 250 वर्ष बाद सम्राट अशोक बोधगया आए थे और ऐसा माना जाता है कि उन्होंने बोधिवृक्ष के पास एक छोटे से मंदिर का निर्माण कराया। हिंदुस्तान में बौद्ध धर्म के पाटन के साथ साथ इस मंदिर को लोग भूल गए थे और यह मंदिर धूल-मिट्टी में दब गया था। 19वीं सदी में ब्रिटिश अधिकारी/पुरातत्वविद एलेक्जेंडर कनिंघम ने इस मंदिर की मरम्मत कराई। सन् 1883 में उन्होंने इस जगह की खुदाई कराई और काफी मरम्मत के बाद इस मंदिर को पुनः बहुत हद तक सही अवस्था में लाया गया। मंदिर के चारों ओर पत्तर की नक्काशीदार रेलिंग बनी हुई है। इस मंदिर परिसर के दक्षिण पूर्व दिशा में एक खूबसूरत पार्क है, जहाँ बौद्ध भिक्षु ध्यान लगाते हैं।

2. बुद्ध प्रतिमा :



कलाकार दासगुप्ता सहित लगभग 12,000 राजमिस्त्रियों ने सात साल में बनाया था। यह प्रतिमा बलुआ पत्थर और लाल ग्रेनाइट के ब्लॉकों के मिश्रण से बनाई गई है। 18 नवंबर 1989 को 14वें दलाई लामा द्वारा इसे प्रतिष्ठित किया गया था।

3. बोधिवृक्ष:



जातक कथाओं में उल्लेखित बोधि वृक्ष भी यहां है। यह एक विशाल पीपल का वृक्ष है, जो मुख्य मंदिर के पीछे स्थित है। कहा जाता है कि भगवान बुद्ध को इसी वृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त हुआ था। वर्तमान में जो बोधि वृक्ष है वह वास्तविक बोधि वृक्ष का ही वंशज है।

4. तिब्बतियन मठ एवं थाई मठ :



यह महाबोधि मंदिर के पास स्थित बोधगया का सबसे बड़ा और पुराना मठ है, जो 1934 ई० में बनाया गया था। इसमें बुद्ध की एक विशाल प्रतिमा है। इसी से सटे सन 1956 में थाईलैंड के राजा द्वारा निर्मित यह देश का एकमात्र थाई मंदिर है। मठ थाईलैंड की वास्तुकला की विशिष्ट सुंदरता को प्रदर्शित करता है और इसे एक विशिष्ट शैली में ढलान और मोड़ वाली छत से सजाया गया है। मठ में कांस्य से बनी बुद्ध की एक विशाल मूर्ति है। अंदर का वातावरण एकदम शांत है।

5. रॉयल भूटान मठ:



यह मठ बोधगया की सबसे खूबसूरत मठों में से एक है। मिट्टी की नक्काशी में बुद्ध के जीवन को चित्रित करने वाला यह मठ दुनिया भर के पर्यटकों को बड़ी संख्या में आकर्षित करता है। बुद्ध को श्रद्धांजलि के रूप में भूटान के राजा द्वारा निर्मित, मठ पूरी तरह से पारंपरिक उत्कृष्ट वास्तुकला में है। नक्काशीदार और सजाए गए मठ में भूटान के भिक्षुओं के लिए एक विश्राम गृह है। मठ के अंदर एक मंदिर है जिसमें बुद्ध की एक प्रतिमा है, जिसकी ऊंचाई 7 फीट है। छवि को प्रतीकों और ग्रंथों के साथ उकेरा गया है। भूटानी मठ के भिक्षु मंदिर में प्रार्थनाओं का आयोजन करने के अलावा बुद्ध के जीवन और शिक्षाओं पर प्रवचन भी देते हैं।

6. बुद्धराम मंदिर:



चांदी का मंदिर या बुद्धराम मंदिर एक खूबसूरत मंदिर है। इसमें सफेद रंग में बुद्ध की एक बहुत बड़ी मूर्ति है जो चांदी के एक उत्कृष्ट शिवालय को सुशोभित करती है और यह मंदिर के पीछे स्थित है।

7. जापानी मंदिर



बौद्ध समुदायों की मदद से वर्ष 1972 में निर्मित यह मंदिर बोधगया की सबसे लोकप्रिय मंदिरों में से एक है। लकड़ी से बना यह खूबसूरत मंदिर जापानी मंदिर जैसा दिखता है। यह जापानी वास्तुकला और बौद्ध संस्कृति दोनों के गठजोड़ का एक अच्छा उदाहरण है। मंदिर की गैलरी में जापानी पेंटिंग हैं जो बुद्ध के जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं को दर्शाती हैं।

8. डूंगेस्वरी की पहाड़ियाँ:



डूंगेस्वरी की पहाड़ियाँ वह स्थान है, जहाँ बुद्ध ने बोधगया आने से पहले अपने जीवन के कई साल बिताए थे। यह गुफाएँ फल्गु नदी के किनारे स्थित हैं और इस स्थल तक पहुँचने के लिए आपको शहर से दूर पहाड़ियों की ओर जाना होगा। यह ड्राइव अत्यंत मनभावन और दर्शनीय है। इन गुफाओं में कई बौद्ध और हिंदू स्तूप और मंदिर हैं।

बोधगया पहुँचने हेतु : बोधगया का निकटतम हवाई अड्डा गया जी है, जो बोधगया शहर से लगभग 17 किलोमीटर दूर है। हालाँकि यहां कम ही फ्लाइटें आती हैं लेकिन यह कोलकाता से हवाई मार्ग द्वारा अच्छी तरह से जुड़ा है। इसके अलावा पटना एयरपोर्ट से भी यहाँ आने-जाने हेतु व्यवस्था है।

- बोधगया का निकटतम रेलवे स्टेशन **गया जंक्शन** है जो यहां से 13 कि.मी. दूर है। इस स्टेशन से कई राज्यों से ट्रेनें गुजरती हैं। आप गया रेलवे स्टेशन के बाहर से टैक्सी लेकर बोधगया पहुंच सकते हैं। बोधगया सड़क मार्ग के साथ पटना, राजगीर, नालंदा, वाराणसी आदि शहरों से सड़क मार्ग से अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है।
- बोधगया में निवास हेतु बहुत सारे अच्छे होटल एवं गेस्ट हाउस इत्यादि उपलब्ध हैं। यहाँ खाने पीने से लेकर सभी प्रकार की सुविधा उपलब्ध है। इस शहर के भोजन की बात करें तो उत्तर भारतीय व्यंजनों के समान है। इसके अलावा यहां जापानी, थाई व्यंजन आदि का भी लुत्फ उठा सकते हैं।



नीतीश कुमार,
लेखाकार

गुरु महिमा

बंदौ श्री गुरु चरण पखारी। तन पुलकित मन होहि सुखारी॥
तिनके चरण धरई निज माथा। जिनके अनुग्रह होहि सनाथा॥ 1

गुरु पद रज रसमय मकरंदा। लिपट आई उर अति आनन्दा॥
गुरु पद कंज भृंग मन मोरा। जाई खिचई बरबस तेहि ओरा॥ 2

जग जानहि जेहि शिव समाना। जपहि नाम होहि कल्याणा॥
अर्पित सुमन करहूँ बहू बारा। महिमा अमित जानहि संसारा॥ 3

जे राखहि गुरुपद विश्वासा। मिटहि तिमिर पथ होई प्रकाशा।
जन्म रहस्य जिमि जग लपटाये। मुक्ति पथ गुरु चरण समाये॥ 4

गुरु चरणन की यह प्रभुताई। सहस बदन से कही न जाई॥
गुरु पद पंकज के परतापा। मेटहि जीव सकल परितापा॥ 5

पारस महिमा लौह गति जानी। चंदन संग घिसे जस पानी॥
स्वातीक बूंद सीपहि समाहि। मोती में परिणत होही जाहीं॥ 6

गुरु वशिष्ठ ब्यास परशुरामा। बारबार तिन्ह करहूँ प्रणामा॥
भजउं चरित जो ज्ञान निकेता। सुमिरउं सदगुरु बुद्ध समेता॥ 7

सुमिर कवि कवित्त करे नाना। सब सग्रंथ जिनके प्रमाणा॥
गोविन्द से गुरु मानहूँ उपर। जिनके सम नही दूजा भू पर॥ 8

ताके विनय करुं कर जोरी। मांगू बरद पुनि पूजि बहोरी॥
जानहूँ मोहे गुरु के शरणा। तिनके चरित आज मोहे बरना॥ 9

पुनि बंदौ गजवदन गणेशा। करहूँ सफल सब हरहुं क्लेशा॥
लेखनी जिमि मंजूल मसि धरई। कोरे कागज स्यामल करई॥ 10

रचहूँ कवित्त गुरु देहूँ दुहाई। ललित छंद निमित्त चौपाई॥
लिखहूँ वही होई जो सांचा। सुनहु लोग सुनावहि वांचा॥ 11

अथ गुरु शिष्य मध्य व्यवहारा। जान लेहु जो जान निहारा॥
शाक्य मुनि गणिका को चीन्हा। पतिता को भी पावन कीन्हा॥ 12



संजय कुमार ओझा,
सहायक लेखा अधिकारी

राज हठ

जब भी कोई इस तरह की बात हो जाती, जो शिवचरणजी के हृदय को आघात पहुँचाती या उनके मन के अनुरूप नहीं होती या फिर यह लगता कि अमूक बात सरासर गलत है तो वे तत्क्षण निर्णय ले लेते कि उस बात का पुरजोर विरोध करूँगा। परंतु वे निर्णय बस ढाक के तीन पात ही साबित होते। रेत के महल की तरह तय विरोध के स्वर भरभरा जाते। इस बात के लिये हमेशा उन्हें घर के लोगों के आक्रोश का सामना करना पड़ता।

घर के लोग, जी हाँ, पत्नीजी और बच्चे। इन सबों को जब कभी लगता कि अमूक बात यदि सही नहीं है (यह आवश्यक नहीं कि बात गलत ही हो), तो उसका विरोध तो होना ही चाहिये। और विरोध करे तो कौन? घर के तथाकथित सिरमौर, मालिक शिवचरणजी और कौन? बेचारे हाँ की स्वीकारोक्ति देकर बलि का बकरा बनने के लिये तैयार भी हो जाते। पर जब सोचने लगते कि किसका विरोध करूँ, बड़े बुजुर्गों का, अपने से छोटों का। तब वही महाभारत का यक्ष प्रश्न खड़ा हो जाता। परंतु यहाँ चक्रधारी श्रीकृष्ण कहाँ, जिनके गीतोपदेश के बाद वे गांधीव उठाने के लिये तत्पर हो पाते। घर के वृंद तो बस बिना आगे—पीछे सोचे, बिना सारथी बने उद्घोष कर देते—उठो पार्थ गांधीव संभालो।

खैर, इसी तरह चलता रहता, गाँव के घर (यहाँ उस घर की बात कर रहा हूँ जहाँ शिवचरणजी के माँ—बाबूजी रहते हैं) की कोई बात अप्रिय लगी नहीं कि पत्नी—बच्चे न उकसाने से बाज आते, न शिवचरणजी तनफनाने से और फिर विरोध न कर पाने के कारण कुंठित होने से। बेचारे करते तो क्या, 'सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात्, न ब्रूयात् सत्यं अप्रियं' श्लोक का पाठ वे प्रतिदिन किया करते थे। फिर अप्रिय सत्य वाणी से कैसे निकलता!

तब एक दिन पत्नी चक्रधारी माधव के रोल में आई और उन्हें गीता का ज्ञान देने लगीं— राणा सांगा का नाम तो सुने हैं न आप। कैसे न सुने होंगे, इतिहास के ज्ञाता तो हैं ही। हाँ तो राणा सांगा ने अपनी प्रतिज्ञा, राज हठ के कारण एक सौ से भी ज्यादा युद्ध लड़े और जीत लिये थे। और जीत भी कैसी—कैसी! जब हार सुनिश्चित थी, सारे सैनिक, सेनापति हतोत्साहित हो

जाते। तब फिर राणा का हठ ही तो काम आता—वीर योद्धाओं, हमें हर हाल में जीतना है। आगे बढ़ो, दुश्मनों की छाती को छलनी कर दो। फिर राजा के ललकार से तय हार जीत में बदल जाती।

पत्नीजी की ललकार का कितना असर शिवचरणजी पर पड़ता, यह जान लेना असंभव था। परंतु एक दिन ऐसी घटना घटी, जो शिवचरणजी के हृदय को आहत कर गई। उनके पुत्र ने अपने दादाजी से लैपटॉप खरीदने के लिये रुपयों की मांग की और दादा (शिवचरणजी के बाबूजी) ने न होने की बात कह दी। फिर क्या, अनुप्रास—विन्यास के साथ यह बात शिवचरणजी को बता दी गई, यूँ कहा जाय कि घी डाल आग को भड़का दिया गया और फिर जो सोचा न जा सकता था, वह शिवचरणजी ने तय कर लिया। मेरे हिस्से का बंटवारा कर दीजिये बाबूजी, मन में यह सोच वे गाँव चल दिये। प्रणाम पाती के बाद यह सोचकर कि रात में बाबूजी से बात करूँगा, वे गाँव घुमने चले गये। अनुभवी बाबूजी समझ गये कि बेटे की त्योरियों चढ़ी हुई थीं।

शिवचरणजी गाँव से घुमकर आये और पूरी तैयारी के साथ बाबूजी के सिरहाने बैठ गये। बाबूजी उस समय सो रहे थे। निहारने लगे शिवचरणजी, बाबूजी इस बार कुछ अधिक कमजोर लग रहे थे। चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ जाने के कारण ज्यादा बूढ़े भी दिखने लगे थे। शिवचरणजी ने अपने को कठोर किया— जो भी हो, बात तो करनी ही होगी। उठने की प्रतीक्षा करने लगे। अचानक नींद टूटने पर बाबूजी उन्हें वहाँ देखकर पूछ बैठे—का हो शिवचरण, का बात बा?

कुछ ना बाबूजी, तहार गोड़ दुखात होई, दबावे आइल बानी हम। इतना कह शिवचरण अपने वृद्ध पिता के पाँव दबाने लगे।



श्रीराम पाण्डेय,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी

जीवन में तनाव तथा उसका संपूर्णतावादी प्रबंधन

तनाव का अर्थ—“जोर देना” है। जब हम किसी चीज को सहजता और सरलता से प्राप्त नहीं कर पाते हैं, उसे पाने के लिए जोर देते हुए अत्यधिक चिंतन करते हैं। यही तनाव है जो दबाव उत्पन्न करता है।

तनाव कई प्रकार के होते हैं—1. वातावरण का 2. सामाजिक स्तर का 3. पारिवारिक स्थिति का 4. कार्य का 5. जिम्मेदारियों का 6. रोजगार का 7. अध्ययन का 8. महत्वाकांक्षाओं का।

हमारी इच्छाएँ, सपने, जरूरतें, उम्मीदें, चाहतें, असीमित हैं, परन्तु हमारे शरीर की ऊर्जा शक्ति, मानसिक शक्ति, अर्थ शक्ति और जिंदगी सीमित है। असीमित के साथ सीमित का संघर्ष हमें तनावग्रस्त करता है। चाहत अपूर्ण होने में व्यवधान पैदा होता है। मन की इच्छाएँ क्षतिग्रस्त होने लगती हैं, ऐसी हालात ही मानसिक संतुलन बिगाड़ती है। जब मन क्षमता से विपरीत होने लगता है, जिससे आनंद और सुकून दूर भागता नजर आता है और मन तनावग्रस्त होने लगता है। तनाव का कोई सटीक परिभाषा देना संभव नहीं है। अगर हम इस पर विचार करें कि तनाव किस वजह से

हुआ है ? उस वजह को जानकर उसका निदान करें तो मन को तनावमुक्त किया जा सकता है। वजह सामने आने पर निष्पक्षता से सोचना चाहिए कि उसका जिम्मेदार कौन है, स्वयं अथवा अन्य ? अगर स्वयं हैं तो अपने में परिवर्तन लाएँ और अन्य जिम्मेदार हैं तो आशावादी दृष्टिकोण रखते हुए उसे समझाने की कोशिश करें, हल निकालें। अगर इसमें सफल न हो तो स्वयं को बदलें।

योग द्वारा तनाव का प्रबंधन किया जा सकता है। योग के अनुसार मानसिक रोग का मुख्य कारण चिंता का चंचल होना है। विज्ञान बताता है कि प्रतिक्षण 4500 आवेग मस्तिष्क में प्रवेश करते हैं, जिससे मस्तिष्क थकान का अनुभव करने लगता है। व्यक्ति तनाव के कारण मनोकायिक रोगों से ग्रस्त हो जाता है। महर्षि पतंजलि ने योगिश्चतवृत्ति निरोध कहा है। अर्थात् योग चिंता को वृत्तियों से बचाता है। योग आत्मानुशासन का प्रशिक्षण देता है। योग को “अथयोगानुशासनम्” की संज्ञा दी गयी है क्योंकि योग अनुशासन से ही आरंभ होता है। यह मन, चित्त, शरीर



सभी पर संयम रखना सिखाता है। योग द्वारा संवेगों, इच्छाओं पर नियंत्रण प्राप्त होता है जिससे विवेकशील और तर्कसंगत निर्णय लेने में बाधा नहीं आती है। इससे नकारात्मक दृष्टिकोण एवं प्रवृत्तियाँ समाप्त हो जाती हैं। जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न होने लगता है। फलस्वरूप आत्मविश्वास, आशावादिता और आत्मसंतोष विकसित होता है, जो आनंद का अनुभव कराता है।

शारीरिक तनाव के लिए सूर्यनमस्कार का अभ्यास उत्तम है। इससे पूरे शरीर में रक्त संचार होता है, कड़ापन दूर होता है। चक्रासन के द्वारा मेरुदंड से संबंधित समस्याओं को दूर कर सकते हैं। इस तरह स्नायु तन्त्र के लिए सिंहासन, पेट की बीमारियों के लिए पश्चिमोत्तनासन तथा फेफड़ा की कमजोड़ी दूर करने के लिए भुजंगासन का अभ्यास किया जाता है। ये सभी अभ्यास शरीर में जमें हुए अम्ल तथा तनाव की परतों को हटाते हैं, दूर करते हैं। इसीलिए विश्व के अनेक राष्ट्रों में योग से संबंधित अनेक प्रयोग एवं अनुसंधान किए जा रहे हैं। भारत में उच्च रक्तचाप, हृदयरोग, दम्भा, पाचन-क्रिया में गड़बड़ी तथा मधुमेह के ऊपर अनेक प्रकार के शोध किए गए हैं। आस्ट्रेलिया में कैंसर के ऊपर शोध किया गया है। इंग्लैंड में अभी ऐड्स पर शोध चल रहा है और इन सभी बीमारियों का इलाज योग के सरल अभ्यासों द्वारा किया जा रहा है। जिसमें सफलता भी मिल रही है। साथ ही साथ योग अभ्यासों द्वारा मनोव्यथा को भी दूर करने का प्रयास अमेरिका, फ्रांस, जर्मनी, स्पेन आदि राष्ट्रों में किया जा रहा है। डॉ० ओर्निश ने लगभग 300 हृदय रोगियों पर योग के 24 दिन से लेकर 3 महीने तक प्रभाव को देखा और पाया कि जटिल से जटिल हृदय रोग जिसके लिए डॉक्टर सर्जरी ही मात्र उपचार बताते हैं उसका भी निदान हुआ और रोगी रोगमुक्त हो गए।

मानसिक तनाव को कम करने के लिए योगनिद्रा तथा ध्यान के अभ्यास को सबसे उपयुक्त माना गया है। योगनिद्रा का नियमित अभ्यास व्यक्ति को स्वयं के प्रति सजग बनाता है, जो चेतना के स्तर पर व्यक्ति को अपनी विभिन्न अवस्थाओं की जानकारी देता है, ताकि सूक्ष्म से सूक्ष्म तनाव को भी दूर किया जा सके। ध्यान का नियमित अभ्यास करने से बाह्य संवेदना से सुरक्षा और लक्ष्य के प्रति एकाग्रता उत्पन्न होती है। जिससे व्यक्ति तनाव से बच जाता है। इस

तरह तनाव के प्रबंधन के लिए योग एक वरदान है। तनाव मुक्त करने में संगीत की भूमिका भी महत्वपूर्ण है। तनाव इस युग की महाव्याधि के रूप में उभर कर हम सब के सामने है, जिसका परिणाम यह है कि लगभग 74 प्रतिशत अधि (मानसिक रोग) और व्याधि (शारीरिक रोग) तनावजन्य है। तनाव का हमारे जीवन से गहरा रिश्ता भी है। यह सत्य है कि जीवन के हरेक मोड़ पर तनाव आते हैं, पर उससे भी ज्यादा सच यह है कि हर तनाव कुछ न कुछ नया करने की प्रेरणा देकर जाता है।

तनाव प्रबंधन करने के लिए शरीर व मन के विशेषज्ञ चिकित्सकों द्वारा कई तरह की दवाइयाँ, वैज्ञानिक प्रविधियाँ, योग एवं वैकल्पिक चिकित्सा जैसे—संगीत चिकित्सा, प्राण-चिकित्सा, रंग-चिकित्सा आदि तकनीक का ईजाद किया गया है। वर्तमान समय में मनोचिकित्सा के एक अंग के रूप में विदेशों में तथा भारत में संगीत चिकित्सा का उपयोग किया जाता है। संगीत मानव मन में स्थिर विभिन्न मनोभावों की अभिव्यक्ति है। संगीत का उद्देश्य न केवल मानव व्यवहार को स्वर तथा ताल के माध्यम से अभिव्यक्त करना है, बल्कि व्यक्ति को तनावमुक्त करके संतुलित व्यवहार की ओर भी प्रेरित करना है।

संगीत में रोगी के संवेगात्मक एवं बौद्धिक पहलुओं को जागृत करने की शक्ति होती है। इसे सुनते ही रोगी के मनःस्थिति परिवर्तित हो जाती है। मनःस्थिति में परिवर्तन होने से व्यक्ति का अपनी परिस्थितियों को देखने समझने व उसका विश्लेषण करने का दृष्टिकोण भी बदल जाता है। जिससे तनाव प्रबंधन करने में मदद मिलती है। अतः संगीत का मन पर पड़ने वाले चिकित्सीय प्रभाव को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता है।



प्रियंका कुमारी,

पति - श्री धीरज कुमार
वरिष्ठ लेखाकार

नदी की उन्मुक्तता

नदी दिव्य लक्षणों में सम्पूर्ण
अनेकों कलाओं से परिपूर्ण
कभी घटती कभी बढ़ती
सदा मुक्त स्वरूपा, मार्ग प्रदर्शिता
मानव को बहुतेरे शिक्षित करती
हमेशा आनंद में अठखेलियाँ करती
नदी बहुत कुछ सिखाती।
चट्टानों का सीना चीरती
मार्ग में आए बंधनों की बेड़ियाँ तोड़ती
समुद्र से मिलने की चाह
भूल अतीत की आह
नदी बहुत कुछ सिखाती।
हे मानव! तू तो सारगर्भित, सर्वशक्तिमान
मत कर अपनी क्षमता का अपमान
देख नदी की शान
अपने अन्तर्मन को पहचान
तू भी नदी जैसा बलवान
नदी कठिन जीवन का सटीक उदाहरण
सीख नदी से जीवन यात्रा
और बना अपनी राह
अपने पथ पर अविरल अग्रसर
नदी बहुत कुछ सिखाती।



सुजीता कुमारी,
लेखाकार

सादगी

मनुष्य की उत्पत्ति से लेकर आज के युग तक उसके जीवन में काफी उतार-चढ़ाव देखा गया है। आजकल लोगों में अनेक प्रकार की भावनाओं का प्रवाह हो रहा है। उसी भावनाओं में से एक है हाई-प्रोफाइल की मानसिकता। इस स्टेट्स को दिखाने की होड़ लगी है। बात यहीं खत्म नहीं होती है, इसी हाई-प्रोफाइल में शामिल लोग दूसरे को तुच्छ समझने लगते हैं या यूँ कहें कि अपने आप से बिल्कुल अलग अर्थात् उन्हें गरीब समझते हैं। यह दौड़ मनुष्यों में इतना हावी हो गया है कि अपने परिवार तथा रिश्तेदारों तक को भी हाई-प्रोफाइल तथा लो-प्रोफाइल में विभक्त कर दिया है। कुछ मध्यम वर्गीय मनुष्य हाई-प्रोफाइल की दौड़ में शामिल होने के लिए अपना नुकसान करा बैठते हैं। जब तक उन्हें इसका एहसास होता है तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। इसी संसार में, कुछ ऐसे भी मनुष्य हैं, जो जीवन में काफी कुछ हासिल कर लिए हैं। लेकिन हाई-प्रोफाइल उनके लिए महज शब्द है। वे अपना जीवन, सादगी, प्यार और अपनापन के साथ जीते हैं। उनके लिए हाई-प्रोफाइल या लो-प्रोफाइल का ओहदा रखने वाले मनुष्यों से कोई मतलब नहीं होता। वे सादगी से सब से मिलते हैं, कोई दिखावा नहीं करते हैं और मदद के लिए हमेशा खड़े रहते हैं।

सुदामा अपनी पत्नी के साथ एक भाड़े के मकान में रहता था। वह एक सरकारी कॉलेज का प्रोफेसर था। नई-नई शादी हुई थी। उन्हें कुछ वर्षों के बाद तीन बेटियों की प्राप्ति हुई। उसे लिखने का भी शौक था। उसकी कई पुस्तकें छपी जो बहुत प्रचलित हुई। कुछ समय के बाद, एक बड़े सोसाइटी में उसने चार कमरों वाला फ्लैट खरीदा। उस सोसाइटी में 15-20 इमारतें थी। प्रत्येक इमारत में लगभग 100 फ्लैट थे। सोसाइटी में ज्यादातर बड़े व्यापारी, डॉक्टर, इंजीनीयर, आई.ए.एस. आदि जैसे लोग तथा उनके परिजन रहते थे। सोसाइटी में आने के बाद सुदामा के जीवन में बहुत परिवर्तन आया। रविवार का दिन था, सुदामा अपने पड़ोसियों के साथ सोसाइटी के पार्क में घूम रहा था। रमन जो पेशे से डॉक्टर है, कहता है “क्यों सुदामा, बड़ी बेटी तो चार साल की हो गई है, किस स्कूल में दाखिला दिलवा रहे हो? सुदामा— “यहीं पास के किसी स्कूल में नाम लिखवा दूंगा। अभी तो चार साल की है।” रमन— “बड़ी मुंह छोटी बात, अरे यार मेरे बेटे का नामांकन तीन वर्ष की आयु में हुआ था। यहीं पास में ही स्कूल है, एकदम हमलोग की तरह हाई-प्रोफाइल। यहाँ गरीब के बच्चे नहीं पढ़ते हैं।” अगले



दिन सुदामा अपनी दो बेटियों का दाखिला उसी स्कूल में करवा दिया। सभी बच्चे अपने माता-पिता के कार से स्कूल आना-जाना करते थे। स्कूल एक दम पास होने के बावजूद भी सुदामा को कार लेनी पड़ी। इस तरह से वह भी हाई-प्रोफाइल सोसाइटी का हिस्सा बन गया। सोसाइटी में आए दिन पार्टियां होती थी। पार्टियां भी अजीब कारणों से मनाई जाती थी जैसे— मैट्रिक के दोस्तों का गेट टुगेदर पार्टी, गाड़ी खरीदने की पार्टी, बैचलर पार्टी, पत्नी से पहली मुलाकात की तिथि की पार्टी, क्लास में फर्स्ट आने की पार्टी आदि। ये सोसाइटी वाले लोग भारत में मनाने वाले पर्व और त्योहारों को भी पार्टियां में बदल दिये थे। पार्टियों में होस्ट को जो गिफ्ट मिलता है, उस पर चर्चा करना आम बात थी। उसने सस्ता गिफ्ट दिया, इसने महंगा गिफ्ट दिया। मतलब जो जितना महंगा गिफ्ट देता है उसपर उतना ही हाई प्रोफाइल का लेबल लगाया जाता है। सुदामा की पत्नी इन दिखावों से ऊब चुकी थी।

समय गुजरता गया। सुदामा की बड़ी बेटी, सुनैना पढ़ाई में साधारण थी। उसकी शादी एक बिजनेस मैन से हुई। उसके पति के बड़े-बड़े शहरों में कसीनों थे। वहीं दूसरी बेटी, श्रेया अपने पिता की तरह एक प्रोफेसर बनी। छोटी बेटी, सुगंधा एक विदेशी कंपनी की प्रेसिडेंट के पद पर थी। इन दोनों की शादी एन.आर.आई. से हुई। दोनों बेटियाँ विदेश में रहती थी। लेकिन माता-पिता के पास आना-जाना लगा रहता था। सुनैना के स्वभाव में सादगी थी। वह अपनी माँ की जैसी थी। उसका हाई-प्रोफाइल स्टेट्स के बीच दम घुटता था। वहीं श्रेया और सुगंधा अपनी पिता की तरह हाई-प्रोफाइल स्टेट्स में विश्वास करती थी।

सुनैना का पति मानसिक रोगी था। उसे गुस्सा बहुत आता था। व्यापार में थोड़ा भी घाटा उससे बर्दाश्त नहीं होता था। वह अपना गुस्सा सुनैना को पीटकर

निकालता था। यह सिलसिला बढ़ता ही जा रहा था। सुनैना ने अपने माता-पिता को यह बात नहीं बताई थी। वह उन्हें परेशान नहीं करना चाहती थी। फिर दोनों का तलाक हो गया। उसके पति ने सुदामा से यह शिकायत किया कि उसकी बेटी मंदबुद्धि है, उसे कुछ ज्ञान नहीं है। तलाक के बाद, सुनैना अपने बेटे के साथ माता-पिता के पास पहुंची। सुदामा, "यहाँ क्यों आई हो कुल्टा, इस सोसाइटी में मेरा रूतबा है, नाम है, स्टेट्स है। पढ़ने में तो मन लगाई नहीं और पति से रिश्ता भी खत्म करके चली आई। अपनी बहनों को देखो कितनी हाई-प्रोफाइल हैं। वह मेरी बेटियाँ हैं। तुम मेरे लिए मर चुकी हो।" उसकी माँ ने सुदामा को समझाने की बहुत कोशिश की पर सुदामा नहीं माना और धक्के मारकर सुनैना और उसके तीन वर्ष के बेटे को घर से निकाल दिया। वह रोते हुए घर से चली जाती है। सुनैना इस शहर से दूर किसी अन्य शहर में चली जाती है। उसे सबसे पहले एक घर की आवश्यकता थी। सुनैना सोच रही थी "बेटे के भरण-पोषण के लिए पैसे की मांग न करके गलती तो नहीं कर दी। नहीं मुझे उस नीच के पैसों से अपना पेट नहीं पालना है।" बहुत प्रयासोपरान्त उसे एक मकान में कमरा मिल जाता है। उसने विनती करके एक महीने बाद किराये के पैसे देने के लिए मकान मालिक को मना लिया। अब वह काम ढूँढने के लिए निकलती है। मकान के पास में ही एक ढाबा था। ढाबे का मालिक उदार व्यक्ति था। उसने सुनैना को खाना बनाने का काम दे दिया। इसके साथ उसे दो वक्त के खाने की व्यवस्था भी हो गई। इस तरह सुनैना दो सालों से अपना जीवनयापन व्यतीत करते आ रही थी। आकाश अब पाँच वर्ष का हो गया था। सुनैना अब आकाश को स्कूल में दाखिला दिलाने के बारे में सोचने लगी। उसे पैसे की आवश्यकता थी। उसे आस-पास के दो तीन घरों में बर्तन-पोछा का काम मिल गया। इस तरह से अब आकाश का दाखिला भी हो गया।

समय बीतता गया। आकाश बारहवीं की परीक्षा में टॉप किया। उसे आगे की पढ़ाई के लिए छात्रवृत्ति भी मिली। शेष पैसे शिक्षा लोन से प्राप्त हो गया था। इस तरह से आकाश की आगे की पढ़ाई शुरू हुई। उसकी मेहनत रंग लायी और उसे अच्छे पद पर नौकरी मिली। सुनैना बहुत खुश थी। आकाश अपना जीवन सादगी से जीता था। माँ जिस तकलीफ से उसका भरण-पोषण की है, उसे भलीभाँति ज्ञात था। धीरे-धीरे आकाश बिजनेस लाइन में आ गया। कुछ वर्षों के बाद, उसने कई बड़े-बड़े कंपनियों को खरीदा। जिस ढाबे में सुनैना काम करती थी, आकाश ने उसे बड़ा होटल बनाकर, ढाबे के मालिक को भेंट स्वरूप दिया।

कुछ वर्षों के बाद, सुनैना की मुलाकात उसकी माँ से होती है। उसकी माँ उसी शहर में, एक प्रसिद्ध मंदिर में पूजा करने आई हुई थी। इसी क्रम में दोनों की मुलाकात होती है। दोनों गले मिलते हैं। दोनों की आँखें नम थी। सुनैना की माँ, "इतने वर्षों के बाद मिली हो, चलो बेटा घर चलो।" सुनैना, "नहीं माँ, पिताजी को दुख होगा।" सुनैना की माँ, "अगले सप्ताह रविवार को तुम्हारे पिताजी का 75वां जन्मदिवस है। तेरे पिताजी को ब्रांडेड घड़ी पसंद है। मैं एक घड़ी खरीद दूँगी, तुम वही गिफ्ट कर देना। इस तरह से तेरे पिताजी भी खुश हो जाएंगे। श्रेया और सुगंधा भी आ रही हैं। ले बेटा मेरा मोबाइल नं. और जरूर से आना, मैं तेरे पिताजी को संभाल लूँगी। आकाश को भी साथ ले आना।" सुनैना माँ को मना नहीं कर पाई और इस तरह आने का वादा कर दिया।

सुनैना अपने बेटे को सारी बात बताती है। वह नाना के लिए ब्रांडेड घड़ी भी लेने की बात कही। आखिर वह दिन आ ही गया। सुनैना एक बड़ी गाड़ी से सोसाइटी में प्रवेश करने वाली होती है। वह अपनी गाड़ी सोसाइटी के बाहर पार्क करती है और पैदल सोसाइटी के अंदर जाती है। सुनैना के हाथ में एक साधारण प्लास्टिक था जिसमें ब्रांडेड घड़ी थी। वह प्लैट के अंदर प्रवेश करती है। सुनैना माँ से गले मिलती है। तभी श्रेया और सुगंधा भी आ जाती हैं। श्रेया, "माँ, किस भिखारिन को बुला लिया है, हमारे स्टेट्स का बेड़ा गर्क हो जाएगा।" माँ कहती है, "चुपकर, कुछ संस्कार है नहीं, बड़ी बहन से ऐसे भी कोई बात करता है। तुम दोनों इसे अकेला छोड़ दो। जब कुछ अच्छा सोच नहीं सकती तो इससे बात क्यों करती हो।" दोनों वहाँ से चली जाती हैं।

पार्टी घर के पीछे अवस्थित लॉन में होने वाली थी। लॉन की सजावट काफी अच्छे ढंग से की हुई थी। केक का टेबल सेट हो गया था। 75 पाउंड का केक उस पर रखा गया। लोग धीरे-धीरे इकट्ठा होने लगे थे। सुगंधा का पति सभी अतिथियों का स्वागत माइक से बोलकर रहा था। रात के 8 बजने वाले थे। सुदामा जैसे ही लॉन में आता है, सभी लोग खड़े होकर तालियों के साथ उसका स्वागत करते हैं। सुगंधा का पति यह घोषणा करता है "आज यह देखा जाएगा कि पापा के लिए कौन अच्छा गिफ्ट देता है, यूँ कहे तो कौन कितना महंगा गिफ्ट देता है। कोई कितना हाई-प्रोफाइल है उसके गिफ्ट की कीमत से आज मालूम पड़ेगा। गिफ्ट की कीमत बताने के लिए हमलोग के बीच अरोड़ा जी मौजूद हैं। ये मार्केटिंग एक्सपर्ट हैं। गिफ्ट का सही कीमत अरोड़ा जी बताएँगे।" तभी सुदामा की नजर सुनैना पर पड़ती है। वह अंदर-अंदर ही जल उठा। उसकी आँखें लाल हो गई।

लेकिन वह किसी तरह से अपने आप को संभालता है। केक काटा जाता है, खूब पटाखे फूटते हैं। सभी महिलाएं—पुरुष गले लग कर सुदामा को जन्मदिन की बधाई देते हैं। अपनी हाथों से कोई केक खिला रहा है तो कोई केक को उनके चेहरे पर लगा रहा है। जन्मदिन की पार्टी चरम पर थी। सुनैना और उसकी माँ भीड़ से दूर खड़ी थी।

लॉन के प्रवेश द्वार पर दो गार्ड थे वे आपस में बात कर रहे होते हैं। पहला गार्ड, “जानते हो भाई, मैं 20 वर्षों से यहाँ हूँ। मैंने शुरू से केक पार्टी को देखा है। पहले लोग केक काटते थे, तो सजावट इतनी नहीं होती थी, सब दूर-दूर रहते थे, तालियाँ भी कम बजती थी। महिलाएं दूर खड़ी रहती थीं। माँ और दादी की उम्र की महिलाएं घूँघट के साथ बालकनी से पार्टी देखती थीं। धीरे-धीरे यह केक कल्चर हमारे भारत के कल्चर को बर्बाद कर दिया। अब देख लो केक काटा जाता है तो क्या क्या होता है। भारत की सभ्यता कहाँ से कहाँ जा रही है। वह देखो रोशनी जी कैसे केक लगा रहीं हैं? ये लोग हाई-प्रोफाइल हैं। चलो भाई हमलोग भी खाना खाते हैं।”

पार्टी में आए सभी लोग अब सुदामा को गिफ्ट दे रहे होते हैं। अरोड़ा जी सभी के गिफ्ट का आकलन कर रहे होते हैं और उसकी कीमत सुगंधा का पति माइक पर उद्घोषित कर रहा था। डॉक्टर साहब का गिफ्ट की कीमत 02 लाख बताया गया। सब लोग तालियाँ बजाने लगे। सुदामा भी खुश था। जीतने भी सोसाइटी के लोग गिफ्ट दिये थे उसमें डॉक्टर साहब का दिया हुआ पर्फ्यूम सबसे कीमती निकला। डॉक्टर साहब भी अत्यंत खुश हो रहे थे और हाई-प्रोफाइल का सीना ताने गौरवान्वित महसूस कर रहे थे।

अब घर वालों के गिफ्ट देने की बारी आई। सुगंधा बहुत खुशी से अपने पिता को गिफ्ट देती है। गिफ्ट अरोड़ा जी के पास पहुंचता है। वह गिफ्ट खोलते हैं उसमें एक नायाब हीरे वाली अंगूठी थी। अरोड़ा जी ने सुगंधा के पति से माइक ले लिया और बोला, “मैंने आज तक ऐसी अंगूठी नहीं देखी है, इसकी मार्केट में कीमत 25 लाख है।” सब लोग तालियाँ बजाते हैं। सुदामा बहुत खुश होता है। अपनी बेटी का हाई-प्रोफाइल गिफ्ट से उसका सर ऊंचा हो जाता है। अब श्रेया की बारी थी। उसने सुदामा को गिफ्ट दिया। अरोड़ा जी गिफ्ट को बॉक्स से निकालते हैं। उनके चेहरे पर आश्चर्य का भाव था। श्रेया एक सोने का हार दी थी जो काफी बजनदार था। अरोड़ा जी कहते हैं, “भाइयों, मैंने ऐसा हार कभी नहीं देखा इसकी मार्केट वेल्यू 40 लाख है।” सभी लोग तालियाँ बजाते हैं। सुदामा थोड़ा भी देर नहीं किया और वो हार पहन लेता है। सुनैना सबसे अंतिम में पहुंची। उसे देखकर सभी बातें करने लगते हैं।

श्रेया और सुगंधा उसे स्टेज के पास जाने से रोकती हैं। सुगंधा बोलती है, “आ गई बेज्जती कराने, क्या उठा लाई हो। इस बार पापा को गुस्सा आया न तो तुझे गोली मार देंगे। पता नहीं इस गंदे से प्लास्टिक में कौन कचड़ा लाई है। अगर बेज्जती हुई न तो तुझे इसी जगह अपनी जूती पर तेरी नाक रगड़वाएंगे। बेहया औरत, अच्छा हुआ पति छोड़ दिया। आज तो ये गई।” सुनैना अपना गिफ्ट पिता को देती है। उसके पिता मुंह घूमा लेते हैं। फिर आखिरकार अरोड़ा जी गिफ्ट लेते हैं। जैसे ही गिफ्ट को खोला जाता है। अरोड़ा जी अपने सीट से उठ जाते हैं। वे अपना सर पकड़ लेते हैं। उनकी बोलती बंद हो जाती है। इधर भीड़ में बैठे लोग भी कानाफूसी करने लगते हैं। अरोड़ा जी कहते हैं “विश्वास नहीं हो रहा है, मैंने क्या देखा। मैं कल्पना भी नहीं कर सकता कि यह घड़ी मेरे हाथों में आई है। मैं इसे अपनी हाथों से छू रहा हूँ। भाइयों यह ओक्टो फिनिसीमो अल्ट्रा एस.ओ.एस.सी की घड़ी है। इसकी कीमत है 5 करोड़ रुपये।” इतना सुनते ही सुदामा बेहोश हो जाता है। उसके बगल में खड़े लोग उसे संभालते हैं और पानी देते हैं। श्रेया और सुगंधा की आँखें नीची हो जाती हैं। अरोड़ा जी कहते हैं, “उठिए सुदामा जी आइए अपनी बेटी के हाथों से यह घड़ी पहनिए।” जैसे ही सुदामा स्टेज पर चढ़ता है और सुनैना के हाथों से घड़ी पहन रहा होता है तभी आकाश वहाँ पहुंचता है। सभी लोग आकाश को देखने लगते हैं। किसी सूत्रों से खबर पाते ही बहुत सारे मीडिया वाले पार्टी में पहुँच जाते हैं और आकाश की तस्वीरें तथा संवाद के लिए शोर मचाने लगते हैं। इधर सुनैना अपने पिता को घड़ी बांधती है और कहती है “पापा ये है आकाश ग्रुप ऑफ कंपनी का मालिक आपका नाती, आकाश है।”

कहानी आगे कैसे खत्म हुई होगी, यह आपके विवेक पर छोड़ा जाता है।



सोनी कुमारी,

पति- श्री सन्नी कुमार,
कनिष्ठ अनुवादक

सेवानिवृत्ति के बाद: जीवन की नई शुरुआत का नया अध्याय

सेवानिवृत्ति शब्द से तो सभी परिचित हैं। यह शब्द मस्तिष्क में एक नकारात्मक भाव, असमर्थता और अक्षम होने की छवि बना देता है — जो किसी भी व्यक्ति को भीतर तक झकझोर देता है। दशकों तक निरंतर कार्य करते हुए जो पहचान, उत्तरदायित्व और दिनचर्या बनी रहती है, वह एकाएक रुक जाती है। तब मन एक प्रकार की निराशा और हताशा का अनुभव करता है। भविष्य के जीवन की कल्पना करते ही मन में अनेक प्रकार की आशंकाएँ जन्म लेती हैं — और यह स्वाभाविक भी है।

मेरे लिए यह अनुभव अत्यंत निजी, भावनात्मक और गहराई से बदलने वाला रहा है।

मेरी यात्रा, एक साधारण महिला से दो बेटियों की एकल अभिभावक बनने और एक शिक्षिका से एक समर्पित सरकारी कर्मी बनने तक की रही है।

जब मेरे जीवनसाथी का अचानक निधन हुआ, तब लगता था मानो जीवन थम-सा गया हो। उस समय मेरी दोनों बेटियाँ छोटी थीं और उनकी आँखों में भविष्य के अनेक स्वप्न तैर रहे थे। उस मोड़ पर मैंने ठान लिया कि अब मुझे केवल माँ नहीं, पिता की भूमिका भी निभानी होगी।

मैं शिक्षिका के रूप में पहले से कार्यरत थी, परंतु उस अनुभव ने मुझे प्रेरित किया कि मैं एक स्थिर और सुरक्षित सेवा क्षेत्र में प्रवेश करूँ — जिससे अपने परिवार को सामाजिक और आर्थिक सुरक्षा दे सकूँ।

इस प्रकार मैंने महालेखानियंत्रक कार्यालय में सहायक पर्यवेक्षक के रूप में कार्यभार सँभाला। प्रारंभिक समय में सब कुछ नया और अनजान था — कार्यशैली, वातावरण, सहकर्मी — पर मन में एक दृढ़ निश्चय था आत्मनिर्भर बनने का और अपनी बेटियों के लिए प्रेरणा बनने का।

धीरे-धीरे कार्यालय के सहयोगी, विशेषकर महिला साथियों का स्नेह और मार्गदर्शन मिला, जिससे यह स्थान मुझे घर जैसा लगने लगा। यही कार्यस्थल न केवल मेरी रोजमर्रा का पहचान बना, बल्कि मेरा आत्मबल, सामाजिक जीवन और आत्मविश्वास भी यहीं विकसित हुआ। जब वर्षों की सेवा के बाद सेवानिवृत्ति का क्षण आया, तो यद्यपि मन तैयार था, फिर भी भीतर एक खालीपन-सा अनुभव हुआ। प्रत्येक दिन की चहल-पहल, समय पर कार्यालय जाना, कार्य की जिम्मेदारियाँ — यह सब अचानक समाप्त हो गया। मैं अपनी बेटियों के पास एक नये नगर में आ तो गई, लेकिन मन में यह प्रश्न लगातार गूँजता रहा — अब मेरा क्या

योगदान रहेगा? मेरी भूमिका क्या होगी? उसी समय मेरी गोद में आई एक नन्ही-सी जान — मेरी नातिन 'आध्या'। उसकी मुस्कान, उसकी भोली किलकारियाँ और नन्हें हाथों का स्पर्श — जैसे जीवन में फिर से रंग भरने लगे। उसके साथ बिताया हर पल मुझे फिर से जीवंत कर गया — मैं उसके साथ खिलखिलाकर हँसती, उसके पीछे-पीछे चलती, उसके नये अनुभवों में स्वयं को खोजती। कहते हैं, "बच्चे हमें दोबारा बचपन जीने का अवसर देते हैं।" सच कहूँ, तो अब मैं उस जीवन को जी रही हूँ जहाँ कर्तव्य है पर दबाव नहीं, जिम्मेदारी है पर थकान नहीं।

सेवानिवृत्ति के इस नए चरण ने मुझे मेरी बेटियों और दामादों से एक नए रूप में जोड़ा। बड़ी बेटी के साथ अब हम पारंपरिक व्यंजन मिलकर बनाते हैं, मसालों की खुशबू के साथ माँ-बेटी की बातें भी पकती हैं — जो अब सहेलियों जैसी लगती हैं। छोटी बेटी के साथ सब्जी मंडी की सैर होती है — हरी साग-सब्जियों की पहचान, भाव-ताव, और मिलकर अचार, पापड़ और चटनियाँ बनाना अब हमारे खास पल हैं। वह घर जो पहले सप्ताहांत पर ही चहकता था, अब हर दिन किसी उत्सव सा लगने लगा है। इन सबके बीच, दामादों के साथ भी नए रिश्तों की गहराई महसूस हुई है। कभी बड़े दामाद के साथ सुबह मंदिर जाना और आध्यात्मिक विषयों पर चर्चा, तो कभी छोटे दामाद से निवेश पर सलाह लेना — और कभी दोनों दामादों के साथ बैठकर 'पंचायत' धारावाहिक की



गंभीरता और हास्य पर चाय के प्याले संग विचार करना। ये क्षण अब मेरी दिनचर्या के प्रिय और आत्मीय अंग बन चुके हैं। **अब समय है उन छूटे हुए शौकों को फिर से जीने का।** बच्चों के लिए छोटे वस्त्र बनाना, हाथों से ममता बुनना, बालकनी में गुलाब, तुलसी, धनिया, पुदीना की महक, मिट्टी से रिश्ता जोड़ते हुए चाक पर अपने पहले कटोरे बनाना — ये सब मेरे भीतर एक नई चेतना जगा रहे हैं।

मैंने अन्य सेवानिवृत्त महिलाओं से मिलकर एक साप्ताहिक समूह भी बनाया है — जहाँ हम अपने अनुभव, यादें, व्यंजन और मुस्कानें बाँटते हैं।

एक छोटा-सा खेत भी तैयार हो रहा है, जहाँ मैं जैविक तरीकों से फल और सब्जियाँ उगाकर स्वाभाविक जीवनशैली अपनाने की कोशिश कर रही हूँ।

अभी हम आध्या के पहले जन्मदिन की तैयारियों में लगे हुए हैं — पकवान, सजावट, गीत और कपड़ों की

तैयारियाँ चल रही हैं, और मेरे लिए यह एक सजीव उत्सव बन चुका है। जब मैं यह सब लिख रही हूँ, तब मन बार-बार अपनी सांस्कृतिक जड़ों की ओर लौटता है।

मैंने छठ पूजा की है। उस पर्व में उगते सूर्य के साथ-साथ अस्ताचलगामी सूर्य को भी अर्घ्य दिया जाता है, क्योंकि हम जानते हैं — **“डूबता सूर्य ही नये सवेरे की प्रस्तावना है।”** यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि ढलता हुआ जीवन भी संध्या के सूरज की भाँति आत्मा को शांति, जीवन को नया प्रवाह और नई ऊर्जा देने की क्षमता रखता है।

यह मेरी सेवानिवृत्ति नहीं — बल्कि उसके बाद के जीवन की एक नई शुरुआत है — एक नये अध्याय का प्रारंभ है।



प्रतिमा कुमारी,
सेवानिवृत्त सहायक पर्यवेक्षक

कर्मफल

मनुष्य के जीवन की दिशा उसका कर्म ही निर्धारित करता है। यदि हम सत्कर्म करते हैं तो यह निश्चित है कि उसके फलस्वरूप हमें सुखी खुशहाल जीवनयापन का अवसर प्राप्त होता है अगर बुरा कर्म करते हैं तो उसके फलस्वरूप जीवन में बहुत सी यातनाएँ झेलनी पड़ती है। कर्मफल हमारे परछाई के रूप में सदा हमारे साथ चलता रहता है तथा कर्मफल का भोग अवश्यम्भावी है। हमारा सर्वोच्च धार्मिक ग्रंथ गीता भी मुख्यतः कर्मयोग पर केंद्रीत है। कर्मफल के बारे में कहा गया है कि जैसे हजारों गायों के बीच में एक बछड़ा अपनी माँ को खोज लेता है, वैसे ही लाखों के भीड़ में भी हमारा कर्मफल हमें खोज लेता है और उसका परिणाम हमें प्राप्त होता ही है।

कोई लाख करे चतुराई ।
कर्म का लेख मिटे ना रे भाई ।।
एक छोटी सी कहानी है कि एक बार किसी राज्य



के राजा को यह आभास हुआ कि उनके राज्य में बहुत ज्यादा भ्रष्टाचार बढ़ गया है तथा अधिकांश मंत्री भ्रष्ट हो गये हैं, जिसके परिणामस्वरूप पूरे राज्य में अराजकता फैल गई है। जनता भी भ्रष्ट आचरण करने लगी है। ये सब देख कर राजा बहुत चिंतित हुए तथा तीन मंत्रियों की परीक्षा लेने के लिए उन्हें अपने दरबार में बुलाया तथा सभी को एक पात्र देते हुए ये निर्देश दिया कि राज्य की राजधानी से दस मील दक्षिण में एक बागीचा है, वहाँ से अच्छे अच्छे फल तोड़कर इस पात्र को भर कर शाम तक लाना है। राजा का निर्देश प्राप्त होते ही सभी मंत्री दक्षिण दिशा की ओर प्रस्थान कर गये। पहला मंत्री ईमानदार प्रवृत्ति का था। अतः उसने राजा के निर्देशानुसार अच्छे अच्छे फलों से अपने पात्र को भरा। दूसरा मंत्री थोड़ा भ्रष्ट था। अतः उसने थोड़ा अच्छा तथा थोड़ा सड़े गले फलों से पात्र को भर लिया। तीसरा मंत्री बिल्कुल भ्रष्ट था उसने सोचा कि राजा तो पात्र को देखने से रहे वो तो सिर्फ देखेंगे कि पात्र भरा हुआ है। अतः उसने ईंट पत्थरों एवं घास फूस से पात्र को भर लिया। तीनों शाम में अपने अपने पात्र को लेकर राजा

के समक्ष उपस्थित हुए। राजा ने किसी के पात्र को नहीं देखा केवल अपने सिपाहियों को आदेश दिया कि तीनों मंत्रियों को एक महीने के लिए कारागार में डाल दो तथा किसी को भोजन नहीं देना है। ये लोग जो फल तोड़ कर लाए हैं, उसी से उन्हें एक महीने गुजारा करना है।

राजा का आदेश सुनकर पहला मंत्री तो खुश हुआ कि उसने अच्छे-अच्छे फल तोड़कर लाया है, अतः मुझे कोई दिक्कत नहीं होगी। दूसरा मंत्री थोड़ा दुखी हुआ, क्योंकि उसके कुछ फल अच्छे थे तथा कुछ फल खराब थे। लेकिन तीसरा मंत्री राजा का आदेश सुनकर रोने लगा, क्योंकि उसके पात्र में केवल ईंट पत्थर और घास फूस थे। वह राजा के सामने गिड़गिड़ाने लगा और माफी माँगने लगा, परन्तु राजा ने उसे माफी नहीं दी और जेल में बंद करवा दिया।

उक्त कहानी का तात्पर्य यही है कि ईश्वर ने हमें भी मानव शरीर देकर अच्छे कर्म करने हेतु मृत्युलोक में भेजा है, लेकिन हमलोग यहाँ काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार के वशीभूत होकर बुरे कर्मों की ओर प्रवृत्त हो जाते हैं। जैसे कर्मों से हम अपने पात्रों को भरते हैं, हमें अपने उन्हीं संचित कर्मों के अनुरूप फल मिलते हैं, वहाँ कोई माफी नहीं मिलती है। इसलिए कहा गया है, कर्म से डरिये, ईश्वर से नहीं, ईश्वर माफ कर देता है, कर्म नहीं।

निष्कर्ष यही है कि अच्छा या बुरा ये सब हमारे हाथ में है। हमें क्या चाहिए, यह हमें स्वयं सुनिश्चित करना है। जैसे बीज हम बोएंगे, वैसे फल हमें प्राप्त होंगे यह अटल सत्य है। कबीर दास जी की इस दोहे से मैं अपनी लेखनी को विराम दूँगा कि—

करता था सो क्यों किया
अब कर क्यों पछिताय ।
बोया पेड़ बबूल का
आम कहाँ से लाय ।



चन्द्र किशोर तिवारी,
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

वो पल...

सरस, सुगंधित, सुध से सुशोभित,
बंद मुट्ठी में वो वक्त सुरभित,
रु-ए-रौशन बिछुड़ा सा वो पल,
ढरकता, ढूँढ़ता, ढंरोरची सा वो पल।

जिद, जुनूनियत और जुदाई का सफरनामा,
गिरते, गली-गुजरते तबीयत से करते हंगामा,
आफ़तान-ए-मौसिकी गुंजित सा वो पल,
धमकता, धकेलता, धड़कता सा वो पल।

करीब दर करीब महसूस करने को निकलते तड़के,
ओस रंजित दुर्वा शीतल, न जाने कितने लुढ़के,
मेहनत-ए-बे-दाम, माथे पसीना, जज्बाती सा वो पल,
चहकता, चमकता, चंचला सा वो पल।

सहसा, संवाद, सहन का मंजर,
मौका तलाशते, आशियाँ बनाते पर चुभते खंजर,
मिज़ाज-ए-आगही, मह-ए-ज़बीन सा वो पल,
मसलता, मचलता, मलंग सा वो पल।

ताड़ती, तरसती और तकरीर की लत,
ललिताई, लुभाती और लहराती वो रूहानियत,
बाज़ीचा-ए-अतफ़ाल, शब-ओ-रोज़ सा वो पल,
फुसलाता, फिसलता, फव्वारे सा वो पल।

शहर दर शहर टोहते गोधूलि होने तक,
पीड़ा संचरित धूमिल काया, संजोय ख्वाब तड़के तक,
ना-काबिल-ए-फ़रामोश फड़कता सा वो पल,
अबोध, अटल, अतृप्त सा वो पल।

सन्नी कुमार,
कनिष्ठ अनुवादक





भोजन प्रेमी मित्र मेरा

मेरा एक मित्र है 'राजेश', नाम के अनुसार ही राजसी गुण से भरपूर है। राजसी मतलब भोजन के मामले से है। वे सभी से प्रेमपूर्ण व्यवहार करते हैं, बदले में प्रेम और आदर की इच्छा भी रखते हैं। भोले तो इतने हैं कि मेमने को भी उन्नीस साबित कर दें, कमी सिर्फ यही है कि कहीं भोज-भात या निमंत्रण हो तो अवश्य जाते हैं, फिर न्योते की भी परवाह नहीं करते। उनका प्रेमभाव स्वभाव में तो है ही साथ-साथ पूड़ी-पकवानों से भी है। एक बार मुझे दूर के रिश्तेदार (मीत बाबू) के यहाँ से जन्म-दिन की पार्टी का न्योता मिला। मैं वहाँ पहुँचा तो राजेश बाबू पहले से ही पहुँचे हुए थे। मैं चौंका क्योंकि राजेश बाबू का मीत बाबू से बहुत दूर का रिश्ता था और राजेश बाबू से उनके संबंध भी बहुत मधुर न थे। खैर मीत बाबू के आने से पहले नाश्ते के बाद उन्होंने भरपेट पुलाव, दाल मखनी, पनीर बटर मसाला, मिठाई आदि के साथ अनेक व्यंजनों को उदरस्थ किया। अब उनकी कोशिश यहाँ से सिधारने की थी कि तभी जाने कहाँ से बेमौसम की ओलावृष्टि की तरह मीत बाबू पधार गए। राजेश बाबू की ओर दृष्टिपात होते ही निकट आकर बोले - "आपको निमंत्रण-पत्र मिला था क्या? जहाँ तक मुझे स्मरण है मैंने तो आपको बुलावा नहीं भेजा था।"

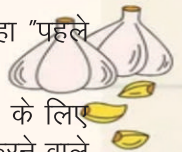


इतनी बात सुनने के बाद तो कोई भी भड़क सकता है सो राजेश बाबू भी थोड़ा-सा गरम हो गए और मीत बाबू को घूरते हुए बोले - "आपने मुझे नहीं बुलाया तो इसमें आपकी गलती है।"

मीत बाबू हक्के बक्के से मुँह ताकते ही रह गए और इधर राजेश बाबू लंबे-लंबे डग भरकर तेजी से खिसक लिए। इस वाक्य के बाद मुझे वे बड़े ही 'इंटरेस्टिंग पर्सनालिटी' प्रतीत हुए। उनसे नजदीकियाँ बढ़ाने की इच्छा मन में कुलांचे मारने लगी। अब वे जब भी मिलते, मैं दिल खोलकर उनसे बातें करने और नजदीकियाँ बढ़ाने की कोशिश करता। उनका पकवान प्रेम मुझसे अब छिपा न था। यदा-कदा उन्हें समोसे, रसगुल्ले, मिठाईयाँ खिलाने होटलों में ले जाता और मेरी और उनके मन की साध एक साथ पूरी होती। वे मिठाईयों के रस में डूबते और मैं उनकी रसभरी बातों में। बातों-बातों में ही पता चला कि भाँति-भाँति के व्यंजनों से उनका प्रेम यौवन या बुढ़ापा का नहीं बल्कि बाल्यकाल से ही उफान पर है और इस प्रेम की परिणिति उनके दीर्घ उदर के रूप में प्रत्यक्ष थी। बचपन के भोजन प्रेम का एक किस्सा मुझसे साझा करते हुए उन्होंने बताया कि गाँव में एक मुंडन के भोज में जब पहली बार बरुआ (जिस बालक का मुंडन था) के पिता ने 'दरभंगा टॉवर' के 'राजस्थान होटल' से कुछ हजार 'स्पंजी रसगुल्ला' मंगाया था। परोसने वाले को हिदायत थी कि आग्रह कर-कर के खिलाना है यानी कोई कंजूसी नहीं करनी है। विकी (राजेश बाबू का बचपन का नाम) सुबह से ही शाम के उस भोज के चिंतन में

मस्त था। अपने तुरिया (समान उम्र के) बच्चों के साथ पकवानों और इस रसगुल्ले के स्वाद लेने की कल्पना की रोमांचित शब्दों में चर्चा कर रहा था। यदि पैमाना होता तो ये भी पता चल जाता कि वे सब विकी की बातें सुनकर कितना लीटर लार टपका चुके हैं पर अफसोस कि पैमाना न था। शाम के भोज के ही कारण आज विकी ने दोपहर का खाना नहीं खाया था। भोजन की कल्पना से पेट भर लेने की कला हर किसी में नहीं होती, राजेश बाबू खास थे आम नहीं। भोज में विकी ने छककर खाया। खाते समय पिताजी भी साथ थे। थोड़ी-थोड़ी देर पर पानी पीते देखकर पिताजी ने कोहनी से उन्हें धक्का दिया, इसपर विकी बोला "पिताजी! मैं तह लगा रहा हूँ ताकि ज्यादा खा पाऊँ।"

यह सुनकर पिताजी भड़क गए, चॉटा रसीद कर कहा "पहले नहीं बता सकते थे? मैं भी तह लगाता।"



खैर रसगुल्ला बांटना प्रारंभ हुआ और विकी के लिए बहुप्रतीक्षित क्षण आ ही गया लेकिन यह क्या-भोज करने वाले के निर्देश के विपरीत परोसने वाले एक बार में दो-चार से अधिक स्पंज नहीं रख रहे थे जबकि उस उम्र में भी विकी खाना खाने के बाद भी तीस-चालीस स्पंज खाने का माद्दा रखता था। बाद में जब घरवालों ने परोसने वालों को डाँटा तब अंत में मुँह माँगा रसगुल्ला परोसा जाने लगा। तभी भोज खत्म होने की निशानी के रूप में कुछ बच्चों को उठते हुए देखकर 'जो हाथ सो साथ' की तर्ज पर दो-तीन रसगुल्ले विकी ने एक ही बार में मुँह में रखा और उससे भी जी न भरा तो कुछ रसगुल्ले गिलास में और उससे भी अधिक पैंट की जेब में भरकर विकी घर गया। ये दीगर है कि पैंट खराब करने के कारण विकी ने भोज के व्यंजनों के हजम होने से पहले भरपेट मार भी खा लिया क्योंकि घर में भी परोसने वाले ढेर सारा स्पंज विकी के पहुँचने से पहले ही पहुँचा चुके थे। इस दशा में पिटाई तो स्वाभाविक ही थी।

दूसरी घटना राजेश बाबू के दादाजी की थी। उन दिनों वे जवान थे। एक बार वे बारात गए थे। उन दिनों भोजन के बाद रसगुल्ले पड़ोसे जाते थे और आग्रह कर कर के खिलाया जाता था। जब रसगुल्लों की बारी आई तो उन लोगों ने सभी को आग्रह करके खूब खिलाया। दादाजी रसगुल्लों पर विशेष कृपा कर रहे थे। सभी लोगों के हाथ रुक गए लेकिन उनका हाथ चलता ही रह। बारात में से किसी ने कहा कि 'ये तो पूरा स्टॉक खत्म करने की काबिलियत रखते हैं, ये रसगुल्ला मास्टर हैं।' उन लोगों ने इसे चोलेंज की तरह लिया। आखिर उनके हाथ भी रुकने लगे। तकरीबन 300 रसगुल्ले खाने के बाद उन्होंने हाथ साफ रोक दिया। अब लड़की वालों की तरफ से किसी ने कहा 'महानुभाव! अब जितने रसगुल्ले आप खाएँगे उतने 100 के नोट पाएँगे।' लोभ में आकर उन्होंने 10 रसगुल्ले और उदरस्थ किये।



धीरे-धीरे इसी तरह भाव बढ़ते बढ़ते 1000 पर आ पहुंचा। अब एक खाने के बाद उन्होंने हाथ खड़े कर दिए। बहुत लोग जमा हो गए थे। उनके न कहने के बाद भाव जब 5000 पर आ गया लेकिन रसगुल्ला उठाते उठाते दादाजी पत्तल पर ही लुढ़क गए। चिकित्सक को बुलाया गया। उन्हें पानी चढ़ाया जाने लगा तो उन्हें होश आ गया। चिकित्सक ने कहा 'ये लीजिए एक टेबलेट खा लीजिए, इससे आपका पेट दर्द भी ठीक होगा और खाना पच भी जाएगा। इस पर उन्होंने कहा "मेरे पेट में अगर इतनी जगह होती तो मैं एक और रसगुल्ला न खा लेता।"

ये घटनाएँ सुनकर मुझे भी समझ में आ गया कि राजेश बाबू का पकवान प्रेम कहीं से सीखा हुआ नहीं था अपितु खानदानी नैसर्गिक गुण था। ये सत्य प्रसंग सुनाकर मेरे साथ वे भी ठहाका लगाकर भरपूर हँसे।

उनके निमंत्रण प्रेम को देखकर मेरी इच्छा हो पड़ी कि उन्हें अपने यहाँ भी निमंत्रण देकर खिलाया जाए। अगले ही महीने हमारी शादी की सालगिरह थी। पार्टी तो देनी ही थी सो ठोंक दिया 'निमंत्रण'।

उनके आँखों में आई चमक देखकर मेरे दिल को बहुत तसल्ली मिली। उनके निमंत्रण-प्रेम से उनकी अर्द्धांगिनी बहुत चिढ़ती थी। सो उन्होंने उस दिन पत्नी को न बताने की ठानी। नियत दिन पर राजेश बाबू पहुँचे। मैंने पत्नी को राजेश बाबू के बारे में पहले ही बता चुका था कि उनका खास ख्याल रखना है जिसका उसने पालन भी किया। हम दोनों ने उनका ऐसा स्वागत किया मानो वे चीफ गेस्ट हों। उन्हें हम आग्रह पूर्वक सभी पकवान खिला रहे थे ताकि कुछ छूट न जाए। वे गदगद थे किंतु तनिक चिंतित भी क्योंकि प्रीतिभोज का समय सात बजे से ही शुरू था और अब रात के ग्यारह बजने ही वाले थे। घर में पत्नी को बताया नहीं था। उनका प्लान था कि ऑफिस से निकलकर झटपट खा कर घर की ओर प्रस्थान करेंगे और फिर पत्नी को बोल देंगे कि "आज तबीयत कुछ ठीक नहीं है तुम खाकर सो जाओ, भोजन की इच्छा नहीं है" परंतु सारा 'प्लान' हमेशा सफल हो जाए क्या ये संभव है। दूसरा कि कुछ हमारा आग्रह और कुछ उनके पकवान प्रेम के चलते उन्हें देर हो गई और वो प्लान 'एक्सीक्यूट' कर ही न पाए। हमारी आवभगत देखकर उनका दिल मोम सा पिछल गया था। आग्रह पर भोजन भी कुछ अधिक ही हो गया था सो मैंने ड्राईवर को इशारा देकर उन्हें ले जाने को कहा। ड्राईवर के कंधे पर लदकर किसी तरह कार में बैठकर वे अपने घर की ओर प्रस्थान कर गए। उनके घर में एक अनोखी और अविस्मरणीय घटना उनके स्वागत के लिए तैयार थी। घर के पास पड़ोसियों की भीड़ लगी थी साथ ही एकाध प्रेस वाले भी पहुँचे हुए थे। उनका मन आशंकाओं से भर उठा पर पास जाने पर पड़ोसियों की सुखद मुस्कान देखकर कुछ आश्चर्य से हुए पत्नी प्रशंसक पड़ोसियों और प्रेस वाले से घिरी थी और दूसरी तरफ एक चोर को भीड़ के लात-जूते से हो रही पिटाई से बचाने की कशिश कुछ पुलिसवाले कर रहे थे। पूरा माजरा समझ में लब आया जब उन्होंने प्रेस वाले के सामने पत्नी (उमा) का

इंटरव्यू साक्षात देखा। प्रेस वाले का सवाल — "आपने इतनी हिम्मत दिखाकर इस कुख्यात चोर को कैसे पकड़ा?" उमा — "एक घंटे से लाईट कटी हुई थी। मैं किचन में मोमबत्ती जलाकर खाना बना रही थी। बॉकी सभी कमरों में अँधेरा ही था। ये (राजेश बाबू) ऑफिस ये कहकर निकले थे कि आज थोड़ी देर होगी पर रात के दस बज जाने पर भी उनके न आने और बार बार कॉल काटने के चलते मेरा पारा इतना चढ़ गया कि अंधेरे कमरे में थोड़ी-सी आहट होने पर जैसे ही मुझे लगा कि ये आ गए कि मैं बेलन लेकर आहट की दिशा में गई और इन्हें समझकर चोर को ताबड़तोड़ जमकर कूट दिया। चिल्लाने की आवाज पर जबतक मैंने गौर किया कि ये तो कोई और है तबतक उस आदमी के नाक-कान-आँख सभी टूट-फूट चुके थे। अचानक हुए हमले से वो शातिर चोर भी घबराकर चिल्लाए ही जा रहा था चिल्लाने की आवाज सुनकर कई पड़ोसी पहुँच गए और उसे कब्जे में लेकर कुटाई करने लगे। उन्हीं में से किसी ने आपलोगों (प्रेस वालों) और पुलिस को फोन किया, शेष तो प्रत्यक्ष है।"

प्रेस वालों ने उनकी काफी प्रशंसा की जिसे सुनकर राजेश बाबू भी फूले न समा रहे थे। गर्वमिश्रित खुशी से भर उठे और सोचने लगे 'पेट में पड़े हुए पकवानों से कम मनोहर यह घटना नहीं है।' तभी उनके दिमाग में कौंधा — "अगर चोर की जगह मैं होता तो क्या ही हो जाता। इस घटना से ये तो अच्छा हुआ कि चोर पकड़ा गया लेकिन साथ ही पड़ोसियों और पूरे शहर के सामने ये साफ हो गया कि पत्नी के सामने मैं भीगी बिल्ली ही हूँ और मेरा भोजन प्रेम भी जगजाहिर हो गया। खैर जो भी हो मेरे भोजन प्रेम से कम-से-कम एक बात तो अच्छी हुई कि कुख्यात चोर पकड़ा गया सो पेट के साथ-साथ मन को भी तो संतोष मिला।" अब राजेश बाबू को भोजन प्रेमी होने का प्रमाणपत्र मिल गया था। वे अपने 'भोजन प्रेम' पर गर्व कर रहे थे और सोच रहे थे कि अगला निमंत्रण पत्र कब मिलेगा और कब छककर अच्छा भोजन खाने को मिलेगा।



प्रशान्त प्रसाद,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी,
पूर्व मध्य रेल, हाजीपुर

मेरी कलम

विचारों के मेले को निहारती मेरी आँखें।
न दुख का एहसास,
न सुख की अनुभूति,
जिम्मेदारियों के बोझ तले दबा शरीर
जीवन अश्वत्थामा जैसे जीवित – मृत्यु सा अभिशाप
पर आत्मा को जीने की लालसा ढूँढ रही आधार
कल्पनाओं के उड़ान में कलम की दस्तक
भावनाओं को साझा करने का माध्यम बनती मेरी कलम।
कलम को स्याही की चाहत मुझे शब्दों की जरूरत
आंसुओं के स्याह में गोते खाती कलम कुछ बूँदें भरकर लाती
सफेद मन की दीवार पर आंसुओं के मोती को शब्दों में पिरोती मेरी कलम
मानवीय भावनाओं को कागज पर बाँचती मेरी कलम।
कुछ लिखने को प्रेरित करती मेरी कलम
साथी छूटा
परिवार छूटा
सभी छूटे बारी-बारी
पर कलम मेरा अभिमान, जो कभी न छोड़े साथ।



सुनीता वहुमायी,
लेखिका

मौत!

मौत! तेरी क्या तारीफ करूँ,
तू तो बड़ी बेरहम साया है।
तूने न जाने कितने,
रिश्ते — नाते खाया है॥

माँ जिसने जन्म दिया,
पिता जिसने दुनिया दिखाया।
भाई जिसने स्नेह दिया,
तूने सबको काल के गाल में समाया है॥

मौत! तेरी क्या तारीफ करूँ,
तू तो बड़ी बेरहम साया है।

किसी ने अपना पुत्र खोया,
तो किसी ने अपनी पुत्री।
तूने सबको रौंद दिया,
तेरा कौन अपना और पराया है॥

मौत! तेरी क्या तारीफ करूँ,
तू तो बड़ी बेरहम साया है।

एक पिता अपने परिवार के खातिर,
सारा जीवन कमाया है।
तूने उसको तिल — तिल मारा,
बस यही कराया — धराया है॥

मौत! तेरी क्या तारीफ करूँ,
तू तो बड़ी बेरहम साया है।



उदय भान विश्वकर्मा,
कनिष्ठ अनुवादक

ऑडिट दिवस 2024 के समापन समारोह कार्यक्रम की कुछ झलकियाँ



सेशेल्स की समुद्री-यात्रा

यात्राएं जीवन के अनुभवों के विस्तार के साथ मानव के बौद्धिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। स्वयं जीवन भी एक यात्रा है। प्राचीन समय से ही कवि और मनीषी यात्राओं को महत्व देते रहे हैं। पंचतंत्र में अभिव्यक्त है दृ पर्यटन पृथ्वीं सर्वा, गुणवैषणतत्परः। यात्राएं चाहे दर्शनीय स्थलों के भ्रमण, धार्मिक या शैक्षणिक उद्देश्यों से की जाए, निश्चित ही हमारे जीवन में महत्व रखती है। यात्राओं से हमें ऐतिहासिक व भौगोलिक ज्ञान प्राप्त तो होता ही है, साथ ही विभिन्न संस्कृतियों, मानव सभ्यताओं से परिचय होता है तथा लोगों के जीवन यापन संबंधी जानकारी मिलती है।

पोर्ट विक्टोरिया, जो सेशेल्स की राजधानी है तथा अन्य द्वीप की यात्रा हेतु निर्धारित तिथि एवं समय पर विशाखापट्टनम से “भारतीय नौसेना पोत दर्शक” प्रस्थान कर चुका था। इस समुद्री यात्रा का उद्देश्य दोनों देशों के बीच आपसी भाईचारा और मैत्रीपूर्ण संबंधों को और मजबूत बनाना था। गैंग-वे (धरती से जहाज पर चढ़ने वाली सीढ़ी) को क्रेन की सहायता से हटा दिया गया। हम सभी जहाज के रेलिंग के साथ खड़े होकर बाहर का नजारा देख रहे थे। धीरे-धीरे जहाज गति पकड़ने लगी। विशाखापट्टनम के डोलफिन नोज, पहाड़ियों के बगल से गुजरते हुए जहाज इस प्रकार से आगे बढ़ रहा था कि मानो कोई साँप तेज गति से लहरों को चीरते हुए आगे बढ़ता जा रहा है। आगे लैंप पोस्ट को पार कर हमारी जहाज बंगाल की खाड़ी में पहुँच चुकी थी। मछुआरों की कई नावें तथा मालवाहक पोतों को पार करते हुए हम तेजी से आगे बढ़े जा रहे थे। हमारा जहाज को हिन्द महासागर के तरफ जाना था, इसलिए वह दक्षिण दिशा के तरफ मुड़ चुकी थी। धीरे-धीरे समुद्र का किनारा, ऊँची-ऊँची इमारतें, मकान, हरी-भरी पहाड़ियाँ तथा कारखाने से उठता धुआँ अदृश्य होते चले गए। अब दूर-दूर तक चारों तरफ केवल पानी ही पानी था। शाम के लगभग छः बजे घोषणा हुई कि हमारा जहाज 24 नॉट के गति से चल रहा है। अभी हम श्रीलंका के समुद्री सीमा से हो कर गुजर रहे हैं। इस क्षेत्र में शार्क मछलियों का खतरा है। अतः चेतावनी की घोषणा की गई कि डेक पर न रहें। मुझे बाहर देखने की उत्सुकता हुई, क्योंकि मैं ज्यादा से ज्यादा रोमांचक घटनाओं का अनुभव करना चाह रहा था। डेक पर आद्र ठंडी हवा चल रही थी जो काफी सुखद महसूस हो रही थी। सूर्य भगवान अस्ताचल में समा रहे थे। आकाश में लालिमा छाई हुई थी तथा समुद्र का पूरा पानी लाल दिख रहा था। इस मनोरम दृश्य से नजर हटा पाना मुश्किल हो रहा था। धीरे-धीरे अंधेरा गहराने के साथ-साथ शार्क मछलियों का डर भी गहराने लगा। मैं भी

डेक से अंदर आ गया। रात में नींद नहीं आ रही थी। जहाज कुछ अजीब ढंग से हिल रहा था। वह कभी आगे-पीछे गोता लगा रहा था तो कभी अगल-बगल हिचकोला खा रहा था। सोते वक्त कहीं कोई गिर न पड़े इसलिए बिस्तर के किनारे रेलिंग जैसी पतली पाइप लगा हुआ था। मैं उसी पाइप को पकड़ कर के लेटा रहा। पड़े-पड़े न जाने कब नींद आ गई। सुबह में जगाने के लिए सिटी बजाई गई। दिनचर्या कर नाश्ता के लिए डाइनीङ्ग हॉल में जा ही रहा था कि घोषणा हुई कि डोलफिनों का झुंड जहाज के साथ-साथ चल रहा है। डेक पर आ कर इस सुंदर नजारा को देखा जा सकता है। मैं अपना नाश्ता छोड़ कर ऊपर डेक की तरफ भागा। वहाँ पहले से ही काफी लोग पहुँचे हुए थे। शांत समुद्र में सैकड़ों डोलफिन जहाज के साथ-साथ आगे बढ़ रहे थे। वें एक लय में कभी ऊपर आतीं तो कभी डुबकी लगाते हुए आगे बढ़ रही थीं। कभी-कभी ये उछलने लगती थी। बहुत ही खूबसूरत दृश्य था। कुछ लोगों द्वारा उनकी वीडियो रिकॉर्डिंग की जा रही थी। कुछ अन्य छोटी मछलियाँ तेजी से उड़ते हुए जहाज से 100-120 फीट की दूरी पर भाग रहे थे। इससे पहले उड़ने वाली मछलियाँ मैंने कभी नहीं देखी थी।

तीसरे दिन शाम से समुद्र में कुछ ऊँची दृ ऊँची लहरें उठने लगी। कुछ देर के बाद जहाज काफी जोर-जोर से हिलने लगा। यह लहरें धीरे-धीरे काफी विकराल रूप लेने लगी। शाम होते-होते हवाएँ 140 कि०मी० प्रति घंटा के रफ्तार से बहने लगी तथा जहाज लहरों पर 30-40 फीट ऊपर जा कर, नीचे धड़ाम से नीचे गिरने लगा। जहाज के गिरने पर कलेजा धक से करता था। डर लग रहा था कि जहाज कहीं नीचे से टूट न जाए। जहाज में जो सामान बंधा हुआ नहीं था, वह गिर कर इधर उधर सरकने लगा। हमारा जहाज पूरी तरह भयंकर तूफान में फँस चुका था। ऐसे में जहाज को आगे बढ़ाना मुश्किल हो रहा था। जहाज को लंगर पर खड़ा कर दिया गया। खड़े जहाज पर लहरों के थपेड़े बड़े जोर से टकरा रहा था। डर लग रहा था कि कहीं जहाज की दीवारें टूट न जाए। सुबह के नाश्ता से लेकर दोपहर के खाना, सारे उल्टी के रूप बाहर आ गए। पेट में कुछ भी नहीं बचा था। पेट के अंतड़ियों में भी सिकुड़न होने लगी। लग रहा था वह भी कहीं बाहर न आ जाए। ऐसे में खाली पेट रहना खतरनाक होता है। अतः पानी पीते रहने की सलाह दी जा रही थी। लेकिन पानी का एक घूँट भी पेट में नहीं रह पा रहा था। सलाह देने वाले भी उल्टी कर कर के निढाल हो चुके थे। मेरी हालत तो और भी ज्यादा बुरी थी। समुद्री जहाज की यात्रा का अनुभव मुझे

इससे पहले कभी न था। उस रात किसी ने कुछ भी नहीं खाया। सभी बेडबंदक या ठोस वस्तु को पकड़ कर लेटे हुए थे। किसी तरह रात बीती। सुबह समुद्र कुछ शांत हुआ। मगर यह क्या? दोपहर होते-होते फिर से ऊँची लहरें उठने लगी। एक-दो को तो खून की उल्टी आनी शुरू हो गई। उल्टी बंद करने की दवा पेट में जाते ही उल्टी के रूप में बाहर आ रही थी। महसूस होने लगा कि अब जान बचना मुश्किल है। कुछ लोग नींबू चूसने की सलाह देने लगे। नींबू चूसने से कुछ राहत महसूस हुई। पेट का ऐंठन भी कम हुआ, पर भूख मर चुकी थी। इस तरह तीन दिन, तीन रात बिना कुछ खाए, केवल नींबू चूसते हुए मैंने बिताई। पांचवें दिन समुद्र सुबह से शांत होने लगा। मगर पेट कमजोर हो चुका था। खाने के लिए उस दिन केवल खिचड़ी और अचार दिया गया। उस दिन भी जहाज लंगर पर ही रहा। अगले दिन लोगों के शरीर में कुछ ताकत आई, तो आगे बढ़ने का मन बनाया गया। कमान अधिकारी द्वारा उत्साह बढ़ाते हुए घोषणा की गई कि हम तूफान को पार कर चुके हैं। हौसला बनाए रखना है और आगे आने वाली हर चुनौतियों का डट कर मुकाबला करना है।

अगले दिन से हमारी यात्रा फिर से शुरू हो गई। उसके दूसरे दिन हमें भू-मध्यरेखा को पार करना था। समुद्री जहाजों को भू-मध्यरेखा को पार करने के उपलक्ष्य में हंसी मजाक से भरपूर एक समारोह का आयोजन करने की परंपरा पुराने समय से चली आ रही है, जिसे 'क्रॉसिंग द लाइन सेरेमनी' कहा जाता है। इसके लिए जहाज में तैयारी शुरू कर दी गई। भू-मध्यरेखा को पार करते समय वरुण देवता का दरबार लगाया जाता है, जिसमें दंडाधिकारी के द्वारा गुनाह को पढ़ा जाता है और उसकी सजा वरुण देवता द्वारा सुनाई जाती है। उनके आदेशों का पालन किया जाता है। इस समारोह के दिन सुबह हमलोग नाश्ता कर हेलीपैड पर एकत्रित हो गए। एक तरफ बीच में वरुण देवता एवं उनकी पत्नी का सिंहासन लगा हुआ था। हेलीपैड के बगल में अधिकारीगण दरबारी के रूप में बैठे थे। हमलोग दर्शक दीर्घा में पीछे बैठे हुए थे। छोटे पद वाले किसी दो कर्मी को वरुण देवता और उनकी पत्नी का पोशाक पहना कर एवं मेक-अप कर तैयार किया जाता है। वरुण देवता का सफेद दाढ़ी एवं सफेद लंबे बाल थे तथा हाथ में त्रिशूल था। उनके साथ पाँच छः सेवक रहते थे जो दिखने में यमदूत जैसे लगते थे। सेवकों के हाथों में गत्ता और पन्नी से बना भाला, तलवार, कैंची आदि थे। घोषणा हुआ— वरुण देवता पधार रहे हैं। पहले से खड़ा दंडाधिकारी ने जोर से बोला बैठे-बैठे सावधान! सभी सावधान मुद्रा में बैठ गए। वरुण देवता की जयकारा लगाते हुए वरुण देवता और उनकी पत्नी के साथ उनके सेवकों का दल आ गया। वरुण देवता और उनकी पत्नी के स्थान ग्रहण करने के बाद कमान अधिकारी ने अभिनंदन कर कार्यवाही आगे बढ़ाने के लिए प्रार्थना किया। सभी को आराम से बैठने के लिए कह

कर वरुण देवता ने अपराधियों को पेश करने के लिए आदेश दिया। अपराधियों के सूची में खाद्य आपूर्ति अधिकारी, चिकित्सक, यांत्रिक अभियंता, और नियमन अधिकारी थे। वरुण देवता ने दंडाधिकारी को खाद्य आपूर्ति अधिकारी का गुनाह पढ़ने के लिए कहा। दंडाधिकारी ने गुनाह सुनाया जहाज के कर्मियों को स्वादिष्ट खाना नहीं दिया जाता है और खाने के साथ आइसक्रीम नहीं मिलता है। वरुण देवता बोले कि यह तो बहुत बड़ी गुनाह है।

इससे तो सभी लोग कमजोर और बीमार हो जाएंगे। इसलिए इनको सेशेल्स पहुँच कर सभी को एक एक डब्बा आइसक्रीम दिलाना होगा। अभी इन्हे दंड के रूप में रक्त-शर्बत पीला कर पाँच कोड़े लगाए जाएँ। रक्त शर्बत के रूप में टमाटर की चटनी उन्हें पिलाया गया। कुछ बच्चे चटनी उनके शरीर पर उड़ेल दिया गया। कपड़े से बने कोड़े से पाँच कोड़े लगाए गए। अगला अपराधी चिकित्सक थे। इनका गुनाह था कि मेडिकल फिटनेस की जांच कड़ी तरीके से करते हैं। इससे कर्मियों को बहुत कष्ट होता है। वरुण देवता ने सजा सुनाया कि ये दस बार पहले उठक-बैठक करेंगे। उसके बाद बीस बार पुश-अप मारेंगे। तब इन्हें पता चलेगा फिटनेस बनाए रखने में कितना कष्ट होता है। इसके बाद इन्हें समुद्र के पानी में नहलाया जाए। आदेश के पालन में चिकित्सक का पसीना निकल गया। इसके बाद यांत्रिक अभियंता की बारी थी। इनका गुनाह पढ़ने के लिए कहा गया। गुनाह था कि ये हमेशा अपने मातहतों पर काम के लिए चिल्लाते रहते हैं। इससे कर्मी, मौज मस्ती भूल कर डिप्रेशन में चले गए हैं। वरुण देवता ने इसकी सजा सुनाई कि इन्हें साड़ी पहना कर, फरमाइशी गाने पर इनसे नृत्य कराया जाए। आदेश का पालन हुआ। गाने बजाए जाने लगे और अभियंता साहब नृत्य करने लगे। लेकिन वह नृत्य जैसा नहीं लग रहा था। लग रहा था कि वे या तो परेड कर रहे हैं या किसी को घुस्सा मार रहे हैं। सब लोग हंसने लगे। उनके विभाग वाले तीन चार व्यक्ति उनका सहयोग देते हुए नृत्य करने लगे। अभियंता साहब के द्वारा नृत्य ठीक से नहीं करने के कारण उन्हें पाँच कोड़े की अतिरिक्त सजा सुनाई गई। इसके बाद नियमन अधिकारी की बारी थी। उन्हें वरुण देवता के सामने खड़ा किया गया। इनका गुनाह था कि इनके अनुशासन के पालन करते करते लोगों में डर बैठ गया है। सपने में भी लोग इनसे दूर भागते हैं। कड़क पोशाक और जीरो कट बाल रखने के लिए ये हमेशा चिल्लाते रहते हैं। इनसे सभी परेशान हो गए हैं। वरुण देवता ने कहा— पहले तो इनका मुंडन किया जाए। दूत के हाथ में नकली कैंची थी। इससे मुंडन नहीं हो सकता था। अतः असली हजाम को बुलाया गया। नियमन अधिकारी जमीन पर बैठ गए। हजाम की हिम्मत नहीं हो रही थी कि उनका बाल काटे। बाल काटने के लिए हजाम पर सभी चिल्लाने लगे। हजाम दबाव में आकर एक चुटकी बाल काट दिया। नियमन अधिकारी सर उठा कर हजाम को देखा तो

वह सकपका गया और डर कर भाग गया। लोग जोर जोर से हंसने लगे। अंत में सभी ने एक साथ वरुण देवता का अभिवादन किया और वे प्रस्थान कर गए। तीन चार घंटे के कार्यक्रम से सभी लोग काफी हल्का महसूस करने लगे। बीते समय के सारे कष्ट भूल गए। लोगों में नई उमंग भर गई थी। दोपहर में बड़ा खाना यानी स्वादिष्ट खाना की व्यवस्था थी।

हमलोग अब अपने गंतव्य के नजदीक थे। हिन्द महासागर में माहे द्वीप पर पोर्ट विक्टोरिया है। दूसरे दिन हमारा जहाज पोर्ट विक्टोरिया में प्रवेश कर गया था। दोपहर के खाने के बाद हमलोगों को एक-एक आइसक्रीम का डब्बा मिल चुका था। दोपहर दो बजे से हमलोगों को घूमने के लिए वहाँ की सरकार के द्वारा दो शानदार एयर कंडीशंड बस की व्यवस्था कर दी गई थी। हमारे कमान अधिकारी वहाँ के एक द्वीप के सर्वेक्षण के संबंध में सूचना के लिए वहाँ के भारतीय दूतावास में उच्च अधिकारियों से मिलने चले गए। यहाँ बड़ी-बड़ी इमारतें तो नहीं थीं, परंतु जो भी था, सुंदर कलाकृति से युक्त था। सड़कें साफ-सुथरी एवं चौड़ी थीं। न कोई भीड़-भाड़, न कोई शोर-शराबा। यहाँ देखने लायक जगह क्लॉक टावर, तमिलियन मंदिर, बोटेनिकल बागीचा, राष्ट्रीय ऐतिहासिक अजायबघर, सेंट पाल चर्च, तथा समुद्री तट आदि थे। ईसाई धर्मावलम्बी की जनसंख्या अधिक थी। समुद्र तट पर सफेद रेत के बाद एकदम साफ समुद्री पानी और उसमें घूमती मछलियाँ और कोरल्स बड़ा लुभावना था। किनारे पर नारियलों के पेड़, लंबी छरहरी बलखाती पक्की सड़कें, उससे सटे हरे-भरे सुंदर पहाड़ियाँ किसी को भी मुग्ध कर देने वाली थी। पर्यटन, मत्स्य उद्योग एवं सेवा-सेक्टर यहाँ की प्रमुख आय का स्रोत थे। घूम-फिर कर हमें रात में नौ बजे तक अपने जहाज पर आ जाना था। इस प्रकार दो दिन हमने माहे द्वीप पर बिताए।

सेशेल्स का ही एक अन्य द्वीप, अजम्सन द्वीप है, जो एक कोरल द्वीप है। यह पोर्ट विक्टोरिया से 1135 कि०मी० दूरी पर था। वहाँ की सरकार, भारत सरकार के साथ मिलकर यहाँ नौसेना बेस बनाने की योजना बनाई थी। देश की सामरिक स्थिति मजबूत करने के लिए यह कार्य भारत के लिए काफी महत्वपूर्ण था। तीसरे दिन हम उस द्वीप पर समुद्री सर्वेक्षण के लिए निकल पड़े। अजम्सन द्वीप एक सुनसान द्वीप था। यहाँ पर सेशेल्स के दो अधिकारी परिवार सहित निगरानी के लिए रहते थे। इनलोगों का छोटा सा दुकान भी था, जिसमें बिस्किट, नमकीन, चिप्स, सिगरेट, नारियल आदि मिलते थे। इस द्वीप के कुछ भाग में ही रहने लायक जगह थीं तथा शेष भाग जंगल से भरा हुआ था। सेशेल्स भी ब्रिटिश-साम्राज्य का उपनिवेश रह चुका था। इस द्वीप का उपयोग उनके समय में, काला पानी की सजा की तरह, क्रांतिकारियों और खूंखार अपराधियों को सजा देने के लिए किया जाता था। इन्हें इस द्वीप पर ला कर छोड़ दिया जाता था। अभी भी वहाँ 30-35 क्षत्रिग्रस्त छोटे-छोटे

कमरे हैं। वर्तमान में बिजली के लिए सोलर प्लेट लगे हैं तथा जेनरेटर का उपयोग किया जाता है। यहाँ के जंगल में बड़े-बड़े नाखून वाले विशालकाय कछुएँ रहते हैं जो इन्सानों को काटने दौड़ते हैं। हमिंग चिड़िया जैसी सुंदर छोटी सन चिड़ियाँ तथा रंग-बिरंगे सुंदर केकड़े दिखाई पड़ते हैं। जहाजों के आने-जाने के लिए चैनल का निर्धारण के लिए समुद्र के अंदर की बनावट, अंदर में छिपी पहाड़ी, चट्टान एवं खाई आदि का पता लगाने के लिए समुद्री सर्वेक्षण आवश्यक होता है। पंद्रह दिनों तक हमारे जहाज द्वारा सर्वेक्षण किया गया। इसके बाद पुनः हम पोर्ट विक्टोरिया लौटे। हमारे कमान अधिकारी ने इसका रिपोर्ट भारतीय दूतावास में सौंप दी। वहाँ के राष्ट्राध्यक्ष हमारे इस काम से काफी खुश थे क्योंकि एक माह में पूरा होने वाला काम, पंद्रह दिनों में ही पूरा हो चुका था। एक स्टेडियम में इस खुशी में एक समारोह का आयोजन किया गया। हमारे कमान अधिकारी को शाल ओढ़ा कर तथा एक स्मृति-चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। इसके बाद वहाँ के कुछ पारंपरिक नृत्यों का आयोजन किया गया। तत्पश्चात भव्य आतिशबाजी का आयोजन हुआ, जो काफी आनन्ददायक एवं मनमोहक था।

अगले दिन फिर हमलोग बाहर घूमने गए। इस बार हमलोगों ने अस्पतालों, अनाथालयों, गिरजाघरों का भ्रमण किया। उसके अगले दिन हमें अपने वतन की वापसी करनी थी। हम वहाँ के सभी दृश्यों को अपने अंदर समेट लेना चाह रहे थे। शायद व्यस्तता के कारण, वहाँ जा कर हम अपने घर की यादों को कुछ भूल चुके थे। परंतु वापसी की बात सुनकर, घर की यादें जोर मारने लगीं। अब जल्द से जल्द घर पहुँचने का मन होने लगा। लौटती यात्रा में कोई खास परेशानी नहीं हुई। हमारे घर वाले भी हमारा बेसब्री से इंतजार कर रहे थे। मेरी इस पहली समुद्री यात्रा की यादें, मेरे लिए ज्ञानवर्धक, आनंदमयी, अनूठी एवं अविस्मरणीय रही। जब भी आंखें बंद कर उन घटनाओं के बारे में सोचता हूँ, तो वे सभी घटनाएँ चलचित्र की भांति दिखने लगती हैं। इस साहसिक सागर यात्रा की संघर्षपूर्ण स्मृति आज भी मुझे रोमांचित कर देती है।



अवध बिहारी सिंह,
सहायक लेखा अधिकारी

सावन आने दो

भीषण गर्मी के मंदन को,
सरसीला सावन आने दो।
तृषित अवनि के आँचल को,
हरियाली ओढ़ा सजाने दो।।
उमड़-घुमड़ के श्याम घटाएँ,
नभ में घिर-घिर आने दो।
मोर पपीहा दादूर को अब,
झम-झम से सुर मिलाने दो।।
नूतन तृण-पर्ण से सजा बगीचा,
बहारों का मेला लगाने दो।
इंद्रधनुष का लगा है झूला,
मिल सब जन हर्षाने दो।।
पिंग फसल हुआ सरस अब,
कृषक को आनन्द मनाने दो।
सर, सरिता और ताल तलाई,
नीर भर खुशियाँ बहाने दो।।
नभ से बरसे रिम-झिम बरखा,
उन्मुक्त हो, नहाने दो।
गलियों से बहती सुरसरि में,
कागज की नाव, चलाने दो।।
प्रकृति हुई निकट मनुज का,
अनुभूति सुख का पाने दो।
प्रेम और भक्ति बढ़ा सावन में,
श्रद्धा का मंगल गाने दो।।

भक्ति भूषित कांवड़ यात्रा,
जय बम-बम भोले गाने दो।
आक विल्व जल कनक चढ़ाकर,
मुझे, शिव को रिझाने दो।।
हरियाली लौटी बूँद ले मोती,
तुलसी आँगन सजाने दो।
सृष्टि फुलित हुआ सावन में,
बरसों का सावन आने दो।।



अमिताभ सिंह,

पुत्र- श्री अवध बिहारी सिंह,
सहायक लेखा अधिकारी

योग दिवस के अवसर पर योगाभ्यास करते उच्च अधिकारीगण एवं अन्य कर्मिक



कार्यालय में आयोजित सेवानिवृत्ति समारोह की झलक

सुंदरता सौंदर्य का

सौंदर्य के इस रूप नगर में
जब से मैं आई हूँ,
हरियाली की इस चादर से
खुद को ढकी पाई हूँ।
ऊपर अंबर पांव पसारे
तल में पियूष सी धारा,
निर्मल शीतल कलकल करता
लगे प्रेम सा प्यारा।
पत्तों की झंकार कभी जब
कानों में पड़ती है,
घुंघरू बांधे नील गगन में
यौवन एक खिलती है।
इस यौवन का रूप निहारे
कोई लगे हंसता है,
सात फेरों का प्रस्ताव लिए
दूजा अंबर में रहता है।
लाल रंग से मांगे भरता
जैसे सूरज के संग,
छिति तन का श्रृंगार से सजता
जैसे पीले रंग के संग।
तन सौंदर्य से और निखरता
प्रकृति का रूप,
छटक घटा सागर पर पड़ती
स्वर्ण विभूति धूप।
इस छटा को और सजाने

आती तारों की कई माला,
जहां न कोई सूरज होता
ना होता सूरज प्रति आभा।
असंख्य दीयों की कुंजों में
लगती शय्या विपुल,
प्रकृति संग रास रचाने
खुद में है मशगूल।
यही कहानी चलती है
स्वतः ही हर दिन साथ,
रंग बदलती रूप निखरती
हर इक पल के बाद।
सुंदरता नहीं उस सौंदर्य का
जो औरों को भा जाए,
सुंदर है यहां उस नयन का
जो उसकी काजल बन जाए।



मेघा किरण,
लेखाकार

यात्रा

अक्टूबर का महीना था। हवा में हल्की ठंडक आनी शुरू हो गई थी और पूरे शहर में दशहरा का उत्सव चल रहा था। स्कूल में छुट्टियाँ घोषित हो चुकी थीं और हम सब घर पर त्योहार के मूड में थे। एक शाम छत पर चाय पीते हुए पापा ने मुस्कराकर कहा, “इस बार की छुट्टियाँ कुछ खास होंगी। हम सब गुजरात जा रहे हैं!” यह सुनते ही मेरी माँ, दादी और दोनों छोटे भाई देव प्रताप सिंह और ध्रुव प्रताप सिंह खुशी से उछल पड़े। पटना से इतनी दूर की यात्रा हमने पहले कभी नहीं की थी, और वो भी पूरे परिवार के साथ यह हमारे लिए पहली बार था।

टिकट पापा ने बुक करवाए — पटना से अहमदाबाद तक की ट्रेन यात्रा, लगभग दो दिन की। जब हमारी ट्रेन रवाना हुई, तो खिड़की से गुजरते खेत, स्टेशन पर गरम समोसे और तिलकुट की खुशबू और त्योहारों की तैयारी ने पूरे सफर को खास बना दिया। ट्रेन में बैठकर हम तीनों भाई मोबाइल पर गेम खेलते रहे, गाने गाते रहे और आने वाले दिनों के रोमांच की कल्पना करते रहे।

अहमदाबाद पहुँचते ही शहर की साफ-सुथरी सड़कों, सजावट, और शरद ऋतु की ताजगी ने हमें प्रभावित कर दिया। सबसे पहले हम गए गुजरात साइंस सिटी, जहाँ बच्चों और बड़ों दोनों के लिए बहुत कुछ था। IMAX थियेटर में देखी गई अंतरिक्ष पर 3D फिल्म, स्पेस हॉल के ग्रहों के मॉडल और विज्ञान के खेल — सब कुछ बहुत रोचक और शिक्षाप्रद था। इसके बाद हम ISRO की स्पेस एग्जिबिशन देखने गए, जहाँ चंद्रयान, मंगलयान और रॉकेट्स के मॉडल देखना मेरे लिए एक सपना देखने जैसा था।

हमने अहमदाबाद में कुछ अद्भुत संग्रहालय भी देखे। सबसे खास था Calico Museum of

Textiles, जहाँ गुजरात की पारंपरिक कढ़ाई, बंधेज, जरी और पटोला की विरासत को इतने सुंदर तरीके से संजोया गया था कि माँ को भी वहाँ से हटाना मुश्किल हो गया। Lalbhai Dalpatbhai Museum में हमें प्राचीन मूर्तियाँ, पांडुलिपियाँ और बौद्धकालीन कलाकृतियाँ देखने को मिलीं, जिन्हें देखकर दादी पुराने जमाने की बातें करने लगीं।

अहमदाबाद से पाटण के लिए हम रवाना हुए। रास्ते में गुजराती गांव, खेतों में काम करते किसान और नीम के पेड़ों के नीचे बैठे लोग — सब कुछ इतना अलग था कि मानो किसी फिल्म में चल रहे हों। पाटण पहुँचकर हमने देखा भारत का अद्भुत चमत्कार — रानी की वाव। यह सात मंजिला सीढ़ीनुमा कुआँ था जो नीचे उतरता चला जाता है, और हर स्तर पर पत्थरों पर की गई बारीक नक्काशी। विष्णु के दशावतार, सुंदर अप्सराएँ, साधु और आम जीवन की झलकियाँ — सब कुछ जैसे जीवित हो उठा था। सबसे नीचे पहुँचकर जब ऊपर देखा, तो ऐसा लगा जैसे इतिहास की आत्मा हमारे ऊपर से झाँक रही हो।

पाटण के पास ही हमने मोढेरा का सूर्य मंदिर देखा, जहाँ सूर्य की पहली किरण सीधे गर्भगृह में प्रवेश करती है। वहाँ की नक्काशी, शांति और ऊर्जा ने हमें भीतर तक प्रभावित किया। फिर हम लौटे अहमदाबाद और वहाँ सरदार पटेल मेमोरियल देखना भी बहुत भावुक अनुभव रहा। उनके जीवन से जुड़ी तस्वीरें, भाषणों की रिकॉर्डिंग और उनके लोहे जैसे विचारों ने दिल को छू लिया। इसके बाद हम नेहरू तारामंडल गए, जहाँ आकाशगंगा, ग्रह-नक्षत्र और ब्रह्मांड की झलकियों ने हमें रोमांच से भर दिया।

हमारी यात्रा यहीं खत्म नहीं हुई। हम दक्षिण की ओर रवाना हुए, गिर राष्ट्रीय उद्यान के लिए, जहाँ

एशियाई शेरों को उनके प्राकृतिक आवास में देखना हमारे लिए एक सपने के पूरे होने जैसा था। जंगल सफारी में पहले हमें हिरण और नीलगाय दिखे, फिर एक मोड़ पर एक शेर अपने शावकों के साथ दिखाई दिया — उस क्षण हम सब चुप हो गए, प्रकृति की उस शक्ति को महसूस करते हुए।

फिर हम पश्चिम की ओर निकल पड़े द्वारका — भगवान श्रीकृष्ण की पवित्र नगरी। वहाँ द्वारकाधीश मंदिर में दर्शन करना और गोमती घाट पर बैठकर समुद्र की लहरों को देखना एक आध्यात्मिक अनुभव था। वहाँ की आरती, कृष्ण कथा और लोगों की आस्था देखकर हमारे दिल श्रद्धा से भर उठे। उसके बाद हम जामनगर के पास मरीन नेशनल पार्क भी देखने गए, जहाँ हमने समुद्री जीवन को पहली बार इतने करीब से देखा — रंगबिरंगे कोरल, स्टारफिश और साफ पानी में तैरती मछलियाँ।

अब नवंबर की शुरुआत हो चुकी थी और दिवाली बस आने ही वाली थी। बाजारों में रौनक, मिठाइयों की दुकानों में भीड़ और घरों की सजावट देखकर मन खुश हो गया। हम वड़ोदरा होकर पटना लौटे, साथ में गुजरात की यादें, मिठाइयाँ, हस्तशिल्प और बहुत-सी तस्वीरें लेकर। पर जो सबसे अनमोल चीज साथ आई, वह थी हमारे अनुभव — जिन्हें कोई चुरा नहीं सकता।

इस पूरी यात्रा ने मुझे सिखाया कि हमारा भारत केवल नक्शे पर फैला एक देश नहीं है, बल्कि एक जीवित संस्कृति है, जो हर मोड़ पर कुछ नया सिखाती है। विज्ञान से लेकर अध्यात्म, इतिहास से लेकर जंगल और मंदिर से लेकर तारों तक — यह यात्रा एक जीवन की किताब बन गई। सबसे बड़ी बात यह रही कि मैंने यह सब अपने परिवार के साथ जिया — साथ चले, साथ सीखे और साथ हँसे। यह सिर्फ घूमना नहीं था, यह जीवन को महसूस करना था। अगर कभी भारत की आत्मा को जानना हो — तो एक बार गुजरात जरूर जाइए, जहाँ पत्थर बोलते हैं, समुद्र गाते हैं और आकाश आपको गले लगाता है।



रुद्र प्रताप सिंह,

पुत्र- शंकर लाल सिंह,

सहायक लेखा अधिकारी

कार्यालय में आयोजित स्वास्थ्य शिविर



डिजिटल इंडिया

विश्व के साथ-साथ भारत भी बहुत तेजी से तकनीकी क्षेत्र में निरन्तर आगे बढ़ रहा है। एक ऐसा समय था, जब हम तकनीक से बहुत दूर थे। गाँवों में कंप्यूटर या इंटरनेट की कोई जानकारी नहीं थी और शहरों में भी बहुत कम लोग इसका सही उपयोग करते थे। संचार का माध्यम डाक से पत्र भेजना एवं आपात स्थिति में तार (टेलिग्राम) के द्वारा अपने सगे-संबंधियों को सूचना दी जाती थी। इसके बाद लैंडलाइन (टेलीफोन) का समय आया, वो भी इतनी महंगी कि सभी के लिये संभव नहीं था।

परंतु अब भारत भी टेक्नोलॉजी के साथ आगे बढ़ रहा था और इसका सबसे बड़ा उदाहरण था “डिजिटल इंडिया”। यह एक ऐसा अभियान है जिसे भारत सरकार ने 1 जुलाई 2015 को शुरू किया था, ताकि हमारे देश के हर नागरिक को टेक्नोलॉजी और इंटरनेट की मदद से सशक्त बनाया जा सके।

डिजिटल इंडिया का मतलब है एक ऐसा भारत जहाँ ज्यादातर काम ऑनलाइन हो सके, जहाँ लोगों को सरकारी दफ्तरों के चक्कर ना काटने पड़ें, जहाँ किसान, छात्र, दुकानदार, बुजुर्ग सभी लोग आसानी से इंटरनेट और मोबाइल की मदद से अपनी जरूरत की चीजें प्राप्त कर सकें। पहले लोग घंटों लाइन में लगते थे, सिर्फ एक प्रमाण पत्र या बिजली का बिल जमा करने के लिए। लेकिन अब मोबाइल से ही हम बिल भर सकते हैं, फॉर्म भर सकते हैं, सरकारी योजनाओं के लिए अप्लाई कर सकते हैं और जरूरी दस्तावेज डाउनलोड भी कर सकते हैं।

इस अभियान की शुरुआत इसलिए हुई क्योंकि सरकार चाहती थी कि भारत के गाँव-गाँव तक इंटरनेट पहुँचे, हर नागरिक के पास एक डिजिटल पहचान हो और सभी को यह सिखाया जाए कि टेक्नोलॉजी का सही उपयोग कैसे किया जाता है। इस सोच के साथ ही आधार कार्ड, डिजीलॉकर, BHIM ऐप जैसी सुविधाएँ लाई गईं, जिनसे आम लोग बहुत आसानी से काम कर सकते हैं।

डिजिटल इंडिया का सबसे बड़ा फायदा यह हुआ कि अब भारत के गाँवों में भी लोग इंटरनेट इस्तेमाल कर रहे हैं। आजकल बहुत से गाँवों में सीएससी सेंटर (जन सेवा केंद्र) खुले हैं, जहाँ कंप्यूटर पर सरकारी काम किए जाते हैं। किसान अब अपनी फसल के दाम ऑनलाइन देख सकते हैं, स्कूल के बच्चे ऑनलाइन पढ़ाई कर सकते हैं और बुजुर्ग लोग अपनी पेंशन का स्टेटस जान सकते हैं। यह सब डिजिटल इंडिया की वजह से संभव हुआ है।

शिक्षा के क्षेत्र में भी बहुत बदलाव आया है। पहले जो बच्चे दूर-दराज के गाँवों में रहते थे, उन्हें अच्छे स्कूल और शिक्षक नहीं मिलते थे। लेकिन अब DIKSHA, SWAYAM और NPTEL जैसे ऐप्स और वेबसाइट्स के

जरिए कोई भी बच्चा अच्छे शिक्षकों से पढ़ाई कर सकता है। कोरोना के समय जब सब स्कूल बंद हो गए थे, तब ऑनलाइन क्लासेस ने हमारी पढ़ाई को जारी रखा। यह सब डिजिटल इंडिया के कारण ही हुआ।

स्वास्थ्य सेवाओं में भी अब बदलाव आ गया है। अब ई-हॉस्पिटल के जरिए हम डॉक्टर की अपॉइंटमेंट ऑनलाइन ले सकते हैं, मेडिकल रिपोर्ट देख सकते हैं और कुछ जगहों पर दवाइयाँ भी ऑनलाइन मिल जाती हैं। कोविड के समय में Cowin वेबसाइट से हम वैक्सीन की जानकारी और स्लॉट बुक कर पाए। आरोग्य सेतु ऐप से हमने कोरोना के बारे में अपडेट्स और अपनी सुरक्षा का ध्यान रखा। इससे यह पता चलता है कि डिजिटल सेवाएँ सिर्फ सुविधा नहीं, बल्कि जीवन बचाने में भी मदद करती हैं।

डिजिटल इंडिया ने पैसे के लेन-देन को भी बहुत आसान बना दिया है। पहले लोग नकद ही रखते थे और उसे प्राप्त करने के लिए भी बैंक में जाकर कतार में लगना पड़ता था। लेकिन अब हम ऑनलाइन पेमेंट कर सकते हैं जैसे Google Pay, PhonePe, Paytm, BHIM आदि जिससे बैंक जाने की जरूरत कम हो गयी है। यह सब UPI की वजह से मुमकिन हुआ है। छोटे दुकानदार, पानवाले, चायवाले भी अब QR कोड से पेमेंट ले लेते हैं। इससे पैसा चोरी होने या गुम हो जाने का डर भी कम हुआ है।

इसके साथ ही डिजीलॉकर एक बहुत उपयोगी सुविधा बन गया है। अब हमें अपने दस्तावेज जैसे मार्कशीट, आधार कार्ड, ड्राइविंग लाइसेंस को फाइल में रखने की जरूरत नहीं है। हम इन्हें डिजीलॉकर में सुरक्षित रख सकते हैं और जब चाहें उन्हें डाउनलोड या दिखा सकते हैं। इससे समय भी बचता है और कागजी काम भी कम होता है।



डिजिटल इंडिया ने सरकारी कामों में भी पारदर्शिता लाई है। अब बहुत सी सरकारी सेवाएँ जैसे जन्म प्रमाण पत्र बनवाना, राशन कार्ड के लिए आवेदन, पासपोर्ट की जानकारी, बिजली या पानी का बिल भरना आदि सब कुछ ऑनलाइन हो चुका है। इससे भ्रष्टाचार कम हुआ है और लोग अपने अधिकारों को बेहतर तरीके से जान पा रहे हैं।

डिजिटल इंडिया से युवाओं को भी बहुत लाभ हुआ है। आजकल बहुत से युवा फ्रीलांसिंग, ऑनलाइन ट्यूटोरिंग, कंटेंट क्रिएशन, ऐप डेवलपमेंट और डिजिटल मार्केटिंग जैसे काम कर रहे हैं और अच्छा पैसा कमा रहे हैं। स्टार्टअप इंडिया जैसी योजनाओं ने नए विचारों को जन्म दिया है। बहुत से युवा अब खुद की कंपनी शुरू कर रहे हैं और दूसरों को नौकरी भी दे रहे हैं।

हालाँकि डिजिटल इंडिया बहुत फायदेमंद रहा है, लेकिन इसके सामने कुछ चुनौतियाँ भी हैं। भारत एक बहुत बड़ा देश है और यहाँ हर जगह इंटरनेट नहीं है, खासकर दूर-दराज के गाँवों में। बहुत से लोग अभी भी कंप्यूटर या स्मार्टफोन चलाना नहीं जानते। बहुत से बुजुर्ग लोगों को मोबाइल से फॉर्म भरना या डिजिटल पेमेंट करना मुश्किल लगता है। इसके अलावा, साइबर क्राइम भी एक बड़ा खतरा बन गया है। कुछ लोग दूसरों का डेटा चुरा लेते हैं, फेक वेबसाइट बनाकर लोगों को धोखा देते हैं। इसलिए लोगों को डिजिटल सुरक्षा के बारे में भी सिखाना जरूरी है।

हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि सभी स्कूलों में कंप्यूटर और इंटरनेट की सुविधा हो, ताकि बच्चों को बचपन से ही डिजिटल शिक्षा मिल सके। अगर हम बच्चों को शुरू से तकनीक का सही उपयोग सिखाएँगे, तो भविष्य में भारत एक डिजिटल महाशक्ति बन सकता है। इसके साथ ही सरकार को चाहिए कि वह गाँवों में इंटरनेट की सुविधा तेज और सस्ती करे, ताकि हर कोई इस डिजिटल युग का हिस्सा बन सके।

डिजिटल इंडिया का सबसे अच्छा पहलू यह है कि इससे सबको समान अवसर मिल रहा है। पहले अच्छे संसाधन केवल बड़े शहरों में मिलते थे, लेकिन अब कोई भी बच्चा या युवा जो मेहनती है, वह इंटरनेट की मदद से बहुत कुछ सीख सकता है और आगे बढ़ सकता है। चाहे वह यूपीएससी की तैयारी हो आई.आई.टी. की कोचिंग हो या कोई कला सीखनी हो सब कुछ अब ऑनलाइन उपलब्ध है।

भविष्य में डिजिटल इंडिया और भी आगे बढ़ेगा। अब भारत में भी 5G के प्रयोग से इंटरनेट सेवा तेज हो गई है। जिससे आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसे Open AI (ओपेन

एआई), Perplexity AI इत्यादि का प्रयोग कठिन कम्प्यूटरीकृत कार्यों को सुगम बनाने में एवं त्वरित जवाब हेतु किया जाने लगा है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, रोबोटिक्स, क्लाउड कंप्यूटिंग जैसे नए क्षेत्रों में भी बहुत अवसर उत्पन्न हुए हैं। अगर हम सब मिलकर इन तकनीकों को समझें और उनका सही उपयोग करें, तो हमारा देश बहुत आगे जा सकता है।

डिजिटल इंडिया सिर्फ एक सरकारी योजना नहीं है, यह हम सभी की जिम्मेदारी है। अगर हम अपने घर में बुजुर्गों को मोबाइल चलाना सिखाएँ, बच्चों को ई-लर्निंग का महत्व समझाएँ और खुद भी समय-समय पर नई डिजिटल तकनीक सीखते रहें — तो यह आंदोलन और मजबूत होगा। हमें यह भी ध्यान रखना होगा कि तकनीक का इस्तेमाल सोच-समझकर करें और दूसरों की मदद भी करें। जब हर नागरिक डिजिटल रूप से सशक्त होगा, तभी असली मायने में डिजिटल इंडिया का सपना पूरा होगा।

हम एक ऐसे युग में जी रहे हैं, जहाँ समय की कीमत बहुत ज्यादा है। डिजिटल इंडिया ने हमारी रोजमर्रा की जिंदगी को आसान बना दिया है। अब हम घर बैठे बिजली-पानी का बिल भर सकते हैं, ट्रेन टिकट बुक कर सकते हैं, नौकरी के लिए ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं और पढ़ाई कर सकते हैं। जो काम पहले घंटों में होता था, अब मिनटों में हो जाता है। यह कमाल डिजिटल इंडिया की वजह से ही संभव हो पाया है।

निष्कर्ष में यही कहना चाहूँगी कि डिजिटल इंडिया ने हमारे देश की तस्वीर बदल दी है। अब भारत सिर्फ एक विकासशील देश नहीं, बल्कि एक ऐसा देश बन चुका है जो तकनीक की दुनिया में भी अपनी जगह बना रहा है। यह अभियान हमें एक ऐसा भारत बनाने की ओर ले जा रहा है जहाँ सभी लोग टेक्नोलॉजी से जुड़कर आत्मनिर्भर बन सकें। अगर हम सभी लोग इस अभियान का हिस्सा बनें, खुद डिजिटल साक्षर बनें और दूसरों को भी सिखाएँ, तो एक दिन हमारा भारत दुनिया का सबसे डिजिटल और सशक्त देश बन जाएगा।



अदिति,

पुत्री- श्री अविनाश कुमार ठाकुर,
सहायक लेखा अधिकारी

हिंदी

हिंदी किसी का विरोध नहीं करती,
हिंदी क्षेत्रीय भाषाओं को भी गले लगाती,
फिर भी हिंदी के हिस्से,
न जाने क्यों इतनी लाणतें आती?
हिंदी भाषी क्षेत्रों ने न जाने कितने,
शिक्षाविद् इस विश्व को दिये,
क्या वह सचमुच ऐसी है?
क्या वह किसी लायक नहीं?
कुसूर यह कि है यह
जन-जन की भाषा,
विश्व की सर्वाधिक बोली जाने वाली
भाषाओं में होती यह चौथी,
मातृ-भाषाओं को अपनाकर
इसकी कद और बढ़ती।

परंतु अखंड भारत का स्वप्न देखने वाले,
हिंदी के बिना सब कैसे संभव है?
अंग्रेजी से नहीं कोई समस्या,
बस हिंदी से क्यों है होती?
हिंदी सबको गले लगाती,
क्या यही है उसकी गलती?



स्वाति कुमारी,
सहायक लेखा अधिकारी

चम्पक और पाँच-हजार की शर्ट

लाओत्सू कह रहे हैं, 'नाम पहले आता है, वस्तुएँ बाद में आती हैं। अलग-अलग वस्तुएँ, भेद, पृथक्ता बाद में आते हैं।' कामना पहले आती है और कामना ही विशिष्टताओं का निर्माण कर देती है। कामना वहाँ भी अन्तर देखना शुरू कर देती है जहाँ पर अन्तर है ही नहीं। कामना कहती है, 'जहाँ अन्तर है नहीं, वहाँ मैं अन्तर देखूँगी और अन्तर है नहीं तो अन्तरों का निर्माण करूँगी।' नहीं तो कामना के लिए स्थिति बहुत एबसर्ड (बेतुकी) हो जाएगी न! आप कुछ खास माँग रहे हो और खास कुछ है ही नहीं। तो कामना की फिर हालत क्या बचेगी? खास कुछ है नहीं, चाहिए मुझे खास। तो कामना अतृप्त ही रह जाएगी। दुकानदार इस मनोविज्ञान से अच्छी तरह परिचित होते हैं।

तो चम्पकलाल गये खरीदने के लिए कुछ, मान लीजिए शर्ट, तो उनको शर्ट दिखायी गई। अभी एक-के-बाद-एक शर्ट दिखायी जा रही हैं। वो सब जो शर्ट थीं वो एक ही दाम की थीं उस दिन। तो सब-की-सब दो-दो हजार रुपये की शर्ट हैं। ये जो गये हैं खरीदने, बोले, 'नहीं, कुछ बढ़िया दिखाओ, खास दिखाओ। ये पसन्द नहीं आ रहा है, कुछ इससे अच्छा दिखाओ।'।

वो दुकानदार समझ गया, बोला, 'हाँ-हाँ, मैं आपको दिखा रहा हूँ।' वो अन्दर गया, वही जो लॉट दिखा रहा था, उसी में से चार शर्ट उठायीं, उनका दाम करा पाँच हजार और वो लाकर चम्पकलाल के सामने रख दिया। बोला, 'ये चार हैं बिलकुल खास सिर्फ आपके लिए।' चम्पकलाल ने उठाकर देखा और बोला, 'हाँ, ये है! ये पाँच हजार की है, ये बढ़िया होगी। ये बढ़िया होगी।

विशिष्टता की प्यास ने आपको वहाँ भी अन्तर दिखा दिया जहाँ अन्तर था ही नहीं। आप आतुर थे कुछ खास पाने के लिए, तो आपको वहाँ भी खास दिखने लग गया, जहाँ खास है ही नहीं। और ये देखकर, झूठी खासियत देखकर के आप बस

लुटकर ही वापस आ आये। दो हजार की चीज के पाँच हजार दे दिये और बहुत प्रसन्न हो गये कि मुझे तो कुछ खास मिला है। आपको जो खास मिला है, वह खास है कहाँ।

आपकी कामना एक ऐसी चीज में खासियत आरोपित कर रही है, सुपरइम्पोज (अध्यारोपित) कर रही है जो खास नहीं है। यह बात माया भी जानती है और दुकानदार भी। आप यदि खास की तलाश में हो, तो आम को भी खास बनाकर प्रस्तुत कर दिया जाएगा। आप उसके ऊँचे दाम चुकाकर के उसे घर ले जाओगे। आप उसका गुण नहीं देख रहे, आप उसकी विशिष्टता देख रहे हो। विशिष्टता आपको क्या दिखाई दी? इसका दाम विशिष्ट है। गुण यदि देखा होता तो दिख जाता कि इसका गुण तो बिलकुल उन्हीं शर्टों जैसा है जो दो-दो हजार की हैं, तो ये विशिष्ट तो है नहीं। पर हम कहाँ देख पाते हैं कि कोयले में भी कार्बन है और डायमंड (हीरे) में भी कार्बन है। हम तो ये देख पाते हैं कि दोनों में से किसका दाम ज्यादा है।

तो विशिष्टता अहंकार को बहुत भाती है और विशिष्टता ही अहंकार को मूर्ख बनाती है। क्यों? क्योंकि कोई विशिष्टता होती ही नहीं। लेकिन जो आपको विशिष्ट लग गया, उसके अब आप मुँह-माँगे दाम चुकाएँगे। तो आप दाम चुका किस चीज के रहे हो? जब कोई विशिष्टता होती ही नहीं और आप दाम चुकाते हो विशिष्टता के ही, खासियत के ही। विशिष्टता तो है नहीं तो आपने दाम चुकाये किस चीज के हैं? अपनी कामना के। तो कामना ने भेद पैदा करे, भेद नहीं थे पहले से। इसी बात को लाओत्सू कहते हैं, 'नाम पहले आता है, वस्तुएँ बाद में आती हैं।'।



नूर अली,
लेखाकार

हिंदी टंकण प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान प्रमाणपत्र का वितरण



बुद्ध परिचय

कपिलवस्तु में लुम्बिनी ग्रामा । जहाँ बुद्ध का पावन धामा ॥
रुक्मिणी देइ नाम अब जानी । जहाँ जन्म लिए महा ज्ञानी ॥

पिता शाक्य कोलिय माता । गौतम गोत्र क्षत्रिय विख्याता ॥
नृप सुदोधन रानी महामाया । दीन्ह जन्म गोद दुलराया ॥

सूंड कमल दल एकहूँ साजा । मातु सपन आयो गजराजा ॥
भेंट पुष्प कियो सूंड उठाये । सगुन जान सब मन मुस्काये ॥

आयो जब जननी के कोखा । होने लगा अनुभूति अनोखा ॥
जीते युद्ध पीतु पावे ख्याति । मोद करत परिजन बहु भांति ॥

दमके महिषी मुख मंडल चारु । कुक्षि जानि दिव्य अवतारु ॥
गौर बदन कुछ उदर विकासी । भारी पग लिए करे उबासी ॥

उदर लिए शिशु याचत माता । करहूँ कृपा सब भांति विधाता ॥
देहु पुत्र जस पाई कौशल्या । चरण छुए जस तरई अहिल्या ॥

महिषी जननी धरम अनुरागी । पायो सुत अति बड़भागी ॥
जन्म लिए धन्य हूई धरती । मानो जन्म लियो चक्रवर्ती ॥

आयो मास वैशाख तिथि पूनम । तुला राशि का चंद्र अनुपम ॥
कर्क लगन रवि नभ मध्याना । पांचहूँ ग्रह दसम गत जाना ॥

मुख मंडल इसका गंभीर । है बालक यह कोई रणधीर ॥
चक्रवर्ती यह विश्व विजेता । महा मनस्वी नव धर्म प्रणेता ॥

बालक का ब्यक्तित्व विराटा । दीर्घ कर्ण व भव्य ललाटा ॥
कमल नयन उत्कच घुंघराले । घुटने तक दो भुजा निराले ॥

ज्योतिषी लगे गुणन विचारे । नामकरण कियो गुण अनुसारे ॥
सुफल मनोरथ मन में जानी । दियो नाम सिद्धार्थ महामानी ॥

बीत गए दिवस कुल सात । ममता पर हो गई बड़ी घात ॥
काल लियो कर आयो कटारी । आयु हीन भयउ महतारी ॥

गौतमी बहन को दिया हकारा । सौप दियो तेहि राजकुमारा ॥
सांसो ने फिर लिया विराम । चली सुहागन सज सुरधाम ॥



शनैः शनैः बालकपन छोड़। शिशु अब होने लगा किशोर॥
दीक्षा की बेला जब आयो। पिता दियो गुरु गृह पठायो॥

विश्वामित्र गुरु ज्ञान निधाना। देहि ज्ञान सब वेद पुराणा॥
जीवन के चतुर पुरुषार्थ। गुरु मुख सिद्ध हुए सिद्धार्थ॥

राजनीति उन्हें गुरु पढ़ाया। राजा का कर्तव्य समझाया॥
राजतंत्र तब तक है स्वस्थ। राजा जब तक रहे गृहस्थ॥

यद्यपि गुरु वचन अनुरागी। मोह जाल में मन नहीं लागी
लौट गया धर अंतेवासी। मुख मंडल पर रहा उदासी॥

अजीब प्रश्न मानस में आते। भार हृदय पर बढ़ते जाते॥
कैसा है यह मनुज सरीरा। जिसमें है केवल दुख-पीड़ा॥

घुमा फिरा कर लाता छंदक। पहुंचाता उपवन में कंथक॥
सौरभ सुषमा भी उपवन का। चौन नहीं देता था मन का॥

क्षत्रियोचित जिसका प्रहार। लेकिन स्वयं न किया शिकार॥
दुष्ट देवदत्त भाई चचेरा। उपवन में कर दिया बखेड़ा॥

दया धर्म से हीन कसाई। उड़ते खग पर तीर चलाई॥
गिरा हंस घायल अकुलाया। गौतम ने पर उसे बचाया॥

आया जिसने किया शिकार। लगा जताने निज अधिकार॥
गौतम से कर लिया विवाद। पहुंचा न्यायालय ले फरियाद॥

राजा ने फिर की सुनवाई। गौतम के हित निर्णय आई॥
न्याय हमेशा यही सिखाता। सदा बड़ा है जीवन दाता॥

लोगों का दुख इन्हें सताता। भोग विलास नहीं सुहाता॥
राजा ने सब यत्न कराया। शाक्य कंज तदपि कुंभलाया॥

वय षोडस की हुई शुरुआत। चिंता से घिर आये तात॥
लगे बीतने समय अकाजा। घोषित हुए गौतम युवराजा॥

राज काज में मन नहीं लागे। दुखियों के वह पीछे भागे॥
क्यों करता कोई जीवन हानि। गौतम सदा दया का दानी॥

बात ठहर गई आखिरकार। इसे है हमदम की दरकार॥
गूंजी राज महल शहनाई। यशोधरा दुल्हन बन आई॥

प्रणय पाश बांधी परिणीता। कछु काल मधुरमय बीता॥
पति धर्म भलीभांति निभाई। हावी होहि गई तन्हाई॥

इसी बीच गूंजी किलकारी। माता बनी कोलिय कुमारी॥
तनय एक जन्मा अति प्यारा। पाया नाम समय अनुसारा॥

राहूल नाम दादा को सूझा। बंधन का पर्याय वह दूजा॥
मगर लिए वह निश्चय ठान। अब करना है वन प्रस्थान॥

सुत आयो बीते दिन सात। हुई अंत की नयी शुरुआत॥
मध्य रात्रि नीरव चहू ओरा। दारा सुत शयनरत छोड़ा॥

फिर चुपके खोला दरवाजा। बिन घूमे बढ़ गए युवराजा॥
रिश्तों के टूटे सब फंदा। बदली में ओझल हुआ चंदा॥

मास आसाढ़ी चांद पूनम की। राह दिखाने बिजली चमकी॥
जमकर फिर हो गई बरसात। विहवल हो रोती रही रात॥

उनतीस साल वयस अनारी। छोड़ चला योगी सुत नारी॥
कंथक उन्हें विपिन पहुंचाया। अथ महाभिनिष्क्रमण कहाया॥

विरहन सी बन गई घरवाली। फीकी हो गई मांग की लाली॥
तिरिया को यह बात रुलाते। काश सखी वह कहकर जाते॥



संजय कुमार ओझा,
सहायक लेखा अधिकारी

यह मानव द्वारा रचा मायाजाल है, इसमें ही फंसे हैं बहुत सारे इंसान, जो भी निकला इस मायाजाल से, वो हुआ महान। आज मैं आप सभी पाठक बंधुगणों को इसी मायाजाल में फंसे एक व्यक्ति की कहानी से रूबरू कराने जा रहा हूँ। ये कहानी है पैसों और रूतबों के मायाजाल में फंसे हुए एक भारतीय किसान की। उस किसान के चार बेटे थे। सभी बेटों की पढ़ाई-लिखाई में कोई कमी नहीं की। गांव वाले कहते थे कि तुम्हारे बेटे बड़े ही होनहार हैं। बड़ा होकर जरूर कोई बड़ा अफसर बनेगा सब। धीरे-धीरे समय बीतता गया। किसान के सबसे छोटे वाले बेटे की पढ़ाई लिखाई से दिलचस्पी हटने लगी। किसान ने बहुत समझाया कि पढ़ लिख लो, वही तुम्हारे जीवन में काम आएगा। मगर उसके छोटे बेटे का मन पढ़ाई लिखाई में नहीं लगता था। किसान उससे गुस्सा से बोला कि अगर नहीं पढ़ना है तो तुम्हें मेरे साथ खेत में काम करना पड़ेगा। वो अपने बाबूजी के साथ खेतों के कामों में हाथ बंटाने लगा। किसान हमेशा अपने छोटे बेटे को ताना मारता था। एक दिन की बात है, उसके बड़े बेटे ने घर आकर एक खुशखबरी सुनाई कि मैंने जो यूपीएससी की परीक्षा दी थी, उसमें सेलेक्ट हो गया हूँ और मुझे प्रशासनिक अधिकारी का पद मिला है। इस बात को सुन कर किसान बहुत खुश हुआ और मन ही मन अपने छोटे बेटे के बारे में भी चिंता करने लगा। पता नहीं ये क्यों नहीं पढ़ता है। उसने अपने बड़े बेटे को कहा कि अपने छोटे भाई को भी कुछ समझाया करो। उसके बड़े बेटे को जिलाधिकारी का पद मिला। थोड़े दिन बाद किसान के दूसरे बेटे ने भी खुशखबरी सुनाई कि पिताजी मैं भी यूपीएससी की परीक्षा में सेलेक्ट हो गया हूँ। उसे पुलिस अधिकारी का पद मिला। एक दिन किसान अपने छोटे बेटे को अपने पास बुलाया और उससे बड़े प्यार से पूछा कि तुम क्या चाहते हो? क्यों नहीं तुम भी अपने बड़े भाइयों की तरह पढ़-लिख कर बड़ा आदमी बनना चाहते हो, बताओ। ये सब बातें हो ही रही थीं कि किसान के तीसरे बेटे ने घर आकर बताया कि मैंने जो मेडिकल कॉलेज में एडमिशन के लिए परीक्षा दिया था, उसमें पास हो गया। अब किसान फिर अपने छोटे बेटे को बोला कि देखो ये सब पढ़-लिख कर आगे बढ़ जाएंगे और तुम यहीं रहना खेती करते। अभी भी वक्त है यह काम छोड़ दो और अभी से पढ़ाई पर ध्यान देना शुरू कर दो। सुन रहे हो न मैं क्या कह रहा हूँ? तब किसान के छोटे बेटे ने बोला, पिताजी आप हर समय मुझे पढ़ने-लिखने को कहते हैं। आप जानते हैं कि मैं पढ़ने वाला नहीं हूँ। मुझे इस पढ़ाई में कोई दिलचस्पी नहीं है। इस पर किसान ने पूछा क्यों दिलचस्पी नहीं है पढ़ाई में, बता मुझे। तब छोटे बेटे ने बोला पिताजी समय आने पर मैं आपको बताऊंगा। धीरे-धीरे समय बीतता गया। एक दिन गांव में सारे किसानों की सभा थी। सभी किसानों ने अपनी-अपनी समस्या सभा में कही। किसानों की सभा में सबसे चर्चित मुद्दा फसलों का उचित मूल्य नहीं मिलना था।

धीरे-धीरे आसपास के गांवों में सभा हुई और उन सभाओं में भी सबसे चर्चित मुद्दा फसलों का उचित मूल्य नहीं मिलना ही था। सब किसान भाइयों ने मिलकर सोचा कि हमारे ही तो भाई-भतीजे हैं, चलो ब्लॉक कार्यालय में चल कर ब्लॉक डेवलपमेंट ऑफिसर से मिलकर अपनी समस्या उनके सामने रखेंगे। शायद कोई हल निकल जाए। पर वहां निराशा ही हाथ लगी। तब फिर किसान भाइयों ने अनुमंडल पदाधिकारी से मिलकर अपनी समस्या को उनके सामने रखी। पर वहां से भी निराशा ही हाथ लगी। कुछ दिन बाद किसान भाइयों ने जिलाधिकारी से मिलकर अपनी समस्या उनके सामने रखी, वहां से भी निराशा ही हाथ लगी। अब, सब मिलकर मंत्रीजी से मिलने उनके आवास पर पहुंचे और अपनी समस्या का समाधान निकालने के लिए मंत्रीजी से विनती की। पर मंत्रीजी ने भी वही गोलमटोल जवाब दिया जो पहले अधिकारियों ने दिया था। अब क्या किया जाए भाई, किसान हैं हमलोग, कब तक ऐसे दर-दर भटकते रहेंगे। सब लोगों ने एक बार फिर से सभा बुलाई। सभा में यह निर्णय लिया गया कि अपनी बात देश के सर्वोच्च पद पर आसीन व्यक्ति के सामने रखेंगे। मगर ये बात जब उस देश के सर्वोच्च पद पर आसीन व्यक्ति को पता चला कि किसान भाइयों ने मिलकर सोचा है कि हमसे मिलेंगे अपनी फसलों के उचित मूल्य निर्धारण जैसी समस्याओं के उचित समाधान के लिए, तो घबरा-कर उन्होंने अपने अधिकारियों को आदेश दिया कि किसी भी कीमत पर किसान भाई यहां मेरे पास न पहुंच सकें। अब क्या, ये आदेश सुनते ही सारे अधिकारियों ने मिलकर अपने आका को खुश करने के लिए किसान भाइयों पर तरह-तरह के अत्याचार किए और अपने नीचे वाले कर्मचारियों से भी करवाए। एक दिन तो अत्याचार की हद हो गई जब किसान भाइयों को बुरी तरह पीटा गया, आंसू गैस के गोले छोड़े गए। इस घटना में बहुत से किसान घायल भी हुए और कुछ स्वर्ग सिंघार गए। उसी रात को एक अजीब घटना घटी। जिस अधिकारी के कहने पर अपने ही चाचा, छोटे-बड़े भाइयों, भतीजों पर अत्याचार किया गया उस अधिकारी को उसके छोटे भाई ने खबर दी कि पिताजी की मृत्यु हो गई है, जल्दी घर आ जाइए। तब उस अधिकारी ने अपने छोटे भाई से पूछा कि ये सब कैसे हो गया, पिताजी तो एकदम ठीक थे। तब छोटे भाई ने बोला कि पिताजी और मैं भी, किसान भाइयों के साथ सर्वोच्च पद पर आसीन व्यक्ति से मिलकर हमारी समस्याओं का उचित समाधान निकल सके, अन्य किसानों के साथ चल रहे थे। पर पता नहीं अचानक किसी अधिकारी के कहने पर पुलिस ने हम सब किसान भाइयों को रोकने के लिए बल का प्रयोग किया। बल प्रयोग के चलते भगदड़ मच गई। कुछ किसान भाइयों की मृत्यु भी हो गई और बहुत सारे किसानों को गंभीर हालत में अस्पताल में भर्ती करवाया गया। जिस अस्पताल में पिताजी को भर्ती कराया गया, उस अस्पताल में ससमय इलाज भी नहीं

हो पाया। मुझे भी चोटें लगी थी। मैं चोट लगने के वजह से बेहोश हो गया था, पर मुझे जब होश आया और पिताजी के बारे में वहां मौजूद लोगों से पूछा तो पता चला कि पिताजी को ज्यादा चोट लगी है और वो नाजुक स्थिति में हैं। फिर भी मैंने अस्पताल प्रशासन से मिलकर पिताजी की उचित इलाज का आग्रह किया। मगर मेरी एक बात ना सुनी और उल्टे उनका जवाब था कि यहीं पास में निजी अस्पताल में अपने पिताजी को ले जाओ। शायद वहां इलाज बेहतर हो और तुम्हारे पिताजी ठीक हो जाएँ। फिर मैंने पिताजी को उस अस्पताल से जैसे ही पास वाले निजी अस्पताल ले जा रहा था, उसी समय पिताजी का देहांत हो गया। ऐसी विपरीत परिस्थिति में आपको जानकारी दे रहा हूँ और मैंने मँझले और संझले भाई साहब को भी कॉल किया पर उन्होंने फोन उठाया नहीं तो मैंने मैसेज करके उनको बता दिया है। अब आगे क्या करना है, आप ही बताइए। ये सब बातें सुनकर वो अधिकारी कुछ सोचा कि मैंने क्या कर दिया? उधर मँझले और संझले भाई ने जब मैसेज पढ़ा तो एकदम चौंक गए कि मैंने क्या कर दिया? वो दोनों अधिकारी और डॉक्टर जब अपने पिता के अंतिम संस्कार में आए तो रो-रो कर कह रहे थे कि मैंने अपने पिता की हत्या की, माफ कर दीजिए पिताजी। ये बात सुनकर अंतिम संस्कार में आए सभी लोग चौंक गए। तब उसके छोटे भाई ने पूछा कि आप अपने आप को क्यों दोष दे रहे हैं भाई साहब। तब बड़े भाई ने बताया कि मैं ही वो अधिकारी हूँ जो अपने देश के सर्वोच्च पद पर आसीन व्यक्ति को खुश करके थोड़े पैसे और पद के लालच में वो आदेश दिया था। संझले भाई ने बोला कि मैं भी पद और पैसे के लिए अपनी पर अत्याचार किया और अपने से नीचे पदों पर आसीन कर्मचारियों से भी करवाया। अब छोटे भाई ने अपने मँझले भाई से पूछा कि भईया आप क्यों अपने आप को कोष रहे हो। तब मँझले भाई ने बोला कि मैं ही वो डॉक्टर हूँ जिस अस्पताल में पिताजी को गंभीर हालत में भर्ती कराया गया था मैंने थोड़े पैसे के लिए बहाना बना कर उस दिन छुट्टी ले लिया, क्योंकि मुझे निजी अस्पताल से मोटा कमीशन मिलता था। ये सब बातें सुनकर वहां खड़े एक वृद्ध व्यक्ति ने कहा कि ये सब आज जिस शिक्षा पद्धति की शिक्षा ग्रहण करते हैं, ये उसी के परिणाम हैं। मैं पहले से ही कहता रहा हूँ कि ये जो आज की शिक्षा पद्धति है, वो हमारी नहीं है। शिक्षा तो वो है जो किसी रोते हुए को हंसा दे, किसी मजबूर की मजबूरी को समझ कर उसकी परेशानी का उचित समाधान कर सके। न कि लालची और स्वार्थी बने। यही तो अंग्रेज चाहते थे कि भारतीय लोग

आपस में लड़ें। इसीलिए यह शिक्षा पद्धति एक अंग्रेज द्वारा ही लाया गया था कि हम भारतीय लोग आपस में लड़ते रहें। जब तक हम लोग अपनी शिक्षा पद्धति में शिक्षा ग्रहण किए, तब तक आपस में मिलजुल कर हर सुख-दुःख में साथ रहे। एक अच्छे समाज की स्थापना की और हर तरह की समस्याओं का निपटारा हम समाज में मिलजुल कर कर लेते थे। थॉमस बर्बिंगटन मैकाले ही वो अंग्रेज था जिसने हमारी शिक्षा पद्धति को बदला था। हमारी शिक्षा पद्धति ऐसी थी कि हमारे देश में जो भी विदेशी लोग शिक्षा ग्रहण करने आए, यहां की शिक्षा पद्धति की तारीफ की। विदेशी विद्वानों ने अपनी किताबों में लिखा है कि भारत के लोग आपस में मिलजुल हर तरह की समस्याओं को आसानी से हल कर लेते हैं। ये सब भारत की अद्भुत शिक्षा पद्धति की ही देन है। शिक्षा वो होता है जो एक मानव को दूसरे मानव से जोड़े, ना कि उसे हीन भावना से देखे। अरे भाई! क्या फायदा ऐसी पढ़ाई का जो अपनी में भी ऊंच-नीच का भेद कराता हो। ऐसी पढ़ाई किसलिए जो ना अपने समाज का कल्याण करे, ना ही अपने से बड़ों का सम्मान करे और ना छोटों के प्रति उसके दिल में प्यार हो। बताओ क्या करोगे ऐसे पैसों का जो किसी अपनी को दुःखी करके अर्जित किया हो। एक बात सुन लो, मैं वृद्ध हूँ, ये मैं अपने तजुर्बे से कह रहा हूँ “जो तुम्हारा है वो हमेशा तुम्हारा ही रहेगा और जो तुम्हारा नहीं है वो तुम्हारा हो कर भी तुम्हारा नहीं रहेगा”। पैसों और रुतबों के मायाजाल में मत फंसा। किसी को हँसा नहीं सकते तो किसी को रुलाने का हक भी तुम्हें नहीं है। मैं तो उन लोगों को शिक्षित मानता ही नहीं जो होते तो हैं किसान और मजदूर के बेटे, मगर पद पर आसीन होते ही अपने समाज के लोगों का ही शोषण करने लगते हैं, पैसों और रुतबों के लिए। हमारे देश में एक कहावत प्रचलित है “पुत सपूत तो क्यों धन संचय, पुत कपूत तो क्यों धन संचय”। अचानक एक आवाज सुनाई पड़ी वो आवाज किसान के छोटे बेटे की थी। वह रो-रो कर अपने पिताजी के मृत शरीर के पास बैठा बोल रहा था कि मैं अपने समुदाय के लोगों का शोषण नहीं कर सकता था पिताजी। और जिन्होंने ऐसा किया है, उन्हें आपके मृत शरीर को छूने नहीं दूंगा। अपने पढ़ाई से गर्वित होने वाले तीनों बड़े भाई गर्दन झुकाये चुपचाप खड़े थे।



सोनू कुमार,
डी.ई.ओ.

यात्रा वृत्तांत

पहाड़ों की रानी दार्जिलिंग

पहाड़ों की रानी के नाम से मशहूर दार्जिलिंग में पर्यटन की दृष्टि से सबसे अच्छा मौसम अप्रैल से जून और मध्य सितंबर से नवम्बर तक होता है, लेकिन पर्यटकों की भारी भीड़ मई और जून में होती है। क्योंकि उसी समय भारत के लगभग सभी क्षेत्रों के स्कूलों में गर्मी की छुट्टी होती है। छुट्टियों का आनंद उठाने के लिए मैं भी अपने छः सहयात्रियों स्वाती, संजय, आराध्या, अनाया पुत्र आहान राज एवं धर्मपत्नी प्रतिभा कुमारी सहित जून के मध्य में दार्जिलिंग एवं गंगटोक की यात्रा पर था। जिसके पहले ही दिन हम लोगों ने दार्जिलिंग के कई ऐतिहासिक और चर्चित स्थान घूमने की योजना बनाई, जिसमें टाइगर हिल, बतासिया लूप, चाय के बागान, रोपवे, रॉक गार्डन और टॉय ट्रेन का सफर दर्शनीय था।

टाइगर हिल

अप्रैल से जून तक दार्जिलिंग आने वाले पर्यटकों में, शहर से लगभग चौदह किलोमीटर दूर तथा 8482 फीट की ऊंचाई पर स्थित दार्जिलिंग हिल्स का उच्चतम बिंदु टाइगर हिल से, सूर्योदय देखने का उतावलापन कुछ यूँ रहता है, जैसे यहां की भोर न देखी तो मानो दार्जिलिंग में कुछ देखा ही नहीं। और फिर उतावलापन हो भी क्यों न, न जाने कब मौसम का मिजाज बदल जाये और यहां आने के बाद भी भोर की वो खूबसूरती देखने से चूक जाया

जाए, जिसमें कंचनजंगा पर्वत की दो चोटियों के बीच सूरज की पहली किरणों के साथ इसके किनारे पर खड़ी चोटियों से झांकते, दुनिया की सबसे ऊंची चोटी, माउंट एवरेस्ट का विहंगम दृश्य दिखाई देता है।

टाइगर हिल घूम का शिखर स्थल है जो कि घूम से पांच किलोमीटर और आगे ऊपर की ओर है। यह स्थान माउंट एवरेस्ट और माउंट कंचनजंगा के अद्भुत सुंदर दृश्य देखने के लिए पूरे विश्व में प्रसिद्ध है। यहाँ सुबह की धूप का बारी-बारी से छायादार पहाड़ियों के लिए कोमल नारंगी प्रकाश की किरणें बिखेरता हुआ कुछ ही देर में चमकदार पीले रंग की छटा में बदल जाता है। भोर की किरणों के साथ रंग बदलती पर्वत चोटियों के तमाम दृश्य पर्यटकों को मन्त्रमुग्ध कर देने वाले होते हैं। यदि आपने दार्जिलिंग में किसी टूर गाईड को बुक किया है या टैक्सी/कार आदि बुक कर रखा है तो वहीं आपको भोर में तीन से साढ़े तीन बजे के बीच जगा देगा। साथ ही यह समय मौसम पर भी निर्भर करता है, लेकिन फिर भी किसी भी मौसम में वह आपको भोर में चार बजे के पहले ही तैयार होने के लिए कहता ही कहता है। चूंकि हम लोग गर्मियों के मौसम में गये थे, इसलिये हमारे कार ड्राइवर ने हमें सुबह तीन बजे के लिए ही बोल रखा था। पीक सीजन होने की वजह से गर्मियों के मौसम में टाइगर हिल की ओर जाने वाले रास्ते का ट्रैफिक लगभग दोगुना हो जाता है। सामान्य रूप से वहां तक पहुंचने में लगभग एक घण्टे

का समय लगता है। हमारी भी उत्सुकता कम न थी, इसलिए हम सब ड्राइवर के फोन आने के पहले ही तैयार हो चुके थे। जब हम निकले तो अंधेरा ही था। हमें लगा सबसे पहले हम ही पहुँच रहे हैं। शहर से लगभग नौ किलोमीटर आगे घूम स्टेशन के पास पहुँचने के बाद वहाँ से ऊँचाई की ओर उठती हमारी कार, पहाड़ी पर कुछ यूँ चढ़ रही थी मानो कई मंजिला इमारत पर हमारी गाड़ी एक दम से किसी रैम्प पर चढ़ कर जा रही हो।

लगभग दो किलोमीटर आगे बढ़ते ही हमें कारों की दौड़ती कतार दिखने लगी थी जो टाइगर हिल से लगभग तीन किलोमीटर पहले तक आते ही रुक-रुक कर रेंगने लगी थी। जब एक किलोमीटर रह गया, तब तक साढ़े चार बजे चुके थे, तमाम पर्यटक इस डर से गाड़ी पहले ही छोड़ कर पैदल ही ऊपर बढ़ते जा रहे थे कि कहीं उनके पहुँचने से पहले सूर्योदय न हो जाये। उन्हीं की देखा-देखी हमने भी कार छोड़ दी एवं जल्दी-जल्दी पहुँचे, सांस फूलने लगी थी। दस के आस-पास तापमान था, जिस कारण ठंड भी लग रही थी। जोश में तेज-तेज चलने से बीच-बीच में गर्मी का भी अहसास हो रहा था। खैर किसी तरह हाँफते हुए मीट पॉइंट पर पहुँचकर तमाम पर्यटकों के साथ हमने भी सूर्योदय देखा और सूरज की सुनहली किरणों से स्नान किया। रंग-बिरंगी किरणों की आभा को अपने आगोश में समेट लेने को आतुर पुत्र और हम दोनों हाथ खोलकर सूर्य की ओर मुख करके काफी देर खड़े रहे। सोने से चमकते अद्भुत अविस्मरणीय दृश्य के साक्षी थे हम।

किताबों में पढ़ी सुनी बातों में खुद की उपस्थिति का यकीन नहीं हो रहा था। जोश अब होश के करीब आने लगा था, इसलिए ठंड थोड़ा ज्यादा ही महसूस हो रही थी। देवदार के पेड़ों और पहाड़ी झाड़ियों के दूर तक जाती परछाई के बीच बहुत अच्छा लग रहा था। जितने दृश्य कैद कर सकते थे, हमने और मेरी पत्नी ने अपने-अपने तरीके से मोबाइल कैमरे में कैद किये। मन कर रहा था पूरा का पूरा पर्वत और प्रकृति की सारी खूबसूरती समेट लूँ अपने आप में। हम लोग मीट पॉइंट पर एक ऐसे टीले पर पहुँच चुके थे, जहाँ से पीछे देखने पर सभी पर्यटक और दूर तक बहुत नीचे कारों की लंबी कतार

दिखाई दे रही थी। अनायास ही हॉट गुनगुना उठे, आज मैं ऊपर आसमां है नीचे, आज मैं आगे जमाना है पीछे....

टाइगर हिल पर लगभग डेढ़ घण्टे रुकने के बाद धीरे-धीरे पर्यटकों के लौटने का सिलसिला शुरू हो चुका था। ठंडी-ठंडी हवायें थोड़ी-थोड़ी देर में हम लोगों को कंपकपी का एहसास करा दे रही थी, जल्दी-जल्दी चलते हुए नीचे ढलान की ओर बढ़कर अपनी कार तक आये और चल पड़े वापस। रास्ते भर अद्भुत आनंद की चर्चा करते कार कब बतासिया लूप के पास आकर खड़ी हो गयी, हमें पता ही नहीं चला।

बतासिया लूप

टॉय ट्रेन दार्जिलिंग की सबसे खूबसूरत रेल मार्गों में एक बेहद खास और रेलवे की बेजोड़ इंजीनियरिंग का एक अद्भुत नमूना है। यह रेल मार्ग जिसे 'बतासिया लूप' कहा जाता है, सन 1919 में इसे अंग्रेजों द्वारा शुरू किया गया था। देश के सबसे ऊँचे स्टेशन घूम से दार्जिलिंग की ओर तेज ढलान है। ऐसे में नीचे की ओर के ढलान पर टॉय ट्रेन को आसानी से सम्भाल कर नीचे लाने का कोई अन्य रास्ता नहीं था। कारण यहाँ एक दोहरा सर्पिलाकार लूप बनाया गया है, जिससे ट्रेन को पूरा 360 डिग्री घुमाते हुए बहुत कम दूरी की यात्रा में बहुत अधिक ऊँचाई से लाया या वहाँ से ले जाया जा सके। घूम से छः किलोमीटर दूर दार्जिलिंग स्टेशन की ओर ढलान से लगभग एक हजार फीट नीचे है। यहाँ टॉय ट्रेन का आसानी से उतर आना और चढ़ जाना सम्भव हो पाया है। बतासिया लूप सेइस लूप की प्राकृतिक सुंदरता भी अद्भुत दृश्य प्रस्तुत करती है। यहाँ से भी कंचनजंघा की बर्फीली पहाड़ियों का नजारा देखा जा सकता है।

युद्ध स्मारक

बतासिया लूप के केंद्र में बना एक युद्ध स्मारक भी है जो सर्पिलाकार रेलवे लाइन के बाद यहाँ एक और विशेष आकर्षण का केंद्र है। यह दार्जिलिंग के उन गोरखा सैनिकों के सम्मान में बनाया गया है, जिन्होंने आजादी के दौरान अनेक युद्धों में अपने प्राणों की आहुति दी थी। यहाँ एक गोरखा सैनिक की नौ फुट की प्रतिमा एक कब्रगाह

के बगल में बनाई गई है, जिस पर तारीखों के साथ शहीद हुए सैनिकों की सम्मान पट्टिका अंकित है। साथ ही एक बड़े पोल पर तिरंगा लहराता रहता है। सुबह के साढ़े सात बज रहे थे, टाइगर हिल की तुलना में यहाँ नीचे ठंड कुछ कम थी। पर्यटकों की चहलकदमी खूब थी जो कि लगातार बढ़ती जा रही थी। यहाँ कई खोमचे वाले और रेस्त्रां आदि थे। उनके आस-पास स्ट्रीट फूड का आनन्द लेने वालों की भीड़ भी कम न थी। लोग स्नैक्स आदि ले रहे थे। हम लोगों ने वहीं पास के एक खोमचे पर समोसे और पकौड़े का नाश्ता किया। चाय की चुस्की लेने के बाद हमलोग लूप के ऊपर जाने का टिकट लिए और सभी लोग जब लूप पर ऊपर पहुँचे तो देखा इतनी सुबह-सुबह भी पूरे बतासिया लूप में मेला लगा हुआ था। तमाम दुकानें तो रेल की पटरियों पर ही सजी हुई थीं। जो संभवतः ट्रेन के आने के समय हटा ली जाती हैं और ट्रेन के जाते ही फिर सजा दी जाती हैं। ऊनी कपड़े, हैंडीक्राफ्ट आदि का सामान बेचने वाले और खरीददारों की भी कमी न थी। बेहद खूबसूरत सर्किल नुमा पार्क था। हम सभी ने खूब फोटो सोटो ली। लगभग एक से डेढ़ घण्टे आनंद लेने के बाद हम लोग वापस आ गये। आगे का प्लान था रोपवे देखने का लेकिन हमारे टैक्सी ड्राइवर ने कहा रोपवे के पहले चाय के बागान घूम लीजिये। वहीं पास में टाइगर हिल की एच एम आई पहाड़ी है जहां आप पर्वतारोहण का लुत्फ उठा सकते हैं।

हैप्पी वैली टी स्टेट: चाय के बागान

दार्जिलिंग यात्रा का एक बड़ा रोमांच हरी-भरी पत्तियों से लदी झाड़ियों की चादर ओढ़े ऊंची ऊंची पहाड़ियों के एक सौ सतहत्तर एकड़ में फैले विशाल चाय के बागान की सैर भी है। दार्जिलिंग एक ऐसा शहर है, जिसके कोने कोने में फैले चाय बागानों की खुशबू हर किसी को अपना दीवाना बना देती है। शायद इसीलिए इसे हैप्पी वैली कहा जाता है। चाय की खेती यहाँ के क्षेत्रीय निवासियों के रंग रंग में बसी होती है, इसीलिए चाय के बागान यहाँ की दूसरी सबसे बड़ी संपत्ति हैं। कुछ पर्यटक होमस्टे करके भी चाय के बागानों के बीच बने गांवों में रुककर सुगंधित पर्यटन का आनंद लेते हैं। कार वाला हमें लेकर हैप्पी वैली टी स्टेट आया। हम लोगों ने भी दार्जिलिंग की क्षेत्रीय वेशभूषा धारण की,

खुखरी और डलिया वलिया बांध, घुस गए चाय के बागानों के बीच। पहाड़ी ढलान से उतरते चाय बागों का अंत ही नहीं दिख रहा था। फोटो सोटो, वीडियो आदि में पल पल कैद करते हम लोग खो से गये थे। तब तक और भी कई पर्यटक क्षेत्रीय वेशभूषा पहन कर आ गए। ग्रुप फोटो भी खूब लिए गए। बागान में 100: जैविक दार्जिलिंग चाय के स्टाल थे हम लोगों ने ताजी चाय का आनंद लिया। तमाम दोस्तों के उपहार स्वरूप हमने वहां के चाय पैकेट पैक करवाये। यहीं पास हिमालयन माउंटेयरिंग इंस्टिट्यूट पर्वतारोहण के रोमांच का आनंद लेने लिए एक पहाड़ी टिला जिस पर एच एम आई लिखा हुआ था, सभी लोग पचास पचास रुपये का टोकन लेकर रस्से द्वारा चढ़ रहे थे।

भारत का पहला और सबसे प्रसिद्ध रोपवे

शहर से तीन किलोमीटर की दूरी पर स्थित, 1968 में शुरू हुआ, दार्जिलिंग का रोपवे भारत का प्रथम रोपवे है। इसे चाय के बागानों के विस्तार के लिए शुरू किया गया था जो कि अब दार्जिलिंग आने वाले पर्यटकों के लिए मुख्य आकर्षणों में से एक है। यह दार्जिलिंग से आठ किलोमीटर की दूरी तय कर सिंगला बाजार तक जाता है। पश्चिम बंगाल वन विकास निगम लिमिटेड एवं रोपवे सर्विस प्राइवेट लिमिटेड का यह एक संयुक्त उद्यम है जिसमें केवल कार का किराया प्रति व्यक्ति ₹260/- रुपये तथा प्रति बच्चे का टिकट ₹130/- निर्धारित है। लंबी कतार में लगने के बाद हम लोगों ने भी रोपवे का आनंद लिया। रोपवे से घूमते हुए नीचे कि चाय की झाड़ियों से ढके पहाड़, नदी और झरने और बागानों के बीच बीच पगडंडी वाले रास्ते बहुत सुंदर लगते हैं। दोपहर होने को थी। रोपवे से उतरकर हम लोगों ने वहीं पास एक रेस्त्रां में भोजन किया और निकल पड़े रॉक गार्डन की ओर।

रॉक गार्डन

दार्जिलिंग से लगभग दस किलोमीटर दूर हजारों फीट नीचे प्रकृति की सुंदर वादियों के बीच एक बहुत खूबसूरत घाटी में स्थित मानव निर्मित पर्यटन स्थल है रॉक गार्डन, जिसे बारबोटी रॉक गार्डन के नाम से भी जाना जाता है। दार्जिलिंग से यहां तक पहुँचना भी किसी रोमांच से कम नहीं है।

दार्जिलिंग से रॉक गार्डन का मार्ग भी एक से एक रमणीय दृश्य प्रस्तुत करता है। रॉक गार्डन का लुत्फ उठाने तक पहुंचने से पहले चट्टानी पहाड़ियों, खड़ी सड़कों से युक्त डरावनी ढलानें और हरियाली से भरी सुंदर रोमांचकारी यात्रा करवाती है। यहाँ आते समय आपको हरी भरी घाटी के आकर्षक दृश्यों के साथ बादलों की लुका-छिपी आपको बहुत अच्छी लगेगी। रॉक गार्डन कई अलग स्तर से चट्टानों से काट काट कर मानव निर्मित सीढ़ीदार उद्यान है। यहाँ एक छोटा सा चुन्नु झरना भी है। जिसके चारों ओर फूलों के बगीचे, चाय के बागान, पहाड़ी झरने और प्राकृतिक सुंदरता से यहां की खूबसूरती और बढ़ जाती है। हमने प्रकृति की इस खूबसूरत वादी में काफी समय बिताया। शाम ढलने की थी, चूंकि रॉक गार्डन में शाम चार बजे तक ही घूमा जा सकता है इसलिए हम लोग वापस दार्जिलिंग लौट गए। हमारी अगली योजना में टॉय ट्रेन थी, जिसे दार्जिलिंग में दो दिन इधर उधर घूमते हुए हम कई दफा देख चुके थे।

टॉय ट्रेन

यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर के रूप में चयनित, मात्र दो फीट चौड़ी रेलवे लाइन पर चलने वाली दार्जिलिंग की यह पर्वतीय रेल देशी-विदेशी पर्यटकों के मुख्य आकर्षण का केंद्र रहती है। 1879 से शुरू हुई, धीमी गति से चलने वाली यह ट्रेन

बस्तियों, बजारों के बीच से गुजरती हुयी जंगल, पहाड़, झरने आदि की खूबसूरती का दर्शन कराती है। इस पर यात्रा के लिए हमने बुकिंग का प्रयास किया, लेकिन वेटिंग लंबी होने के कारण और चूंकि शाम भी ढलने को थी, विचार त्यागना पड़ा और फलतः हम ट्रेन में न बैठ सके। घूम स्टेशन पर खड़ी भाप के इंजन से चलने वाली ट्रेनें और ₹20-20 के टिकट लेकर दार्जिलिंग हिमालय रेलवे का संग्रहालय देखकर हम लोग लौट लिए वापस मॉल रोड की ओर..कार हमने वहीं दार्जिलिंग स्टेशन पर छोड़ दी। दूसरे दिन हमेंसिक्किम की ओर निकलना था। इसलिए वहां के लोकल बस स्टैंड से सिक्किम की बस पता करके थोड़ी देर माल रोड पर घूमे टहले। सिक्किम के लिए भी हम उत्साहित थे, लेकिन दार्जिलिंग की खूबसूरती और रोमांच भुला पाना सम्भव नहीं था। शायद इसलिए प्रकृति की गोद में खेलते इस शहर को पहाड़ियों की रानी कहा गया, जो अपने पास से दूर जाने नहीं देती...



स्मेश कुमार रजक,

सहायक लेखा अधिकारी



कार्यालय में आयोजित गणतंत्र दिवस समारोह
की कुछ झलकियाँ



पर्यावरण एवं मानव

अगर चाहते आप हैं, दुनिया भर की खैर।
पशु, पक्षी, 'औ' पेड़ से, उचित नहीं बैर ॥

मानव ने जब वृक्ष पर, किया कुठाराघात।
बारिश, जाड़ा, धूप का बिगड़ा तब अनुपात ॥

पत्ता पत्ता झर गया, पीपल हुआ उदास।
लायी नई कोपलें, जीने की फिर आस ॥

काट रहे जो वृक्ष को, शहरों के शौकीन।
हो जाएंगे एक दिन, बिलकुल वंश विहीन ॥

नागफनी के फूल पर, लिखकर रेगिस्तान।
काँटो की उपयोगिता, नयन गये पहचान ॥



निशीथ कुमार,
सहायक लेखा अधिकारी

प्रकृति

प्रकृति है सबसे प्यारी,
है तो वो माँ जैसी हमारी।
जब भी हम कुछ चाहें तो वह हमें देती,
हम जितना भी उससे लें, वह मन में बुरा न लेती।
प्रकृति तो भगवान का उपहार है,
जैसे हमारे गले में हीरे का हार है।
प्रकृति तो हमारी जान है,
इसी पर हम दिखाते इतनी शान हैं।
प्रकृति को हम करते परेशान हैं,
तब भी वह रखती हमारी मान है।
जब भी प्रकृति का संतुलन बिगड़ा,
तो हमारा तन एवं मन बिगड़ा।
प्रकृति न तो इंसान है, न जानवर,
प्रकृति तो जीवन है, और है संसार।
जैसे होती है अग्नि की अंगारें,
वैसे ही हैं हम प्रकृति के प्यारे।
जैसे चली आ रही है आकृति की गाथा,
वैसे ही चली आ रही है प्रकृति की कथा।



रिश्म सिन्हा,

पुत्र- कुमारी संगीता सिन्हा
सहायक पर्यवेक्षक

हिंदी दिवस समारोह एवं पंचम अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन गाँधी नगर, गुजरात की कुछ झलकियाँ



मिथिला का मखाना

